ओ३म
वैदिक विज्ञान

ईश्वर की सृष्टि के अद्भुत व्याख्याता पूज्यपाद गुरूदेव शृंगी मुनि कष्णदत जी महाराज द्वारा विषेश योग समाधि मे,देवयान की आत्माओ को सम्बोधित प्रवचनो का संकलन

प्रकाशक :
वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)
अन्तरजाल सम्पादक : श्री सुकेश त्यागी – अवैतनिक
अन्तरजाल विशेष सहयोग : डा0सतीश शर्मा (अमेरिका) – अवैतनिक
अन्तरजाल पुस्तक संस्करण : प्रथम प्रेषण
सृष्टि सम्वत् : 1,96,08,53,111
विक्रम सम्वत् : कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी,2067

गुरुदेव का जीवन

14 सितम्बर 1942,उतर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के ,ग्रम खुर्रमपुर सलेमाबाद मे एक बालक का जन्म हुआ ।

बालक जन्म से ही एक विलक्षण से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी वह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा मे, कुछ अन्तराल लेटजाता या लिटा दिया जाता तो उसकी गर्दन दायें बायें हिलने लगती , कुछ मन्त्रोच्चारण और उसके बाद पुरातन संस्कृति पर आधारित 45 मिनट के लगभग एक दिव्य प्रवचन होता । बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ मे आवाज अस्पष्ट होती और जैसे आयु बढने लगी वेसे ही आवाज और विषय दानो स्पष्ट होने लगे । पर एक अपठित बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विशय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था । प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की एंसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विषय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था ।

इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनो से ही हुआ । कि यह सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालो मे शृंगी ऋषि की उपाधि से विभूशित और सतयुग के काल मे आदि ब्रह्म के शाप के कारण इस युग मे जन्म का कारण बनी । गुरुदेव इस जन्म मे भले ही अपठित रहे,लेकिन शवासन की मुद्रा मे आते ही इनका पूर्वजन्मित ज्ञान,उदबुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष–स्थ आत्माओ का दिव्य उद्बोधन ,प्रवचन करते और शरीर की स्थिति यहॉ होने के कारण हम सबको भी इनकी दिव्य वाणी सुनाई देती । इन पंवचनो मे ईश्वरीय की सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है , ब्रह्माण्ड की विशालता , सृष्टि का उद्देष्य,विभिन्न कालो का आंखो देखा वर्णन भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का दर्शन क्या कुछ दिव्य न हीं है इन प्रवचनो मे ये किसी भी मनुष्य का,समाज का और राष्ट्र का मार्ग दर्शन करने का सामर्थ्य रखते है ।

20 वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्य और मार्गदर्शन करते रहे ।

दिल्ली के कुछ प्रबुद्ध महानुभवो ने प्रवचनो की इस निधि को शब्द ध्वनि लेखन उपकरण के द्वारा संग्रहित करके ,पुस्तक रूप मे प्रकाशित करने का निश्चय किया, जिसके लिए वैदिक अनुसन्धान समिति नामक संस्था का गठन किया । जिसके अर्न्तगत सन् 1962 से प्रवचनो को संग्रहति और प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इस दिव्यात्मा ने पूर्व निर्धारित 50 वर्ष के जीवन को भोगकर सन् 1992 मे महाप्रयाण किया ।

इस अन्तराल इनके 1500 प्रवचन, शब्द ध्वनि लेखित यन्त्र के द्वारा ग्रहण किये गये । जिनको धीरे–धीरे प्रकाशित किया जा रहा है।वैदिक जीवन और वैदिक संस्कृति का जो स्वरूप इनमे समाया हुआ है । उसके सम्वर्धन , संरक्षण और प्रसारण के लिए हर वैदिक धर्मी के सहयोग की अपेक्षा है । जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति से निहित यह महान ज्ञान जनमानस मे प्रसारित हो सके।

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

१ वसुन्धरा का स्वरुप 28—03—1988

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन—पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, वे सर्वज्ञ है और कोई स्थली ऐसी नहीं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। मानो जितना भी अभ्युदय हो रहा है इसमें सर्वत्र उस परमपिता परमात्मा की अनुपम और महती हमें प्रायः दृष्टिपात आती रहती है। कोई भी स्थली हो संसार में, उस सर्वत्रता के मूल में, प्रायः वो मेरा देवत्व और मानो उसकी रचनामयी, जो एक प्रतिभा हमें दृष्टिपात आ रही है, वह अनन्तमयी मानी गई है।

अनुसंधान

आओ, मेरे प्यारे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना तो देने नहीं आया हूँ, केवल एक परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह है कि हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञानमयी इस ब्रह्माण्ड के ऊपर हमारा प्रायः अनुसंधान होना चाहिए क्योंकि वे, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों रुपों की प्रतिभा में सदैव रत रहते हैं।

माता की गाथा

तो आओ, मुनिवरो! आज हम उस माता वसुन्धरा की याचना कर रहे थे। आज के हमारे वेद मंत्र में नाना प्रकार की माताओं का वर्णन आ रहा था। क्योंकि प्रत्येक वेद मंत्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। तो प्रत्येक वेद मंत्र के ऊपर आज हमारा विचार विनिमय प्रारम्भ हो रहा था कि वे जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए है। मानो वह उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गाता रहता है और माता का वर्णन करने वाला, केवल उसकी गाथा गाने वाला एक पुत्रवत् कहलाता है। जब तक वे पुत्रवती नहीं होती तब तक मानो उसकी गाथा गाना, उसका वर्णन करना असम्भव सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार हमारे यहाँ ये जो पृथ्वी है ये ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। प्रत्येक मानव अथवा कोई भी वैज्ञानिक हो, वे विज्ञानवेत्ता मुनिवरो! देखो, जब इस पृथ्वी के ऊपर अनुसंधान करना प्रारम्भ करते है तो उसी काल में 'ब्रह्मणं ब्रह्माः वाचाः' ये ब्रह्माण्ड के विज्ञान को मापने लगता है। मानो उसी के गर्भ में सर्वत्र है। तो इसीलिए जब माता के गर्भस्थल से मानव पृथक् होता है, तो वे माता वसुन्धरा कहलाती है और वसुन्धरा का अभिप्राय है कि जहाँ हम वशीभूत रहते है, हम उसमें बस जाते है। तो इसीलिए माता का नाम वसुन्धरा कहा गया है।

पालक देवता

मेरे प्यारे! देखो, जब माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है, बिन्दु में शिशु है और शिशु का जैसे ही माता के गर्भ में प्रवेश होता है तो मेरे प्यारे! सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते है। मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा अमृत देना प्रारम्भ कर देता है और सूर्य प्रकाश देना प्रारम्भ करता है, अमृत देने वाला चन्द्रमा है और प्रकाश देने वाला सूर्य है। मानो देखो, पृथ्वी गुरुतव देना प्रारम्भ कर देती है और आपोमयी ज्योति देने वाला आपो कहलाता है। अग्नि उष्ण बनाने लगती है और वायु प्राण देने लगता है और अन्तरिक्ष बेटा! अवकाश देता है। मेरे प्यारे! माता नहीं जानती, कौन अमृत दे रहा है? कौन गुरुतव दे रहा है? कौन आपोमयी ज्योति दे रहा है? परन्तु देखो, माता उससे वंचित रहती है। उस प्रभु का विज्ञान कितना अनूठा है। बेटा! जब हम उस अनूठे विज्ञान के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करते है, तो प्रायः सर्वत्र विज्ञानवेत्ता बेटा! अपने में मौन हो जाते है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ये चन्द्रमा अमृत देता है। समुद्रों से इसका मिलान होता है और समुद्रों से मिलान हो करके ये उससे मानो देखो, आपोमयी ज्योति को अपने में धारण करने लगता है। जलाशय को अपने गर्भ में धारण करके मानो उसमें वह जब वृष्टि करता है तो उसको अमृत बना देता है। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि को अपने गर्भ में धारण करता हुआ मानो देखो, वह चन्द्रमा अमृतमयी, मानो चाहे वह कृषि विज्ञान हो, चाहे वह गर्भाशय हो, चाहे वह पृथ्वी का गर्भाशय हो, चाहे माता का हो, चाहे पशु, किसी भी आभा में रत रहने वाला हो परन्तु देखो, उसमें गुरुतव उसकी आभा में रत हो जाता है।

निर्माण तन्त्र

तो आओ, मेरे प्यारे! हे माता! तेरे गर्भस्थल में कौन रचना कर रहा है? मेरे प्यारे! कहीं हृदय का निर्माण हो रहा है कहीं मानो देखो, गुरुतव अपने में हृदय का निर्माण करता हुआ, अपने में अमृत दे रहा है। बेटा! माता की रसना के निचले भाग में एक नाड़ी होती है उस नाड़ी का नाम बेटा! चन्द्रकेतु होता है। उस नाड़ी का समन्वय माता की पुराתत नाड़ी से होता है और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय मेरे पुत्रो! देखो, माता की लोरियों से होता है। वहाँ से पंचम नाड़ी गमन करती है और भ्रमण करते हुए बेटा! वह "अभ्यं ब्रह्माः अभप्रह्म लोकां वाचÂमः"। मेरे प्यारे! देखो, माता की नाभि का और बाल्य की नाभि दोनों का समन्वय होता है। परन्तु वह अमृत दे रहा है, अमृतमयी बना रहा है। मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नहीं होता कि कौन निर्माण कर रहा है। वह माता वसुन्धरा कहलाती है।

वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि इसके गर्भ में हम वशीभूत रहते है। मेरे प्यारे! देखो, वही गर्भत्रमहाणम् जब माता के गर्भ स्थल से, जब ये शिशु अपने सर्वत्र ब्रह्माण्ड की आभा को लेकर के बेटा! इस पृथ्वी के गर्भ में आता है तो माता उसे अपने में बसाती है। परन्तु उसके पश्चात् उसे पृथ्वी में बसा लेती है। जब पृथ्वी अपने गर्भ में धारण कर लेती है। तो मेरे प्यारे! देखो, "प्रथम ब्रह्माः लोकां वाचन् अभ्यं ब्रह्मः लोकां वाचांमः"। मेरे प्यारे! देखो, वही ब्रह्मा जब पृथ्वी के गर्भ में आता है तो इसे अपने में धारण कर लेती है और जब ये मानो इसके गर्भ में प्रवेश हो जाता है तो इसे अपने में बसा लेती है। मेरे प्यारे! यह नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ प्रदान करती रहती है।

मेरे पुत्रो! मानव कैसे बस रहा है, कैसे पनप रहा है? उस पृथ्वी माता को हम वसुन्धरा कहते है जैसे जननी माता वसुन्धरा है। इसी प्रकार ये पृथ्वी कहलाती है बेटा! पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्यान्न और खनिज है। जिस भी काल में बेटा! वैज्ञानिकजन अनुसंधान करते है तो खनिज को जानते है और खनिज को जानकर के कुछ खाद्यान्न को जानना प्रारम्भ कर देते है। परन्तु जब वे खनिज पदार्थों को जानते है तो वैज्ञानिकजन कहीं मानो स्वर्ण की धातु का निर्माण हो रहा है, कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, मेरे प्यारे! एक खाद्यान्न ही नहीं है इस माता के गर्भ में, तो क्या—क्या नहीं है। बेटा! इस माता के गर्भ से ही राष्ट्रवेत्ता अपने राष्ट्र का निर्माण करने लगता है और वैज्ञानिकजन अपनी अनुसंधानषाला में, अपने में अनुसंधान करने लगते है।

विज्ञान की महानता

मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर के अनुसंधान करते रहे है और विचारते रहे है। एक—एक खनिज को जानकर के अपने में मानो अपनेपन का दर्शन करते रहे हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह कि हमारे यहाँ ये माना गया है कि यह जो माता वसुन्धरा है यह पृथ्वी कहलाती है। इस पृथ्वी के गर्भ में मानव अपने जीवन को पनपा रहा है, अपने जीवन को महान् बना रहा है। नाना प्रकार के खाद्यान्न खनिजों के द्वारा अपने शरीरों का पालन पोषण कर रहा है। वैज्ञानिकजन उसी के गर्भ में जाकर के, बेटा! देखो, नाना प्रकार के यंत्रों का निर्माण करते है और यंत्रवेत्ता बनकर के नाना प्रकार के वाहन कुछ मानो समुद्रों की आभा में यान गमन करते हैं। कुछ अंतरिक्ष में करते है कुछ मानो देखो, पृथ्वी तल पर भ्रमण करते है। वे खनिज के द्वारा और जल को जहाँ शक्तिशाली बनाया जा रहा है बेटा! देखो, उसको

वैज्ञानिकजन जानते है और आभा में लाते है और उसी के द्वारा बेटा! देखो, विज्ञान अपने में महानता को जन्म देता रहता है। महानता का नृत्य करता रहता है।

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ विचार केवल यह कि ये माता वसुन्धरा है इसी के ऊपर अनुसंधान करने वाला मानो बेटा! नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की यात्रा करता है। मानो ये पृथ्वी नाना रुपों में एक माला बन करके मानो यही माला का स्वरुप बन करके लोक लोकान्तरों में जाना वैज्ञानिक प्रारम्भ करता है। यदि ये पृथ्वी के गर्भ में विज्ञान न हो, पृथ्वी के गर्भ में खाद्य और खनिज न हो तो मानव इसके ऊपर अनुसंधान नहीं कर सकता है। न ही नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ाने उड़ सकता था परन्तु यह अपने में बड़ा अभ्योदय रहा है।

त्रि–वसुन्धरा

तो आओ, मेरे प्यारे! यह माता वसुन्धरा है तो आज मैं तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। केवल ये परिचय देने के लिए आया हूँ कि बेटा! माता कितनी है? माता वसुन्धरा है और वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! देखो, यह संसार पनप रहा है और बस रहा है। इसीलिए इसे वसुन्धरा के रुप में वर्णन किया गया है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें यह विवेचना देने के लिए आया हूँ कि हे माता! तू अपने में संसार को बसा रही है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों का निर्माण करने वाला बेटा! अपने में निर्माण करता रहता है। तो आओ, मेरे प्यारे! जब माता वसुन्धरा के, पृथ्वी के गर्भ से भी मानव पृथक होता है तो बेटा! माता के गर्भ से पृथक् हुआ तो माता पृथ्वी के गर्भ में, वसुन्धरा में बस गया और जब मुनिवरो! इससे भी उपराम होता है, साधक बनता है या योगेश्वर बनता है तो बेटा! देखो, वो प्रभु के आंगन में, वह प्रभु की गोद में रत हो जाता है। वह जो प्रभु मेरा आनन्दवत् है, जो चेतना में रत रहने वाला है, उसके गर्भ में बेटा! उसके ब्रह्माण्डमयी जगत् में चला जाता है। उसके ब्रह्माण्ड के ऊपर विचार करना, चिन्तन करना, मनन करना, बेटा! उसी में अपनी प्रवृत्ति में रत हो जाता है, जब वह प्रकृति में रत हो जाता है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि का काल

तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आ गया है। जिस काल में बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ बेटा! ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया था कि महाराज! ये प्रभु वसुन्धरा कैसे कहलाता है? क्योंकि आज हम न्यौदा में से मंत्रों का अधययन कर रहे थे और उन मंत्रों में यह आ रहा था ''वसुन्धरं ब्रह्मणं ब्रहे व्रतं देवाः'' क्यों वह परमपिता परमात्मा वसुन्धरा है? तो प्रभु! हम माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में यह जानने के लिए आए है कि माता तो वसुन्धरा इसीलिए कि उसके गर्भ में हम बस जाते है, निर्माण होता है, नस नाड़ियों का निर्माण होता है। परन्तु पृथ्वी इसलिए वसुन्धरा है कि उसके गर्भ में खाद्य और खनिज है। उससे हमारा शरीर संचालित होता है। तो वह प्रभु, कैसे वसुन्धरा कहलाता है? हम ये जानना चाहते है।

प्रभु के गर्भ में सर्वत्र ब्रह्माण्ड

तो बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह कहा कि मेरे विचार में तो यह आ रहा है कि प्रभु के गर्भ में ही सर्वत्र ब्रह्माण्ड है और उसके गर्भ में ब्रह्माण्ड होने से मानो देखो, मानव भी उसी के गर्भ में नृत्य करता रहता है। इसीलिए माता को वसुन्धरा और पृथ्वी को वसुन्धरा और प्रभु को वसुन्धरा के रुप में वर्णित किया गया है। वेद का मंत्र भी यही कहता है कि वे प्रभु वसुन्धरा है तो बेटा! उन्होंने कहा कि प्रभु! इसके सम्बन्ध में हम एक रुप जानना चाहते है। उन्होंने कहा आओ, विचार विनिमय करें।

तो बेटा! ब्रह्मचारी और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विचार विनिमय करने लगे। जब विचार विनिमय हुआ तो अपने में निमटारा नहीं का सके। मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले–अरे, निमटारा नहीं हुआ तो चलो, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के समीप गमन करते है, जो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है। आध्यात्मिक विज्ञान के ऊपर अनुसंधान करते रहते है।

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि–चलिए, भगवन्! तो ब्रह्मचारी और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! भ्रमण करते हुए गाड़ीवान रेवक मुनि के द्वार पर पहुँचे। रेवक मुनि ने कहा–प्रभु! इस वाक् को तो मैं भी अच्छी प्रकार निर्णय नहीं कर सकूँगा। चलो, विज्ञानवेता इस समय देखो, यह ऋषि भारद्वाज है। भारद्वाज ऋषि के समीप गमन करते है।

जिज्ञासु ऋषियों का महर्षि भारद्वाज के यहाँ आगमन

बेटा! वे सभी भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे। तो महर्षि भारद्वाज अपने में कुछ चिन्तन कर रहे थे, मनन कर रहे थे। तो बेटा! उनके समीप पहुँचे। महर्षि भारद्वाज मुनि ने उन ब्रह्मवेत्ताओं का स्वागत किया, नाना प्रकार का आतिथ्य करने के पश्चात् उन्होंने कहा–कहो, भगवन्! कैसे आगमन हुआ है? मैं इस आगमन के बारे में जानना चाहता हूँ? उन्होंने कहा–हमारा आगमन इसलिए हुआ है क्योंकि हम यह जानना चाहते है, ये विचार हो रहा है कि माता को तो वसुन्धरा इसलिए कहा जाता है क्योंकि हम उसके गर्भ स्थल में, मानव पनपता है। मानव का निर्माण होता है। परन्तु देखो, ये जो प्रभु है, ये वसुन्धरा कैसे बनते है? इस वसुन्धरा के सम्बन्ध में जानना चाहते है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा आओ, विराजो। वे विराजमान हो गए। हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें क्या शंका है? तुम्हारा क्या प्रश्न है? तुम्हारे हृदय में इस प्रकार की आशंका का जन्म कैसे हुआ? ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! हमें शंका नहीं होती, शंका तो उन्हें होती है जो कुछ जानते हैं और कुछ नहीं जानते। परन्तु हम तो उस सम्बन्ध में जानते ही नहीं, हम तो जिज्ञासु है। जिज्ञासा से ही इस बात को जानना चाहते है। तो मेरे प्यारे! जब भारद्वाज मुनि ने यह श्रवण किया तो ब्रह्मचारियों से कहा ''ब्रह्मणं वाचांमं ब्रह्मे लोकाः'' मानो देखो, ये तुम ब्रह्मे व्रताः प्रश्न करो, कि तुम जानना क्या चाहते हो? उन्होंने कहा कि यह माता वसुन्धरा क्योंकि वेद का मंत्र आता है, ''ममत्वां ब्रह्मणं ममत्वां देवः ममत्वां रथं ब्रह्माः'' कि वे जो प्रभु है ये ममत्वा को धारण कराने वाला है। हे प्रभु! हम इस सम्बन्ध में यह जानना चाहते है कि प्रभु को वसुन्धरा क्यों कहते है? उसके गर्भ में हम कैसे बसते है?

वसुन्धरा स्वरुप प्रभु

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ एक पंक्ति लग गई, आश्रम के ब्रह्मचारी भी आ पहुँचे। परन्तु विचारने लगे और महर्षि भारद्वाज ने कहा मेरे विचार में ये आता है कि वसुन्धरा नाम प्रभु का इसलिए है क्योंकि प्रभु के गर्भ में हम सब वशीभूत है। उसी के गर्भ में हम सब निहित रहते है। मानो देखो, उस परमपिता परमात्मा का नाम वसुन्धरा है। वेद का एक मंत्र नहीं कहता, सूक्त के सूक्त इस प्रकार के मानो कटिबद्ध उस परमात्मा का वर्णन करते रहते है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने उसका वर्णन करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने कहा–हे ब्रह्मणं ब्रहे मानो देखो, उसके गर्भ में बसते है, ब्रह्मचारी बोले कि हे प्रभु! हम जानने के लिए ही तो आए है इसमें कैसे बस रहे है? उन सब ने ये प्रश्न किया कि ये जगत् किसमें ओत–प्रोत है?

चार प्रकार की सृष्टियाँ

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज ने वर्णन किया जैसे राजा जनक की सभा में, गार्गी के प्रश्नों का उत्तर देने वाले याज्ञवल्क्य थे ऐसे इन ब्रह्मचारियों का उत्तर देने वाले महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज उत्तर देने लगे कि ये जो जगत् तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है। ये सर्वत्र जो जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है। चाहे ये पृथ्वी मण्डल हो, चाहे बुद्ध हो, चाहे मंगल हो, चाहे सूर्य या कोई भी मण्डल हो परन्तु उसमें चार प्रकार की सृष्टि है।

उनमें सबसे प्रथम सृष्टि स्थावर कहलाती है। स्थावर में मानो ये जितना भी वनस्पति विज्ञान है ये सब उसमें कटिबद्ध है। दूसरे जो मानो सृष्टि का व्यवधान है, वह अण्डज सृष्टि कहलाती है। जो अण्डे से जन्म लेने वाला समाज है, अण्डे से जन्म लेने वाले प्राणी है, वे सब अण्डज कहलाते है। परन्तु उनमें बड़े अवान्तर भेद है। उसमें अहिंसा वाले प्राणी भी अण्डे, अण्डज सृष्टि से उत्पन्न होते है और विषधर भी उसी के गर्भ से जन्म लेते है। मानो देखो, बड़ा विचित्र प्रभु का जगत् है। हे ब्रह्मचारियों! मानो देखो, तीसरी सृष्टि का नाम जंगम् है। चाहे उसको जरायुज भी कह सकते है। मानो देखो वह जंगम् कहलाता है। जरायुज भी कहीं–कहीं वैदिक साहित्य में आता है। जो गर्भ से जन्म लेने वाला मानो उसमें भी बड़े अवान्तर भेद माने गये है। मानो देखो, गौ

नाम का पशु है, मानव भी उसी में है और भी अवांतर योनियाँ है जो जंगम सृष्टि से जन्म लेती हैं। उनमें चतुर्थ उद्भिज कहलाती है। उद्भिज उसे कहते है जो जल देखो, शीतल और अग्नि दोनों के सम्पर्क से जन्म लेने वाले प्राणी है, उसका नाम उद्भिज कहलाता है।

तो मेरे पुत्रो! ये चारों प्रकार की सृष्टि का निर्माण मेरे प्यारे! प्रभु ने किया है। मेरे प्यारे! प्रभु के गर्भ में ये वशीभूत रहते हैं। मानो देखो, जैसे स्थावर सृष्टि में जितना वनस्पति विज्ञान है, वृक्ष योनियाँ है वे सर्वत्र मानो देखो, एक स्थावर कहलाती है। उसका निर्माण करने वाला वह प्रभु निर्माणवेत्ता है। हे प्रभु! तू कैसा निर्माणवेता है? जब मैं आयुर्वेदाचार्यों के समीप जाता हूँ तो नाना प्रकार का वनस्पति विज्ञान बेटा! ऐसा अनूठा है, ऐसा विचित्र है यह आयुर्वेद कि मानव का आयु उसके ऊपर निर्धारित रहता है। आयु को जानने वाला, आयु की प्रतिभा में रत रहने वाला वैद्यराज कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वनस्पति विज्ञान में सर्वत्र विज्ञान है। मानो उसमें प्रभु की प्रतिभा निहित रहती है। इसी प्रकार अण्डज सृष्टि है परन्तु उसमें कितनी योनियाँ है उसकी गणना करने में मानव असमर्थ हो जाता है।

पृथ्वी की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में विशेष नहीं, परन्तु ब्रह्मचारियों ने जब ये कहा–हे प्रभु! इसको तो हमारे पूज्यपाद गुरुदेव विद्यालय में वर्णन करते रहे है। हम ये जानना चाहते है, भगवन्! कि ये जो स्थावर सृष्टि है मानो ये किसमें ओत–प्रोत हो जाती है? ये किसमें निहित हो जाती है? उन्होंने कहा मानो ये जो पृथ्वी दृष्टिपात आ रही है। ये पृथ्वी के गर्भ में मानो देखो लुप्त हो जाती है। ये पृथ्वी अपने में धारण कर रही है। उसी में मानो देखो, ये ओत–प्रोत है। जब ''मानं ब्रह्मे वाचम्!'' ये पृथ्वी जब ''रसातलम् ब्रह्मे'' जब पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की सृष्टियों का अवधान होता है तो मानव प्रसन्न होता है। तो वह मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने कहा कि ये पृथ्वी में ओत प्रोत रहती है, पृथ्वी ही इसके मूल में है, पृथ्वी ही इसके गर्भ में निहित रहती है।

तो ऋषि और ब्रह्मचारियों ने भारद्वाज मुनि से ये प्रश्न किया कि हे महाराज! हम जानना चाहते है कि जब ये पृथ्वी नहीं होती तो मानो सर्वत्र जगत् कहाँ निहित होता है? उन्होंने कहा जब ये पृथ्वी नहीं होती तो देखो, ये पृथ्वी कहाँ प्रतिष्ठित होती है ये पृथ्वी आपो, जल में ओत प्रोत हो जाती। मानो देखो, जल में यह निहित हो जाती है। यह सर्वत्र जल मग्न हो जाती है। मुनिवरो! देखो, जल, आपो ब्रह्मणं अभ्यं ब्रह्मे लोकाम् ये आपो ही तो प्राण के देने वाला है। बेटा! आपो ज्योति है। जब पृथ्वी पर बेटा! देखो कृषक अपने अन्न को उपजाता है तो यह आपो जब उसे प्राप्त हो जाता है तो अन्न को प्राण मिल जाता है। 'अन्नादं भूतम्' इससे मानो जनसमूह इसी में निहित हो जाता है। मानो ये पृथ्वी ही देखो, आपोमयी ज्योति में जलमग्न हो जाती है। आपो में लय हो जाती है। आपो ही इसकी प्रतिष्ठा मानी गई है। ये उसी में प्रतिष्ठित हो जाती है।

आपो की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह उत्तर दिया तो ब्रह्मचारी नतमस्तिक होकर कहते है। हे प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं। वेद का मन्त्र यह प्रश्न कर रहा है कि ये जो पृथ्वी है ये आपो में है। तो आपो कहाँ प्रतिष्ठित होता है? आपो की प्रतिष्ठा क्या है? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि आपो की जो प्रतिष्ठा है, वे अग्नि कहलाती है। ये अग्नि में ओत प्रोत हो जाता है। अग्नि इसे अपने में धारण कर लेती है। 'अभ्यो ब्रह्मणम्' उदय हो जाता है। तो मानो देखो, आपम् ब्रह्माः व्रतं देवाः ये आपो, जब अग्नि, अपने तेज में प्रविष्ट कर लेती है, तो मेरे प्यारे! देखो, अग्नि ही नाना प्रकार के रुपों को धारण करने वाली है। यही अग्नि बेटा! देखो, काष्ठ में है। यही अग्नि मुनिवरो! देखो, आपोमय है। यही अग्नि नाना प्रकार की वनस्पतियों में थी। यही अग्नि है जो मानव को संचालित करने वाली है। यह अग्नि ही मेरे पुत्रो! अग्नं ब्रह्माः लोकाम् यह अग्नि ही वैज्ञानिकों के युगों में बेटा! अणु और परमाणु रुपों में रत होकर नाना प्रकार के यंत्रों का निर्माण करती रहती है।

अग्नि की प्रतिष्ठा

तो विचार आता है कि बेटा! जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उस समय महर्षि के आश्रम में जो ब्रह्मचारी थे, वे प्रश्न करते हैं। हे प्रभु! हम ये जानना चाहते है कि ये अग्नि कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है? उन्होंने कहा ये जो अग्नि है ये मानो देखो, वायु में ओत प्रोत रहती है। जब वायु अपने में ब्रह्मणं ब्रह्मे। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि अपने में प्रतिष्ठितः ये वायु जहाँ रहती है, वहाँ अग्नि रहती है। जहाँ अग्नि में वायु नहीं होती, वहाँ अग्नि नहीं रहती। मेरे प्यारे! देखो, वायु ही तो प्राण सत्ता देने वाली है, गति देने वाली है। यही तो गतिवान बनाती है।

मेरे प्यारे! देखो, यजमान अपनी यज्ञशाला में याग कर रहा है। परन्तु जब वह याग कर रहा है, स्वाहा उच्चारण कर रहा है, वही स्वाहा का शब्द बेटा! देखो, अग्नि की धारा पर विद्यमान होकर के और मुनिवरो! वही द्यौ लोक में प्रवेश कर रहा है। वे यज्ञशाला का रथ बनकर के ही तो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होता है। अग्नि ही द्यौ लोक में प्रवेश करा देती है। मेरे पुत्रो! देखो, अग्नां ब्रह्मलोकां वाचन्नमः वेद का वाक् कहता है कि ये वायु अग्नि को अपने में धारण किए रहती है। अग्नि ही इसे गति देती है। यदि यज्ञशाला में अग्नि में गति नहीं होगी, तो बेटा! उसका रथ नहीं बनेगा। अग्नि प्रदीप्त नहीं होगी। अग्निकाष्ट में नहीं रह सकेगी। अग्नि जब वायु के सम्पर्क में आती है तो प्रदीप्त हो जाती है। ये काष्ट में से उसके स्वरुप को बना देती है।

ब्रह्माण्ड का धारक प्राण

मेरे प्यारे! प्रभु का कैसा ऊर्ध्वा मानो ये विज्ञान है बेटा! कैसा महान् है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा कि ये वायु ही प्राण के देने वाली है। ये वायु जब मानो देखो, परमात्मा के अवधान में रहती है तो वायु कहलाती है। मानो ये ही वायु जब आत्मा के सम्पर्क में जाती है तो ये पाँचो प्रकार के ये दस प्राणों के रुप में विभक्त हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, प्राण के रुप में, अपान के रुप में, व्यान के रुप में, समान और उदान के रुपों में परिणित हो जाती है। मेरे प्यारे प्रभु! तेरी कैसी अनुपम रचना है। तू वायु का विभाजन करता है और वायु प्राण के रुप में और प्राण ही मुनिवरो! देखो इस ब्रह्माण्ड को अपने में धारण किए रहते है। मानव का जीवन प्राण के ऊपर संचालित होता है और वायु और कृषि मेरे पुत्रो! देखो, वायु नहीं होगी तो कृषि नहीं उपज सकती ये प्राण सत्ता को प्रदान करने वाली है और गति देने वाली, यही तो गतिवान् है। बेटा! वैज्ञानिकजन, यौगिकजन, साधकजन जब इसके ऊपर अनुसंधान करते है, विचार करते है। तो बेटा! वे अनुपमता को धारण करने लगते है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में कितना ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ रहा है। परन्तु देखो, ब्रह्मचारियों को शांति नहीं हुई। उन्होंने कहा–प्रभु! इसके प्रमाण? उन्होंने कहा–वैज्ञानिकजन अणु और परमाणुओं को जानने लगते है इस प्राणसत्ता में उसे प्राप्त करते है। ये अग्नि ही अणु और परमाणु के रुप में जब परिणित होती है तब इसमें अन्तिम सूत्र प्राण कहलाता है। मानो देखो, यजमान अपनी यज्ञशाला में याग करता हुआ अपनी पत्नी से कहता है, हे देवी! तू प्राणों को एकाग्र करके देखो, मन को उसके ऊपर विश्राम करा करके तू याग कर। मानो देखो, याग हमारा कर्तव्य है। ये परमात्मा का जो जगत् है एक प्रकार की यज्ञशाला है परमात्मा भी तो प्राणों के द्वारा ही याग करा रहा है। प्राण ही हमें गति करने वाला है। प्राण ही हृदयधैंम बनने वाला है। मेरे पुत्रो! देखो, ये प्राण ही हमारे शब्द है। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश कर जाते है।

वायु की प्रतिष्ठा

मेंरे प्यारे! देखो, ऋषि ने अपना ये जब वक्तव्य दिया तो ब्रह्मचारियों ने पुनः यह प्रश्न किया कि हे प्रभु! हम ये जानना चाहते है? मानो ये जो वायु है इसकी भी कोई प्रतिष्ठा होगी। यह भी तो कहीं लय हो जाती है। उन्होंने कहा–कि ये जो वायु है ये अंतरिक्ष में लय हो जाती है। अंतरिक्ष में ही मानो देखो, नाना प्रकार के स्वरुपों को लेकर के उसमें चित्र गमन करते रहते है। शब्द गमन करते रहते हैं और अंतरिक्ष मानो देखो, ये अभ्यं ब्रह्मे मानो देखो, नाना प्रकार के परमाणुओं को मानो देखो स्थिर करने लगता है, अपने में धारण कर लेता है वह अवकाश है। यह अवकाश में ही तो गमन करती है। अवकाश में ही तो प्राण स्वरुप बनती है। अवकाश में ही तो मुनिवरो! देखो, अभ्यो ब्रह्माः बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो ये अवकाश में ही शब्द स्थिर रहते है और देखो, मुनिवरो! वह इसी के द्वार से आते है।

शब्द की गति

मानो देखो, मानव के श्रोत्रों का समन्वय अन्तरिक्ष से रहता है, दिशाओं से रहता है। मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिको ने यह कहा है आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञानवेत्ताओं ने कि जब मानो देखो, ये शब्द हम उच्चारण करते है, जो शब्द मानवता से, दर्शनों से गुथा हुआ है उस शब्द का जब उच्चारण करते है, तो वही शब्द मानो दिशाओं में जाता है और दिशाओं से वो गमन करता है और गमन करके मानो वो एक अक्षण समय में, मुनिवरो! देखो, 385 समय बेटा! इस पृथ्वी की परिक्रमा करता है। मंगल की परिक्रमा कर जाता है। बुद्ध की परिक्रमा कर जाता है। बेटा! वही शब्द है जिसको हम उच्चारण कर रहे है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने एक वर्णन करते हुए यह कहा कि हे मानव! तू उस शब्द को अपने में मानो ऐसा उच्चारण कर क्योंकि तेरा शब्द द्यौ लोक को प्राप्त होकर के वह तुझे ही प्राप्त होना है, तुझे ही उसे प्राप्त करना है, इसीलिए देखो, अक्रोदां ब्रह्मे तू, उस शब्द में मावनता की आभा को धारण कर।

परमात्मा का गर्भाशय

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि ये जो हमारे शब्द है ये अग्नि है। ये सर्वत्र देखो, मानो वायु में और वायु जो गतिवान होती है, अवकाश में, अंतरिक्ष में होती है। ये अंतरिक्ष मुनिवरो! अपने में विचित्र कहलाता है। इसी में सर्वत्र लय हो जाती है। यह अपने में मानो देखो, जब अंतरिक्ष से आगे चलकर के महत्तत्व आता है। जहाँ ये अंतरिक्ष के परमाणु उसमें सिमट जाते है। अंतरिक्ष के परमाणु जब सिमट जाते है। तो मेरे प्यारे! देखो, उसे कालरात्रि कहते है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह कालरात्रि बन जाती है। ये सर्वत्र को अपने में धारण करने लगती है। बेटा! ये देखो, समाज अपने में अपनेपन को अभ्योदय कर रहा है।

तो विचार आता रहता है, बेटा! देखो, हमारा वाक् क्या कह रहा है। हमारा वाक् यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देवत्तव को जानने लगे। उसके गर्भ में यह महत्तत्व है यही तो परमात्मा का गर्भाशय कहलाता है। बेटा! ये उसी में वास करता है। उसी में बसता रहता है। ये परमाणुवाद और अणुवाद सब उसके गर्भ में प्रवेश करके उसमें बस जाते है। तो मेरे प्यारे! वेद का मंत्र यही तो कहता है प्रमणं ब्रह्मे वाचं ब्रह्माः गर्भस्थः वसुन्धरं ब्रह्माः। मेरे प्यारे! देखो, वो मेरा प्यारा प्रभु वसुन्धरा है। उसके गर्भ में बेटा! हम सब वशीभूत हो रहे है। उसी के गर्भ में बेटा! अपने को पनपा रहे है। मानो देखो, परमपिता परमात्मा की आभा में जो मानव लय हो जाता है, अवृत हो जाता है। बेटा! वह देखो, आनन्द को अनुभव करने लगता है। आनन्दवत् हो जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार विनिमय में क्या, ये हमारे यहाँ एक दूसरा एक दूसरे में लय होता रहता है। आज मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। केवल यह परिचय देने के लिए आया हूँ। मुनिवरो! इसके आगे की चर्चा तो मैं कल प्रगट करुँगा कि इसका विकास कैसे होता है? ये चन्द्रमा से विकास प्रारम्भ होता है, ये कैसे होता है? ये चर्चा तो मैं कल करुँगा।

आज का विचार तो यह मेरे प्यारे! देखो, ये कैसे एक दूसरे में लय हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, चारों प्रकार की जो सृष्टि है। वह मुनिवरो! देखो, पृथ्वी में और पृथ्वी जल में और जल जिसे हम आपो ज्योति कहते है और आपो ज्योति मुनिवरो! देखो, वह अग्नि में और अग्नि वायु में और वायु मुनिवरो! देखो, अंतरिक्ष, अवकाश में और अंतरिक्ष में जो परमाणुवाद है, वह महत्तत्व में लय हो जाता है। बेटा! आगे की चर्चा तो मैं कल ही प्रगट करुँगा, विचार केवल यह कि महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने जब इस प्रकार निर्णय दिया तो ब्रह्मचारी अपने में संतुष्ट हो गए और ब्रह्मचारियों ने कहा—धन्य है, प्रभु!

तो मेरे प्यारे विचार विनिमय में क्या कि आज हम बेटा! एक दूसरे के लय, कल हम इसकी दूसरी आभा का वर्णन करेंगे। दूसरी माला के सूत्र जैसे मुनिवरो! ये लय हो गया, इसका विकास कैसे होता है और कैसा मानो, प्रभु का ये नियमबद्ध कर्म हैं, उसकी चर्चा कल प्रगट करेंगे। आज तो बेटा! प्रभु के नियमबद्ध की चर्चा की। ये लय कैसे हो जाता है। मेरे प्यारे! एक दूसरे में विकास, एक दूसरे की चारों प्रकार की सृष्टियाँ पृथ्वी में और पृथ्वी आपो में, आपो मुनिवरो! देखो, अग्नि में और अग्नि, अग्नि ब्रह्मणे देखो, वायु में और वायु अंतरिक्ष में और अंतरिक्ष मुनिवरो! महत्तत्व के रुप में परिणत हो जाता है।

अनन्तमयी प्रभु

तो मेरे पुत्रो! देखो, परमात्मा का कैसा अनूठा जगत् है? कैसा, बेटा! देखो, विज्ञान है तो इसीलिए हम सब प्रभु के गर्भ में निहित रहते हैं। वे परमात्मा का गर्भाशय है, माता के गर्भ से पृथक् प्राणी होता है तो वह पृथ्वी की गोद में आ जाता है। पृथ्वी की गोद से जैसे ही पृथक् हुआ तो प्रभु के गर्भ में चला जाता है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना अनन्तमयी है। वेद मंत्र कहता है "अभ्यं गभत्रमाः वाचन् वसुन्धराः"। हे माता! तू वसुन्धरा कहलाती है। हे माता! तेरे ही गर्भस्थल में जो निर्माण करता है, वह भी प्रभु कर रहा है। प्रभु के गर्भ में जो खाद्य और खनिज पदार्थों का निर्माण होता है, जिससे वैज्ञानिकजन विज्ञान की उड़ान उड़ते है और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाते है, वह भी मानो देखो, प्रभु ही नृत्य करा रहा है। वाह रे, मेरे देव! तू कितना अभ्योदय होने वाला, देवतव को धारण कर रहा है। आओ, मेरे प्यारे! मैं अपने प्रभु का गुणगान गाता हुआ अपने में ही अपने को प्राप्त होना यही बेटा! देखो, प्रभु को प्राप्त करना है। यही प्रभु के गर्भ में जाना है।

चेतना का स्वरुप

आओ मेरे पुत्रो! देखो, विचार यह चल रहा था कि जितना भी ये जड़ जगत् है और चैतन्य जगत् है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में बेटा! प्रभु! नृत्य कर रहा है। वह प्रभु सर्वज्ञता में मानो गतिवान् हो रहा है। वही गति के देने वाला है। मेरे पुत्रो! जब मै। इस वाक् पर विचार विनिमय करने लगता हूँ, मेरे पुत्रो! जड़ चेतना के रुप में चेतना का स्वरुप वह है, जहाँ ज्ञान और प्रयत्न रहता है और जड़ का वह स्वरुप जहाँ प्राण सत्ता रहती है, पिण्ड बना हुआ है वह गतिवान देखो, गति वायु से ले रहा है। उसमें ज्ञान का, प्रयत्न का दोनों का भाव कहलाता है। वो जड़ है और जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है। बेटा! देखो, आत्मा का लक्षण है। वही आत्मतत्त्व वो चेतना है। चेतना मुनिवरो! देखो, चैतन्यवत् कहलाता है।

माता का कर्त्तव्य

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और माता वसुन्धरा की गोद में जाने का हम प्रयास करे। प्रत्येक प्राणी का यह कर्त्तव्य है कि उसके ज्ञान जिससे हमारा जीवन बना है अथवा प्रभु का विज्ञान कितना अनूठा है। माता के गर्भस्थल में बेटा! सर्वत्र देवता क्रियाकलाप कर रहे है। अपना—अपना गुण दे रहे है। शरीर के शरीरम् देखो, माता के गर्भ के माध्यम से, निर्माणवेता देखो निर्माण कर रहा है। हे भोली माता! तुझे यह ज्ञान नहीं है कौन निर्माण कर रहा है? माता कहती है ये मेरा पुत्र है। हे ममत्वं ब्राह्मणे तू ममता में मेरा कह सकती है पर जब तू निर्माण नहीं कर रही है तो तू पुत्रवत् नहीं। ये तो प्रभु की धरोहर है और तेरा कर्त्तव्य है कि तू उसे उर्ध्वा शिक्षा दे करके, तू महान् बनाकर के अपने जीवन को ऊँचा बना। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा तो मैं बेटा! तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करुँगा कि इसका विकास कैसे होता हैं? आज तो बेटा! मैंने लय होने की चर्चा की। कल ये चर्चा हमने कि ये संसार का विकास कैसे होता है? ये चर्चाएँ कल, आज का विचार अब समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। **ओ३म् मा रथं देवाः आभ्यां गतौ रयि नाम गतौ, मा रेवं भद्राः वायाः।।** 28. 3.1988 कसेरुवा खुर्द, मुज्जफरनगर

२ प्रतिष्ठावाद 29—03—1988

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मंत्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मंत्रो का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप है। याग उसका आयतन है अथवा उसका गृह है, उसका सदन है और वे उसी में निहित रहते है।

परमात्मा का रहस्यमयी स्वरुप

तो उस परमपिता परमात्मा को वैदिक साहित्य में यज्ञोमयी स्वरुप माना है। क्योंकि जितना भी जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात् आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव ही दृष्टिपात् आ रहा है। जिस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के और वर्तमान के जगत् तक मानो वो रहस्यमयी बना हुआ है। मानव उसका अनुसंधान कर रहा है। आज नहीं, कल नहीं, सृष्टि के प्रारम्भ से गतिवान् अपनी गति कर रहा है। उड़ानवेत्ता अपनी उड़ानें उड़ रहे है। परमपिता परमात्मा को प्राप्त करने वाला साधक अपने में साधना करता रहता है। परन्तु उसके पश्चात् भी वे परमपिता परमात्मा का जो मूलन है वह अपने में रहस्यमयी बना रहता है। क्योंकि जब तक मानव जानता नहीं तब तक उसकी पिपासा में लगा रहता है, परिश्रम करता रहता है, अनुसंधान करता रहता है, नाना प्रकार की साधनाओं में रत रहता है। परन्तु जब उसे जान लेता है तो प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। तो बेटा! वह इसीलिए रहस्य का विषय बना हुआ है क्योंकि वह इंद्रियो का विषय नही कहलाता। वो इंद्रियो से मानो दूर हो जाता है और जब इंद्रियो का विषय नही तो इंद्रियों से वर्णन करना ये बेटा! एक रहस्यमयी है।

तो आज का हमारा वेद मंत्र, उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में अथवा उसकी विचित्र–विचित्र उड़ाने उड़ने वालो ने भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने सृष्टि के प्रारम्भ से उड़ी जा रही है। तो आओ मेरे पुत्रो! आज मैं उस महान जो हमारा वेद मंत्रः हमें भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ा रहा था। मैं आज तुम्हे वहीं ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनि अपने में एकत्रित हो करके और भिन्न–भिन्न प्रकार का विचार और उन भिन्नताओं को एकता के सूत्र में लाने वाला एक नृत्यः अपने में मानो अपनी आभा में ही प्राप्त होता रहा है। तो हमारा वेद का मंत्रः बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ता रहता है।

यज्ञोमयी विष्णु

आज का हमारा एक वेद मंत्र कह रहा था ''विष्णु यज्ञं प्रमाण ब्रहे वाचन् गृही अश्रुतम्'' वेद का मंत्र यह कहता है हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हमारे यहाँ विष्णु के सम्बन्ध में बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी ऋषि मुनियो ने और वेद के मंत्रो के ऊपर अन्वेषण करते हुए ये कहा–कि विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का, जो हमारा रक्षक है और जो हमारी रक्षा का रहा है, वह विष्णु कहलाता है। हे विष्णु! तू यज्ञोमयी विष्णु है। वैदिक वाक् कहता है कि यज्ञोमयी विष्णु, शब्द केवल एक ही रहस्यमयी, कि वह रक्षा कर रहा है। तो याग भी हमारी रक्षा करता है। मानो देखो, यागां ब्राह्मण ब्रहेः याग कहते है जितने भी सुक्रियाकलाप है, जितने भी सुकर्म है, उन सर्वत्र का नाम एक याग माना गया है और वह हमारी रक्षा करने वाला है।

तो मुनिवरो! देखो, जैसे यज्ञशाला में, यजमान अपने में बेटा! अपने संकल्प के द्वारा याज्ञिक बन जाता है और वह कहता है कि यज्ञोमयी विष्णु तू आ, मेरे याग को तू शुद्ध और पवित्र बना क्योंकि तू श्रेष्ठतम है। मानो ये उद्‌गीत गाता हुआ यजमान अपने संकल्प के द्वारा याग कर रहा है। तो बेटा! वह यज्ञोमयी विष्णु है। तो हम उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी विष्णु स्वीकार करते हुए इस वायुमण्डल को अपने मानसिक प्रवृत्ति को, प्रायः अपने में ऊँचा बनाते रहे और अपनी उज्ज्वलता, प्रबलता को प्राप्त करते हुए इस संसार की प्रतिभा को प्राप्त होते रहे।

चित्त का मण्डल

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं तुम्हे उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! देखो ब्रह्मचारियों का और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विचार विनिमय में होता रहा है। बेटा! वे बड़ा अनूठा एक विचार है। जो हमें प्रभु से मिलान कराता है। यदि हम क्रियाओं के साथ में गमन करते हैं तो हमारा जीवन एक महानता को प्राप्त होता रहता है। हमारे ऋषि मुनियों की बड़ी विचित्र एक देन रही है। उन्होने वैदिक साहित्य से ये लिया है कि ध्रुवा से ऊधर्वा में और ऊधर्वा से ध्रुवा में उन्होने अपनी उड़ाने उड़ी।

तो मेरे प्यारे! देखो, महत्तत्व की चर्चा हो रही थी। हमारे यहाँ शून्य की चर्चा होती रहती है। उस शून्य बिन्दु में ही सर्वत्र जगत् समाहित रहता है जैसे चित् के मण्डल में, मानव के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार निहित रहते है उसी प्रकार हमारे यहाँ ये माना गया है कि जो महत्तत्व है उसमें सर्वत्रता निहित रहती है। उसी से उसी में समाहितता है और उसी से उद्‌बुद्ध होना है। मानो उसकी उद्‌बुद्धता के ऊपर आओ, आज हम विचार विनिमय करें। हमारा यही एक नृत्य है।

आज का वेद मंत्र भी इस प्रकार की उड़ाने उड़ रहा था। 'चन्द्रं ब्रहेः व्रतं दिव्यं बह्माः वाचन्नमं ब्रह्माः कृताः' मेरे प्यारे! देखो, 'चन्द्रमं ब्रहा' जब ब्रह्मचारी एकान्त स्थल में महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ सब ऋषियों का समूह था और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और उसके आश्रम के ब्रह्मचारी, महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में विद्यमान थे। मानो बेटा! जब विद्यमान थे तो उन्होने ये प्रश्न किया कि महाराज! आपने मानो देखो, एक लय होने की चर्चा की है। आपने हमें यह वर्णन कराया है कि ये जगत् जो दृष्टिपात् आ रहा है, यह जगत् पृथ्वी में समाहित रहता है और पृथ्वी आपो में समाहित हो जाती है और आपो अग्नि में समाहित हो जाती है और अग्नि वायु में वायु अंतरिक्ष अवकाश में और अवकाश मानो देखो एक शून्य बिन्दु में दृष्टिपात् आने लगता है। तो प्रभु! हम यह जानना चाहते है कि ये तो आपने लय होने की, इन पंचमहाभूतों की प्रतिक्रियाओं के सम्बन्ध में आपने हमें परिचय कराया है हम ये जानता चाहते है कि शून्य बिन्दु से विकास कैसे होता है?

षून्य बिन्दु की प्रतिष्ठा

उन्होंने कहा कि ये शून्य बिन्दु कहाँ समाहित होता है ये कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? तो मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया तो उस समय महर्षि भारद्वाज मुनि ने उनका उत्तर दिया कि मेरे विचार में एक वेद मंत्र तुम्हें भी स्मरण होगा, वेद मंत्र कहता है 'सूर्या चन्द्रं ब्रहे सम्भवा प्रह्ना चन्द्र लोको सम्भवा' उन्होंने ये वर्णन किया कि ये जो महत्तत्व का प्रारंभ अथवा इसकी जो लय होने की प्रतिभा है वह मेरे विचार में तो चन्द्रमा से होती है। ये चन्द्रमा में प्रतिष्ठित हो जाता है। क्योंकि चन्द्रमा जो अमृत देने वाला है। ये मानो देखो, समुद्रों से ही सहायता लेता है और यह अपने में जलों को धारण करता हुआ उसको सोम बना देता है। सोम से अमृत बनता है और उसी अमृत बिन्दु में मानो देखो, ये संसार अपने को प्राप्त होने लगता है।

अमृत प्रदाता चन्द्रमा

मानो यह चन्द्रमा अपने में बड़ा विचित्र है। चन्द्रमा एक मण्डल भी है परन्तु चन्द्रमा एक अमृत को देने वाला है, एक दूसरे में गुथा हुआ है। यह ब्रह्माण्ड एक दूसरे के कटिबद्ध है। एक लोक ही नहीं मानो लोक में भी एक दूसरे की सहायता हो रही है। जैसे प्राणी मात्र एक दूसरे का सहायक बना हुआ है मानो जितना भी प्राणी मात्र है, चाहे वृक्ष के रुप में हो, चाहे वे पशु के रुप में हो, चाहे वे किसी भी रुप में हो, परन्तु एक दूसरे का सहायक बना हुआ है। जैसे एक परमाणु है। एक परमाणु दूसरे परमाणु का सहायक बना हुआ है। इसी प्रकार ये जो लोक लोकान्तर है एक दूसरे में सहायक बने हुए है। एक दूसरे को एक दूसरे से सत्ता प्राप्त हो रही है। इसी प्रकार बेटा! ये जो चन्द्रमा है। ये मानो अमृत को देने वाला है और ये कलाओं से युक्त कहलाता है। मानो देखो, अमावस्या से लेकर के प्रतिपदा द्विपदा से मुनिवरो देखो, ये पूर्णिमा तक चला जाता है। पूर्णिमा के दिवस अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त रहता है। बेटा! जब यह पूर्णिमा समाप्त हो जाती है, तो मुनिवरो! देखो, यह एकपदा, द्विपदा को ले कर के अमावस्या को प्राप्त हो जाता है। एक भी अंकुर मुनिवरो! देखो, प्रकाश का नही रहता। यह प्रभु ने कैसा अनुपम एक रचनामयी बनाया है, निर्माणित किया है।

विनाषक अभिमान

तो विचार आता ये ऐसा क्यों? क्योंकि यह एक मानो देखो, एक शुक्लपक्ष है तो एक कृष्णपक्ष है। मेरे प्यारे! कृष्णपक्ष अधंकार को कहते हैं और शुक्लपक्ष प्रकाध को कहते है। अमावस्या से लेकर पूर्णिमा तक ये धुक्ल पक्ष कहलाता है और पूर्णिमा से लेकर के अमावस्या तक मानो यह कृष्णपक्ष कहलाता है। पूर्णिमा से अमावस्या अंधकार स्वतः प्रह्ने और अमावस्या से पूर्णिमा तक सम्पन्न कलाओं से युक्त है। तो प्रभु ने यह एक अनुपम प्राणि को शिक्षा दी। मानव को एक मानवीयता में परिणत किया। हे मानव! देखो, ये अमावस्या का दिवस है अन्धकार। चन्द्रमा का एक अंकुर नही रहता और पूर्णिमा ऐसा है जैसे

प्रकाश, जिसे शुक्लपक्ष कहते है। जो सम्पन्न कलाओं से युक्त चन्द्रमा है। ये सोम की वृष्टि करता रहता है। तो हे मानव! यदि तेरे जीवन में अन्धकार आ जाए, कृष्णपक्ष आ जाए तो तुम मानो देखो, अपने में शान्त होकर के उस कला को अपने में धारण कर ले और यदि तेरे में शुक्ल पक्ष आ जाएँ, पूर्ण कलाएँ आ जाएँ तो तूझे अभिमान नहीं होना चाहिए। मानो देखो, अभिमान आ गया तो तेरी कलाओं से कलाओं का मिलान होकर के विनाश हो जाएगा।

मेरे प्यारे! देखो, अभिमान ही मानव की मृत्यु कहलाता है। अंधकार को अपने में सहन न करना, उसमें विश्राम न करना, शान्त ज्ञान युक्त हो करके वे तेरे जीवन को उद्‌बुद्ध करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो यह चन्द्रमा में महत्तत्व की प्रतिभा, उसमें उत्पन्न करने की सत्ता है। मानो देखो, द्विपदा से चतुस् अपने में कलाओं के द्वारा ही उत्पति का मूल बन जाता है तो इसी लिए चन्द्रमा हमें अमृत को प्रदान करने वाला है। वह सौम्य है, वह अपने में महत् को धारण करके विकासवाद में परिणत करा रहा है।

चन्द्रमा की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों ने ऋषि से कहा—हे प्रभु! आपका वाक् तो यथार्थ है। परन्तु हम ये जानना चाहते है ये चन्द्रमा किसमें प्रतिष्ठित रहता है? ये कहाँ ओत—प्रोत रहता है। तो उन्होंने कहा ये चन्द्रमा तो ये सूर्य में ओत—प्रोत रहता है। क्योंकि सूर्य की कला से ही, सूर्य की कांति से ही यह कांतिवान होता है। सूर्य की रश्मियों से ही यह रश्मिवान् होता है। मानो देखो, ये चन्द्रमा सूर्य से सहायता प्राप्त करता हुआ ये अमृत देता है और सूर्य तेजोमयी कहलाता है। ये सूर्य विशाल मण्डल है परन्तु मण्डल ही नहीं यह ऊर्ज्वा के देने वाला है। मुनिवरो! देखो, वैदिक साहित्य वालों का ये कथन है, विज्ञानवेत्ताओं का भी कि इस सूर्य के प्रकाश में सूर्य की ऊर्ज्वा में तीस लाख पृथ्वियाँ बेटा! भ्रमण कर रही है। अपनी—अपनी स्थिलियों पर भ्रमण कर रही है और यह उनको ऊर्ज्वा देने वाला है, प्रकाशमयी बना रही है। मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार की रश्मियाँ प्रातःकाल आती है और रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेती है, अन्धकार समाप्त हो जाता है। यह मानो प्रातःकाल से सायंकाल तक तपता रहता है और यह तपायमान हो करके ऊर्ज्वा देता है, प्रकाश देता है। मानव को जन जीवन देता है। प्राणीमात्र के लिए ही ये ऊर्ज्वा प्रदान कर रहा है।

सूर्य के विभिन्न रुप

मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी माना गया है। मानव विचारता रहता है और जब इसके ऊपर गम्भीर मुद्रा में मुद्रित होता है तो आश्चर्य में चला जाता है और कहता है—हे प्रभु! तू कितना अनुपम है, तू सूर्य के द्वारा कैसी ऊर्ज्वा दिला रहा है और ऊर्ज्वा देकर के मानो उसमें प्रकाशमान हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य को हमारे आचार्यों ने अदिति कहा है। इस सूर्य की नाना प्रकार की आभा को बेटा! आदित्य कहा है। सूर्य को भास्कर कहा है क्योंकि यह भासता रहता है, सदैव प्रसन्नता देता रहता है, प्रकाश देता रहता है। जो प्रकाश देता है, वही तो प्रसन्न रहता है। इसीलिए परमपिता परमात्मा को भास्कर कहते है, अदिति कहते है, आदित्य कहते है क्योंकि आदित्य ब्रह्मचारी को कहते है। क्योंकि वह ब्रह्म की आभा में विचरण करता रहता है। ऊर्ज्वा, प्रकाश और रश्मियाँ देता रहता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, यह कितना अनुपम है। इसके प्रकाश में ऋषि, मुनि बेटा! अपने में नाना प्रकार की साधना करते रहे, नाना प्रकार की साधना में रत रहे। यह सूर्य मानो देखो, देवता कहलाता है। यह ऐसा देवता है जो प्रकाश देता है। ऋषि मुनियों ने बेटा! अनुसंधान किया है। अपने को सूर्य की किरणों के साथ बेटा! सूर्यमण्डल तक के दर्शन किये है। बेटा! ये कैसा अनुपम विज्ञान है। आज जब हम इस विज्ञान के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करते है तो प्रायः आश्चर्ययुक्त हो जाते हैं और कहते है कि यह कैसा देवत्तव भ्रमण कर रहा है। मेरे प्यारे! सायंकाल को अस्त हो जाता है और रात्रि आ जाती है। वहाँ सूर्य की किरणों के साथ चन्द्रमा विचरण करने लगता है। वह अमृत देता रहता है।

सूर्य की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, सूर्य हमारे यहाँ वृत्ति कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, मुझे इसमें स्मरण वार्त्ता आ गई। एक समय बेटा! सूर्य अपने में प्रकाश दे रहा था। इसमें प्रकाश जब दे रहा था तो ऋषि मुनि उस प्रकाश में साधना कर रहे थे और साधना करते—करते मानो सूर्य की किरणों के साथ गमन करते रहे। तो मेरे प्यारे! बहुत से ऋषि मुनि हुए है, वैज्ञानिक हुए हैं, जिन्होंने अपने यंत्रों की सूर्य की किरणों के साथ उड़ानें उड़ाई है। तो बेटा! देखो, वह सूर्य स्थल कहलाता है यह प्रकाश को आनन्द को प्रदान करने वाला है। तो मेरे प्यारे! जब इस प्रकार ऋषि ने इसकी विवेचना की तो ब्रह्मचारियों से नहीं रहा गया। ब्रह्मचारी नतमस्तिक होकर के बोले हे प्रभु! यह विज्ञान, यह विचार तो हमारे आचार्यों ने बहुत दिया है। हम ये जानना चाहते है ये सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा ये जो सूर्य है ये मानो देखो, गन्धर्वमण्डल में प्रवेश कर जाता है, उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है।

सौरमण्डलों का अधिपति

तो बेटा! गन्धर्व किसे कहते हैं? हमारे वैदिक साहित्य में गन्धर्व नाम बुद्धि का भी है और गन्धर्व नाम जो गायक होता है बुद्धि के द्वारा उसे गन्धर्व कहते हैं। मानो गन्धर्व नाम बेटा! देखो, सौरमण्डलों का अन्तिम मनके का नाम भी गन्धर्व कहलाता है। मेरे प्यारे! वह मण्डल भी है, लोक है बड़ा विशाल। जो मानो देखो, सौरमण्डलों का अधिपति कहलाता है। बेटा! देखो, वह जो गन्धर्व है उसमें ये सूर्य प्रतिष्ठित हो जाता है। मानो ये उसमें ओत—प्रोत हो जाता है। एक दूसरे में ओतप्रोत होता हुआ, बेटा! ये जगत् दृष्टिपात् आता है ये परमात्मा का जो अनूठा जगत् है, अनुपम जगत् है यह भी बेटा! एक दूसरे में प्रतिष्ठित होता हुआ प्रायः दृष्टिपात् आ रहा है।

बुद्धि के प्रकार

आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें अग्रणी अपने विचारों को वृतम मानो यह गन्धर्व नाम बुद्धि का है बुद्धिमान, मानो देखो, बुद्धि हमारे यहाँ चार प्रकार की कहलाती है। एक का नाम बुद्धि है दूसरे का नाम मेघा है। तीसरी का नाम ऋतम्बरा है और चतुर्थ को प्रज्ञा कहते है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ बुद्धि, मेघा, ऋतम्बरा और चतुर्थ को हमारे यहाँ प्रज्ञा कहते है। प्रज्ञा जो है ये परमात्मा से मिलान कराती है। मानो देखो, बुद्धि दृष्टिपात् करती है और बुद्धि का मूल जो निश्चय किया हुआ है उसको ऋतम्बरा शान्त मुद्रित होकर के मौन है। उसको चिंतन में लाती है वे जो मेधावी है। मेधावी बुद्धि वाला बेटा! इस संसार का गमन करने लगता है। लोक लोकान्तरों में गमन करने लगता है। आत्मतत्त्व में रमन करते लगता है, आत्मवान् बन जाता है। मेरे प्यारे! जब जान लेता है तो उसके पश्चात् बुद्धि, मेघा, ऋतम्बरा में ये प्रवेश हो करके मौन हो जाता है। परन्तु जब मेधावी बन जाता है प्रज्ञा में प्रवेश करता है, तो बेटा! प्रभु का अनुपम दर्शन होने लगता है। यह आत्मवान् बनने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो हमारे यहाँ मेधावी ऋतम्बरावी बुद्धि वाला मेरे प्यारे! देखो, वही गन्धर्ववादी कहलाता है। वह गान गाने लगता है, विचित्रता में प्रवेश कर जाता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, आगे जब ऋषि ने ये वर्णन किया कि वे गन्धर्व बुद्धि का सूचक है और ये मानो सौरमण्डलों का अन्तिम मनका है जब एक दूसरे में यह लोक लोकान्तरो में लय होने लगता है तो इस माला का अन्तिम मनका देखो, गन्धर्व कहलाता है। तो बेटा! देखो विचारवेत्ता ने वर्णन करते हुए कहा 'सम्भवं ब्रह्मे कृतं वेदा' वेद का प्रकाश, वेद का मंत्र कहता है ये अनुपम है।

गन्धर्व की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह वर्णन किया तो ब्रह्मचारियों ने नतमस्तिक हो करके कहा—प्रभु! जब बाल्य काल था हमारा तो हम मानो देखो, आचार्य के समीप गमन करते थे। आचार्य हमें यह निर्णय कराते रहते थे। प्रभु! हम जानना चाहते है कि गन्धर्व कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होने कहा यह गन्धर्व इंद्रलोकों में ओत—प्रोत होता है। यह इंद्र में ओत—प्रोत हो जाता है।

इन्द्र

बेटा! इंद्र नाम परमपिता परमात्मा को कहते है। इंद्र नाम एक लोक भी है और इंद्र नाम राजा को भी कहा गया है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आया है। 'इन्द्रोसमं ब्रह्मा आत्माः' आत्मा का नाम भी इन्द्र है। इन्द्रोः समं ब्रह्मे परमास्सुतः मानो परमपिता परमात्मा को भी इन्द्र कहते है। इद्रश्चमं ब्रह्मेः राजस कृतिवृताः राजा को भी इन्द्र कहते है और इन्द्र नाम लोक का भी है। तो बेटा! ऋषि इनकी विश्लेषणता करता हुआ कहता है कि देखो, परमपिता परमात्मा जो शासक है, जिसके गर्भ में यह संसार ओत–प्रोत रहता है वह इन्द्र कहलाता है। मानो देखो, वो इन्द्र है जो धिराज का भी धिराज बना हुआ है। जो 'संयमं ब्रह्मे' जिसके लिए जगत् मानो उसके गर्भ में संयम से रहता है। तो बेटा! उस परमपिता परमात्मा का नाम इन्द्र है। राजा को इन्द्र इसलिए कहते है क्योंकि देवताओं का राजा इन्द्र कहलाता है।

देवताओं का अधिराज

हमारे यहाँ यह नाना प्रकार की लोकोक्तियाँ चली आती है कि जो देवताओं का राजा है उसे इन्द्र कहते है। तो देवता क्यों कहते है राजा को? क्योंकि वह राजा जो इस पृथ्वी मण्डल के राजाओं का राजा होता है उसे इन्द्र कहते है। हमारे यहाँ परमपरागतों से ही, आदिकाल से ही एक जो विचार चला आ रहा है कि जो राजाओं के ऊपर धिराज है उसको राजा इन्द्र कहते है। वो देवताओं का राजा है और उसमें देवत्तव रहता है। मानो देखो, जो एक सौ एक अश्वमेध कर लेता है वो इन्द्र बन जाता है। एक सौ एक याग का अभिप्राय यह कि जो इस संसार को विजय करके, संसार जिसकी प्रसन्नता करता हुआ जिसके याग में सब राजा सम्मिलित हो जाए तो वह अश्वमेध याग कर सकता है और वह अश्वमेध याग वाला जो राजा है उसे इन्द कहते है। वो देवताओं का धिराज कहलाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, वह इन्द्र है 'इन्द्रो समं बह्माः लोकाम्' मेरे पुत्रो! जो सब राजाओं का अधिपति वह निर्माण, विचार और राष्ट्र को अनुशासन में लाने वाले का नाम इन्द्र कहलाता है। तो प्यारे! देखो, इन्द्र हमारे यहाँ त्रिपुरी में उनका राज रहा है। परम्परागतों से बेटा! इन्द्र का त्रिपुरी में राज रहा है उसे इन्द्रपुरी भी कहते है। मानो देखो, सर्वत्रता में वह याग में और जब भी आवश्यकता आई तो अश्वमेध याग में अश्व नाम राजा का है और मेघ नाम प्रजा का है। जो प्रजा को संगठित करके याग करता है उसे अश्वमेध याग कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो वह इन्द्र कहलाता है। तो इन्द्र नाम राज्य को भी कहते है इन्द्र नाम आत्मा को भी कहते है। वह इन्द्रवान् होता है आत्मा जो मेरे प्यारे! देखो उसके संरक्षण में प्रत्येक इंद्रिया बेटा! संयम में रहती है और वह इन पर राज करने वाला है उसे इन्द्र कहते है। मानो देखो, इंद्रियों का अधिराज आत्मा है। आत्मा को बेटा! देखो, इन्द्र इसीलिए कहा गया है क्योंकि वह इंद्रियो का स्वामी है। अपने में जब स्वामी बनता है तो बेटा! इन्द्र बनकर के वह 'योग अर्वणं वृहिः व्रतं देवाः' वह अपनी आभाओं में निहित रहने वाला है तो इसीलिए वह आत्मवान् बन कर के इन्द्र कहलाता है।

इन्द्रलोक

तो मेरे प्यारे! इन्द्र नाम मण्डल का भी है जो बेटा! सौरमण्डल एक का मनका है। वो मानो गन्धर्व से भी ऊर्ध्वा गति में गमन करने वाला बेटा! इन्द्रलोक कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र की बड़ी विचित्र विवेचना है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल ये कि हमें इन्द्र की उपासना करनी चाहिए, जो हमारा रक्षक है। मानो जो आत्मवान् बनता है वह इन्द्र कहलाता है। इन्द्रियों पर संयम, जय करने को इन्द्र कहते है।

इन्द्र की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब ये वर्णन किया तो ब्रह्मचारियों से न रहा गया। ब्रह्मचारी बोले प्रभु! हमारे यहाँ विद्यालयो में कक्ष रहा है विज्ञान का और इन्द्र एक काण्ड रहा है मानो देखो, उन्होने भी हमे यह वर्णन कराया। बाल्यकाल में भी इसका विश्लेषण इसी प्रकार आचार्यजनों ने, माता–पिताओं ने भी किया। हम ये जानना चाहते है कि इन्द्र कहाँ प्रतिष्ठित रहता है? उन्होने कहा ये जो इन्द्र है ये प्रजापति में ओत प्रोत हो जाता है।

प्रजापति का अभिप्राय

बेटा! प्रजापति किसे कहते है? प्रजापति उसे कहते हैं जो प्रजा का स्वामी है। हमारे यहाँ प्रजापति राजा को भी कहते है। परमपिता परमात्मा का नाम भी प्रजापति है। पिता और माता का नाम भी प्रजापति है। बेटा! देखो, प्रजापति उसे कहते है जो प्रजा का पालन करने वाला है। प्रजा में जो रत रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा को इसी लिए प्रजापति कहते है क्योंकि वह प्रजा का पालक है, न्याय करने वाला है, न्यायाधीश है। उत्पन्न करना और उत्पन्न करके पालना करना और पालना करके जो मानो देखो, न्याय करता है वह परमपिता परमात्मा प्रजापति कहलाता है।

न्यायाधीश प्रजापति

बेटा! एक राजा है वह न्याय कर रहा है परन्तु जो मन की तरंगे है उनको एक राजा न्याय में नही ला सकता परन्तु परमपिता परमात्मा ऐसा न्यायकारी है–मन में तरंगे उद्बुद्ध हो रही है। इन तरंगों के पाप पुण्य जो उसमें भ्रमण कर रहे है इनको परमात्मा ही दृष्टिपात् कर सकता है। बेटा! वे जो मनस्तव की तरंगे है, मनों की तरंगों को धारण करता हुआ वह न्यायाधीश कहलाता है, वह न्याय करता है। राजा न्याय कर रहा है वह न्याय करता है जो दृष्टिपात् आया है। उसे मानो देखो, स्थूल रुप वाले को न्यायधीश न्याय कर सकता है परन्तु परमपिता परमात्मा ऐसा न्यायकारी है जो बेटा! देखो परोक्ष अपरोक्ष में जो क्रियाकलाप हो गए है, पाप पुण्य हो गए है उनका न्याय करने वाला प्रभु है। मेरे प्यारे! वही तो जानता है वही तो अपनी आभा में नियुक्त करने वाला है। तो जो पालना करता है वह प्रजापति है। पालना करता हुआ बेटा! पालक कैसे बना हुआ है?

बेटा! मैंने कई कालों में तुम्हें वर्णन कराया है कि वह पालक बना हुआ है और माता नहीं जानती कैसे पनप रहा है। नस नाड़ियों के द्वारा बालक का, शिशु का पालन हो रहा है। अमृत देने वाला अमृत दे रहा है, प्राण देने वाला, प्राण दे रहा है। ऊर्ज्वा देने वाला, ऊर्ज्वा दे रहा है। कैसा वो पालक हैं, बेटा! वनस्पतियों के द्वारा मंद सुगन्ध दे रहा है। रात्रिकाल में चन्द्रमा के द्वारा अमृत पिला रहा है। सूर्य के द्वारा वह ऊर्ज्वा दे रहा है बेटा! उसको राजा नहीं जानता, न्यायाधीश नहीं जानता परन्तु वह प्रभु जानता की कैसे पालन हो रहा है।

रचनाकार प्रजापति

माता तू भी नहीं जानती। जब तेरे गर्भ स्थल में हम जैसे पुत्र होते है तो माता तू भी नही जानती कौन पालन कर रहा है। कैसे नस नाड़ियों के द्वारा माता के विचार जा रहे है। उसको प्रभु जानता है वह कैसा पालक है। वह कैसा अनुपम है बेटा! जब में इसके ऊपर विचार करता हूँ तो में अश्वस्त हो जाता हूँ, आश्चर्य में चला जाता हूँ। वह पालक है बेटा! संसार में आता है। पृथ्वी में खनिजों को देकर के नाना प्रकार का खाद्यान देकर के उसकी तरंगे, उनके परमाणु से वह बलवती होता है। कौन पालन कर रहा है बेटा! देखो, वह पालक प्रभु है वह ही न्यायाधीश है। मानो देखो, जो न्याय करने वाला है, पालक है और सृष्टि की रचना करने वाला है बेटा! वही तो रचना करने वाला "रचनं ब्रह्मे कृतम्" बेटा! वह रचनाकार है इसीलिए वह प्रजापति कहलाता है, पालन करता है, न्याय करता है, इसका संहार कर देता है, वही तो प्रजापति है।

तो मेरे प्यारे ! देखो, वह प्रजापति कितना अनुपम है, उस प्रजापति में मानो ये सर्वत्र इन्द्र सब ओत–प्रोत हो जाते है, उसमें प्रतिष्ठित हो जाते है। मेरे प्यारे! उसी में ओत–प्रोत हो जाते है। मुनिवरो! देखो, परमपिता परमात्मा प्रजापति को कहते है, राजा को भी प्रजापति कहते है। जो राजा अपने चरित्र को ऊँचा बना लेता है तो प्रजा स्वतः चरित्रवान बन जाती है। तो बेटा! देखो, वह राजा भी प्रजापति है। माता–पिता इसलिए प्रजापति है क्योंकि माता पिता दोनो एक स्थली पर विद्यमान होकर के अपना संकल्प बनाते है पुत्रवान् बनने का, प्रजापति बनने के लिए। उस संकल्प में ही मानो देखो, वह सत्ता है, मिलन करके मानो देखो, उसमें एक वृतियाँ जागरुक हो जाती है। वे प्रजावान् बन जाते हैं, पुत्रवान्, पुत्रिवान् सब मानो देखो संतानवान् बन कर के वे प्रजापति बन जाते हैं। हे पितर! तू प्रजापति है। तो मानो देखो, इसमें अपने विचारों को ऊर्ज्वा में माता बना लेती है, पितर बना लेता है तो उसी विचारों से

संतान मानो देखो एक महान बन जाती है और दोनों देखो चरित्रवान हो करके दोनों ऊर्ज्वा को प्राप्त करते है। मानो देखो, अपने में अपनेपन का दर्शन करने लगते। वे प्रजापति कहलाते हैं।

प्रजापति की प्रतिष्ठा

तो बेटा! देखो, ऋषि कहता है—सम्भवम् ब्रह्मचारियों ने ये प्रध्न किया ऋषि से कि हे प्रभु! ये भी जब अधययन करते थे तो आचार्य वर्णन कराते रहते। हम यह जानना चाहते है कि ये प्रजापति कहाँ प्रतिष्ठित रहता है? बेटा! वर्णन करते हुए महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि ये ब्रह्मचारी तो बड़े प्रध्न कर रहे है। हे ब्रह्मचारियों! ये जो मानो प्रजापति है ये याग में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। याग में, यज्ञ में ये प्रतिष्ठित हो जाते हैं। जितना भी सुकर्म है वे सर्वत्र मानो देखो, याग स्वरुप माना गया है। अग्न्याधान करना अग्नि में, अग्नि को जानना ही मानो देखो, याग है। सब अग्नि के मुखारबिन्दु में जाता है। अग्नि सब देवताओं का मुख कहलाता है। वे जो मुख में मानो देखो, सब देवता उसे पान करते है। सब देवता हमारे धरीरों में बाह्य और आंतरिक जगत् में क्रियाकलाप कर रहे है। तो ये सब काम करते हुए समय–समय पर वृष्टि होती है। समय–समय पर मानो सर्वत्र क्रियाकलाप होते रहते हैं तो वे सब मानो यजमान यज्ञम् ब्रह्माः देखो, वे प्रजापति याग में माने गये हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने जितना भी सुकर्म है—राष्ट्र से लेकर के याग और अग्न्याधान तक, सब धुभ कर्म माना है। सुवृत्तं सुयाग कहलाता है। संतानवान् बनना भी बेटा! देखो एक याग है। हमारे यहाँ याग की प्रतिभा, याग की मीमांसा करते हुए बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी है।

तो विचार देते हुए कहा है कि यागां ब्रह्मणं ब्रहे आत्मयाम् आत्मवान् बनना है तो इंद्रियों के साकल्यों को रुप रस को एकत्रित करके उनके अहः उनको यज्ञाम्, यज्ञधाला में हूत किया जाता है तो वे भी एक याग आधयात्मिक याग कहलाता है। माता अपने गर्भस्थल में बालक को पनपा रही है, उसे धिक्षा दे रही है तो मानो देखो वह भी ब्रह्मण याग कर रही है। तो बेटा! देखो, प्रजापति कहाँ प्रतिष्ठित है, याग में। यह सर्वत्र जो देखो, परमात्मा का सृष्टिकर्म है यह भी एक यज्ञमयी माना गया है। एक दूसरे में एक दूसरा आश्रित बन रहा है उस यज्ञ में प्रत्येक यजमान अपने में आहुति दे रहा है, स्वाहा कह रहा है। अग्नि की धाराओं पर धब्द द्यौ–लोक में प्रवेध कर रहा है। साकल्य जा रहा है। वेद मंत्रों की देवत्तव को पुकार करके आहूत कर रहा है।

मेरे प्यारे! हे ब्रह्मण! हे उद्गीत गाने वाले! वेद का उद्गार देने वाले! तू उद्गीत गा रहा है तू आहुति में परिणत करता हुआ, अपने में स्वाहा कह रहा है। यह सब धब्द द्यौ–लोक को प्राप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ये सर्वत्र एक याग है वे प्रजापति याग में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। उसी याग में वो निहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! जैसे ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की, अन्त में बेटा! देखो, ऋषि व्रणं ब्रह्माः वे कहते है प्रभु! हमने जान लिया? हमारे यहाँ याग होता रहता है। याग करते चित्रों का भी दर्धन होता रहता है। हम ये जानना चाहते है, प्रभु! ये याग किसमें प्रतिष्ठित रहता है?

याग की प्रतिष्ठा

उन्होंने कहा—ये जो याग है ये मानो देखो, दक्षिणा में ओत–प्रोत रहता है। मेरे प्यारे! देखो, दक्षिणा में ये याग प्रतिष्ठित हो जाता है और दक्षिणा की बड़ी विषाल और विचित्र मीमांसा है। वेद का ऋषि कहता है कि जब दक्षिणा लेने का समय आता है, तो पुरोहित कहता है कि तुम मुझे दक्षिणा प्रदान करो। यजमान कहता है प्रभु! जो इच्छा हो, वे स्वीकार कीजिए। उन्होंने कहा दक्षिणामयी देहि। तो जब वह दक्षिणा देने लगता है तो वह कहता है मुझे द्रव्य नहीं चाहिए। पुरोहित कहते है तेरी जो त्रुटियाँ है, तेरे में जो अभिमान है, तेरे में जो क्रोध की विधेष मात्रा का जन्म हो गया है, तू अपनी त्रुटियाँ को मुझे अपनी दक्षिणा में परिणत कर दे। तो मेरे प्यारे! देखो, यजमान मौन होकर के कहता है लीजिए प्रभु! ये दक्षिणा! द्रव्य देना भी है, क्योंकि द्रव्य इसलिए क्योंकि पुरोहित के उदर की पूर्ति होगी और वह जो दक्षिणा है, वह जो वास्तविक दक्षिणा है वह देखो, यजमान अपनी त्रुटियों को अपने पुरोहित को प्रदान कर देता है। ब्रह्मा को अर्पित कर देता है, समर्पित कर देता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, दक्षिणा में याग परिणत रहता है। यदि याग की त्रुटियाँ बनी रहीं तो याग सम्पन्न नहीं होता है। बिना दक्षिणा के याग सम्पन्न नहीं होता। अरे यजमान! तू अपनी त्रुटियों को मुझे प्रदान कर, मुझे समर्पित कर। मानो तेरे याग को मैं पूर्णता को प्राप्त कराऊँ। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मणम् ब्रह्मे वेदां यज्ञं बृहिः लोकाम् बेटा! यह वेद का मन्त्र कहता है कि यजमान! तू अपने में दक्षिणा में ओत–प्रोत हो जा।

दक्षिणा की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ब्रह्मचारी कहते है हे प्रभु! ये दक्षिणा का प्रसंग भी हमने बहुत श्रवण किया। द्रव्य देना भी दक्षिणा मानो उदर की पूर्ति है। संकल्प करना, त्रुटियों को समर्पित करने का नाम दक्षिणा है। प्रभु हम जानना चाहते है कि दक्षिणा की उद्बुद्धता कहाँ से होती हैं? दक्षिणा कहाँ ओत प्रोत रहती है? बेटा! वेद का ऋषि कहता है कि ये दक्षिणा हृदय में रहती है? मानो देखो, दक्षिणा श्रद्धा में रहती है इसीलिए प्रत्येक मानव को एक दूसरे में श्रद्धावान् बनना चाहिए, श्रद्धावान् रहना चाहिए। उसका श्रद्धा से समन्वय रहता है और श्रद्धा कहते है प्रभु! लीजिए मैं समर्पित कर रहा है। मेरी श्रद्धा है मैं तुम्हें अर्पित कर रहा हूँ।

श्रद्धामय जीवन

मेरे प्यारे! देखो, श्रद्धा में ही तो जगत् है बेटा! श्रद्धा में माता है, श्रद्धा में पुत्री है, श्रद्धा में पितर है, श्रद्धा में पुरोहित है, श्रद्धा में बेटा! सर्वत्र एक आस्तिक जगत् बना हुआ है। यदि श्रद्धा नहीं होगी तो जीवन में जीवन नहीं रहेगा। तो वेद का ऋषि कहता है। ''श्रद्धं श्रद्धं ब्रह्मे'' मेरे प्यारे! देखो, श्रद्धा में ये जगत् ओत–प्रोत रहता है। तो विचार आता है। मुनिवरो! देखो, ये दक्षिणा श्रद्धा में ओत–प्रोत हो जाती है। मेरे पुत्रो! देखो शेष अनुपलब्ध **29.3.1988,कसेरुवा खुर्द,मुज्जफरनगर।**

३ इन्द्रियों की मृत्यु (अतिथि–अगस्त–08 पत्रिका)

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद–मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वो मेरा देव वरणीय है और जो उसको वरण बना लेता है अथवा उसे वर लेता है वो प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है।

वेद मन्त्र की वार्ताएँ

परन्तु हमारा वेद मंत्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गाता रहता है। जिस प्रकार ये वाणी मानव की गाथा गाती रहती है, जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी मानो इस ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार प्रत्येक वेद मंत्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। मानो उसका वर्णन कर रहा है, क्योंकि प्रत्येक वेद मंत्र में तीन प्रकार की वार्ताएँ आती रहती है। सबसे प्रथम वेद मंत्रो में व्यवहार आता है। उसके पश्चात् उसी वेद मंत्र को विचार विनिमय में करने से, तुम्हारे समीप विज्ञान आने लगता है। उसी वेद मंत्र को और भी गम्भीरता से अध्ययन किया जाता है तो उसमें, मृत्यु से विजय होने वाला, मानो योग और आध्यात्मिकवाद हमें दृष्टिपात् आने लगता है। प्रत्येक मानव के हृदयों में, नाना प्रकार की अग्नियाँ प्रदीप्त हो रही है और उसमें भिन्न–भिन्न प्रकार की तरंगे आती चली जा रही है और उन तरंगो के आधार पर, मानव के जीवन की प्रतिक्रियाएँ मानो उसी में कटिबद्ध रहती है।

मृत्यु की निकटता

मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मंत्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। मानो सर्वप्रथम इस वेद मंत्र में व्यवहार आता है। वेद मंत्र यह कह रहा है "मृत्युंजयं रथाः देवाः द्यौरसिः अमृताः"। हे मानव! तू इस मृत्यु को अपने निकट न आने दे। ये मृत्यु संसार को रूलाने वाली है। ये प्रत्येक प्राणी को, अपने में निगल जाती है। एक समय आता है कि जब चन्द्रमा सूर्य को भी प्रायः निगल जाता है। एक–एक परमाणु को भी निगल जाती है। मानो जितने भी चित्र अंतरिक्ष में विद्यमान हैं, एक समय आता है बेटा! ये सर्वत्र चित्रों को अपने में निगल जाती है। मानो यह इसका भोज बन जाता है, इसीलिए वेद का ऋषि कहता है, हे मानव! तू इस मृत्यु को अपने निकट न आने दे। कौन ऐसा पुरूष है जो इस मृत्यु को अपने निकट नहीं आने देता?

प्राण में प्रतिष्ठा

बेटा! जो अपनी इंद्रियों पर संयम करता है। जो इंद्रियों को मृत्यु से उल्लांघ देता है। बेटा! वो कौन–सा पुरूष है जो इंद्रियों को मृत्यु से पार कर देता है? और इंद्रियों की मृत्यु क्या है? वेद में नाना प्रकार की आख्यायिकाएँ आती हैं। परन्तु देखो, विचार विनिमय में करने से प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक इन्द्रिय जब निःस्वार्थ होकर के प्राण के सखा, प्राण में प्रतिष्ठित हो जाती हैं, तो मानो वही मृत्यु से पार होना है।

मृत्यु का स्वरूप

आज मैं बेटा! तुम्हें गम्भीर क्षेत्र में नहीं ले जाऊँगा। केवल कुछ परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है? प्रत्येक मानव ये चाहता है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। मृत्यु के आँगन में जाने वाला प्राणी सदैव दुःखित रहता है अथवा त्रास में रहता है। परन्तु ये प्रसंग आता है कि मृत्यु क्या है? जो संसार को अपने में निगल रही है, अपने में धारण कर रही है। मेरे प्यारे! वह मृत्यु क्या है? जो चन्द्रमा, सूर्यों को भी निगल जाती है। सम सरोताल को भी निगल जाती है। मेरे प्यारे! जो दिशाओं को भी निगल जाती है। विचार आता है कि ये मृत्यु क्या है? जो इतना त्रास देती है और संसार गतिशील होता हुआ इसके मुख में जाता हुआ दृष्टिपात् भी हो रहा है।

देवताओं द्वारा याग

परन्तु गम्भीरता से जब अध्ययन किया जाता है। तो विचार आता रहता है मेरे प्यारे! एक वार्ता स्मरण है। एक समय मुनिवरो! दैत्य और देवता शांत विद्यमान थे। देवताओं ने विचारा कि हमें मृत्यु से पार होना चाहिए। तो उन्होंने एक याग किया। जब मुनिवरो! ब्रह्मयाग करने लगे तो उसमें मेरे प्यारे! देवता जनों ने वाणी से कहा – हे वाणी देव! अप्रदाः तू हमारा उद्‌गाता बन, तू उद्‌गीत गा। उन्होंने ये वाक् स्वीकार कर लिया। परन्तु ये कहा कि जो मेरा शुभ और अशुभ कर्म होगा वह सब देवताओं को प्राप्त होगा।

वाणी का छेदन

ये वाक् स्वीकार हो गया। परन्तु जब ये उद्‌गीत गाने लगी तो बेटा! इसमें स्वार्थ प्रवृता आ गई। जब स्वार्थ प्रवृता आ गई तो दैत्यों को यह प्रतीत हुआ कि वाणी, उद्‌गाता के द्वारा देवता हमसे आगे जाना चाहते है। उन्होंने मेरे पुत्रो! वाणी का छेदन्य कर दिया और वाणी जहाँ उद्‌गीत, देवताओं का गुणगान गा रही थी। वहाँ अब स्वार्थ में आ करके अशुद्ध उद्‌गीत गाने लगी। क्योंकि असुरो ने छेदन्य कर दिया, तो इससे प्रतीत हुआ कि इन्द्रियों में, स्वार्थ प्रवृता आ गई। परन्तु वाणी का छेदन्य हो गया परन्तु देवताओं को तो ब्रह्मयाग करना था।

तो देवताजन चक्षु के द्वार पर पहुचे। हे चक्षु! तू हमारा उद्‌गाता बन और तू हमारा उद्‌गीत गा। उन्होंने कहा – बहुत प्रिय। मेरे प्यारे! उन्होंने भी यही वाक् कहा कि जो भी शुभ और अशुभ कर्म होगा वह सब देवताओं को प्राप्त होगा। परन्तु जब ये देवताओं को दृष्टिपात् करने लगी अथवा उद्‌गीत गाने लगी तो उद्‌गीत गाती रही। मेरे प्यारे! जहाँ ये शुभ देवताओं को दृष्टिपात् कर रही थी वहाँ स्वार्थ प्रवृत बेटा! अशुद्वता की भी आ गई। अब दैत्यों ने यह विचारा कि ये सब देवता चक्षु उद्‌गीत के द्वारा हमसे आगे जाना चाहते हैं। तो दैत्यों ने मुनिवरो! देखो, चक्षु का छेदन्य कर दिया। जब चक्षु का छेदन्य कर दिया। तो मेरे प्यारे! वो मौन हो गए।

घ्राण का छेदन

अब देवताओं को तो याग करना था। वे घ्राण देवता के द्वारा आ पहुँचे और घ्राण इंद्रिय से कहा हे घ्राण इंद्रिय! तू हमारा उद्‌गीत गा। क्योंकि तेरे में सत्ता है। उन्होने कहा – बहुत प्रिय, परन्तु पाप और पुण्य देवताओं को प्राप्त होंगे।

मेरे प्यारे! वो उद्‌गीत गाने लगी। सुगन्ध को ग्रहण करने लगी। वायुमण्डल में से भी और वायु के वेगों में से भी सुगन्ध परमाणुओं को लेने लगी और मुनिवरो! समय कुछ हुआ। तो मुनिवरो! देखो! अशुद्ध गंध को भी लेने लगी। वहाँ भी स्वार्थ प्रवृता आ गई। स्वार्थ प्रवृता आ जाने के पश्चात् मेरे प्यारे! दैत्यों को यह प्रतीत हो गया था कि वह तो वाहन ब्रह्माः अप्रताहम् देवता तो उद्‌गीत घ्राण के द्वारा। तो उन्होंने बेटा! देखो, उसका छेदन्य कर दिया और छेदन्य करके वह मौन हो गई। क्योंकि शुद्ध और अशुद्ध दोनों में परिणत हो गई अथवा स्वार्थ प्रवृता आ गई।

श्रोत्र का छेदन

मेरे प्यारे! देखो, देवताओं को तो ब्रह्मयाग करना था। देवताजन जिन्होंने मेरे प्यारे! देखो, वे श्रोत्राणि पृच्छा इन्द्रोवस्ते" श्रोत्र के द्वार आ पहुँचे। उन्होंने कहा – हे श्रोत्र! तू हमारा उद्‌गीत गा। उन्होंने कहा – बहुत प्रिय! परन्तु शुभ, अशुभ जो कर्म होगा वो देवताओं को प्राप्त होगा। ऐसा वो भी उद्‌गीत गाने लगा। शब्द को यथा श्रवण करने लगा। मेरे प्यारे! जब कुछ समय हो गया तो अशुद्ध भी आने लगा। तो वहीं मृत्युंजय ब्रह्मणाः मृत्यु आ गई। मेरे प्यारे! वहीं दैत्यों ने श्रोत्र को छेदन्य कर दिया।

स्वार्थ प्रवृत्ता ही मृत्यु

तो विचार आया कि इंद्रियों को हम अपना उद्‌गीत बनाकर के मृत्यु से पार नहीं हो सकते। हम इंद्रियों को अपना उद्‌गीत न बनाएँ, क्योंकि इंद्रियों के द्वारा स्वार्थ प्रवृता आती है, चंचलता आती है, एक–एक इंद्रियों को जानकर के बेटा! देवताओं ने, मृत्यु का आह्वान कर दिया और मृत्यु के द्वार पर चले गए, क्योंकि स्वार्थ प्रवृता का नाम ही मृत्यु है। मेरे प्यारे निःस्वार्थऋ निष्पक्ष होकर जो विचरण करता है, वो निर्द्वन्द्व होकर के मृत्यु को उल्लांघता चला जाता है।

प्राण द्वारा उद्‌गीत

मेरे प्यारे! अब देवताओं को तो ब्रह्मयाग करना था। सब देवता मुनिवरो! भ्रमण करते हुए, देखो, प्राण देवता के समीप पहुँचे और प्राण देवता से कहा – कि महाराज! हम मृत्यु से पार होना चाहते है। परन्तु आप हमारा उद्‌गीत, उद्‌गाता बनो और उद्‌गीत गाओ। प्राण देवता ने उस वाक् को स्वीकार कर लिया। मेरे प्यारे! देखो, प्राण जब उद्‌गीत गाने लगा तो इंद्रियाँ उसके समीप आ गई। इंद्रियों ने कहा प्रभु! आप तो हमारे सखा हैं। हम भी मृत्यु से पार होना चाहते हैं। उन्होंने कहा तो तुम भी प्राण में ओत–प्रोत हो जाओ। जब प्राण में ओत–प्रोत हो गई तो प्राण के द्वारा ही मानव उद्‌गीत गाता है। बेटा! प्राण और मन दोनों का समन्वय करता रहा है परम्परागतों से ही। इस प्राणदेवता में यह ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है बेटा! ये सर्वत्र इन्द्रियाँ ही पिरोई नहीं है। ये इन्द्रियों का जो विषय है, ये भी प्राण देवता में ओत प्रोत है।

निःस्वार्थ प्राण

मेरे प्यारे! देखो, इसलिए योगीजन प्राणायाम करते हैं। एकान्तस्थली पर विद्यमान हो जाते हैं और मृत्यु से पार होने के लिए ये रेचक, कुम्भक, पूर्वक सतो पिप्लापी आदि नाना प्रकार के प्राणायाम करते रहते हैं और भी नाना प्रकार के जैसे खेचरी, कूसिस्टप है, रेत–केतु है, ये नाना प्रकार के प्राणायाम किए जाते हैं। कोई काल था बेटा! जब हम इनका अभ्यास करते थे। बहुत समय हो गया। जब पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा विद्यमान होते थे। तो बेटा! इन

नाना प्रकार के प्राणायामों का अभ्यास करते रहते थे। विद्यालयों में भी बेटा! ब्रह्मचारियों के मध्य में इसकी प्रतिक्रियाएँ होती है। आज मैं बेटा! इतना समय नहीं। विचार केवल यह कि बेटा! हम प्राणायाम करने वाले बने, क्योंकि प्राण ही मानो इस शरीर में ऐसा है जो निःस्वार्थ होकर के विचरण करता है, इसको कोई स्वार्थ नहीं है। मानो आलस, प्रमाद में चला जाता है, वहाँ भी प्राण गति करता रहता है। बेटा! वो एक सूत्र की भाँति पिरोया हुआ है। इसी प्रकार ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक सूत्र में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार यह मानव शरीर भी प्राण रूपी सूत्र से पिरोया हुआ है। ये प्राण गति करता रहता है। इसमें भिन्न–भिन्न प्रकार का प्राणायाम करना, मुनिवरो! देखो, हमें मृत्यु के पार होना है। मृत्यु से दूरी होना है, जब प्राण को जान लेता है। तो बेटा! वायु में जो गति करने वाले परमाणु है, उन परमाणुओं की गंध से यह प्रतीत कर लेता है कि अमुक वायु गति कर रही है।

मेरे प्यारे! तुम्हें स्मरण होगा भारद्वाज मुनि के द्वारा एक ऐसी विद्या थी कि वे जिस पृथ्वी पर विद्यमान होते थे। उसी पृथ्वी के परमाणुओं को लेकर के, पृथ्वी के गर्भ को जान लेते थे कि इसमें कितने प्रकार का खनिज कितनी दूरी पर है। खाद् किस प्रकार का उत्पन्न हो सकता है। तो ये प्राणदेवता के जानने से ही मानो देखो उसी की ही प्रतिभा है।

प्राण की भाँति विचरण

तो आज विचार क्या, हम विचारना यह चाहते हैं कि मृत्यु से कौन पार होता है? जो प्राण को जान लेता है। प्राण सखा को जान लेता है, क्योंकि शरीर का छिन्न–भिन्न हो जाना तो स्वाभाविक है, इसका तो निर्माण हुआ है। परन्तु प्राण की भाँति निःस्वार्थ होकर के विचरण करोगे तो मृत्य नहीं आएगी। मृत्यु आने का प्रसंग ही नहीं होता। शरीर का जहाँ प्रसंग है, वह शरीर जिसका निर्माण हुआ है। वह तो परमाणुओं का एकत्रित होना है, परमाणुवाद का तो छिन्न–भिन्न हो जाना, आज नहीं तो कल अवश्य होना है। परन्तु इसको मृत्यु नहीं कहते।

जीवन में प्रकाश

वेद का ऋषि यह कहता है कि शरीर के छिन्न–भिन्न हो जाने का नाम मृत्यु नहीं है। मृत्यु है संसार में ज्ञान का न होना। ज्ञान जब होता है तो विवेक होता है और विवेक होता है तो संसार की अपनी जानकारी होती है। ब्रह्मविद्या में मानो रत होने लगता है। तो ये हमारा सबसे उत्तम मानो जीवन है। जीवन की मानव परम्परागतों से कल्पना करता रहा है। मृत्यु की कल्पना नहीं की जाती। बेटा! हम जीवन की कल्पना करते हैं। जीवन में जीवन चाहते हैं, प्रकाश चाहते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, ये इन्द्रियों का जितना व्यापार है, यह आध्यात्मिकवादियों के लिए एक व्यवहार रह जाता है। उसी व्यवहार में जब मानव रमण करने लगता है। माता है, पितर है, पुत्र है, पुत्रियाँ, पत्नी मानो देखो, इनमें वो रत रहने लगता है और रत रहता हुआ मानो देखो, अभ्यस्त होता हुआ, कुछ समय के पश्चात् अपने को न होने के तुल्य स्वीकार करता है। अपने मनों की, सर्वत्र मन्त्रवत् प्राणियों की ये परविधियाँ उसके समीप आने लगती है। मनों की प्रतिक्रियाएँ उसके समीप आने लगती है। परन्तु उसकी "ासता में और प्रयासता में उल्लास में मानव को परिणत करती है।

वरुण शक्ति और मित्र शक्ति

परन्तु आज मैं बेटा! तुम्हें इन वाक्यों को उच्चारण करता हुआ दूरी न ले जाऊँगा। केवल विचार ये कि वेद मंत्र कहता है कि मानव को व्यवहार में रहना चाहिए। अब आगे चलकर के विज्ञान में मानव रमण करता है। वहाँ से आगे चलकर के इंद्रियों का जितना भी विषय है, उन विषयों में, नाना प्रकार की जो तरंगे है। उन तरंगों में वरुण शक्ति और मित्र शक्ति दोनों विद्यमान है। वरूण शक्ति और मित्र शक्ति का जहाँ–जहाँ मिलान होता है वहीं मेरे प्यारे! देखो, जलों की उत्पत्ति, जलों की धाराएँ मानो पंच महाभौतिक आभा में मानव रमण करने लगता है। इन सर्वत्र पंचमहाभूत वाले ब्रह्माण्ड में वरुण शक्ति और मित्र शक्ति तुम्हें प्राप्त होती है। उस वरूण शक्ति और मित्र शक्ति से ही मेरे प्यारे! दोनों का मिलान करके नाना प्रकार की आभा में बेटा! यंत्रों का निर्माण करने लगता है। इंद्रियों के विज्ञान को जानता हुआ मेरे प्यारे! इस नाना प्रकार के परमाणुवाद में रमण करने लगता है। जब शब्द के विज्ञान में मानव प्रवेश करता हैं।

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराते हुए कहा था। हमारे यहाँ उद्यालक गोत्र में एक श्वेतकेतु नाम के ऋषि हुए हैं। मुनिवरो! देखो, वे नित्य प्रति याग करते थे। याग करके एक समय अपनी पत्नी से बोले – देवी! हम याग करते हैं। देवी ने कहा – चलो, भगवन! हम भयंकर वनों में याग करेंगे। वो भयंकर वनो में चले गए। कामधेनु गऊ उनके द्वारा थी। उसके घृत और दुग्ध के द्वारा याग करने लगे। वो वैज्ञानिक बनने लगे। क्योंकि याग करना, सुगन्ध करना है। उन परमाणुओं को एकत्रित करके उसमें जो मित्रशक्ति और वरूण शक्ति है उसका समन्वय करना है और समन्वय करके उन परमाणुओं से उन्होंने बेटा! यत्रों का निर्माण भी किया और उन यंत्रो का निर्माण करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, उसमें उन्हे अपने चित्र दृष्टिपात् आने लगे।

उन्होंने आगे और अनुसंधान किया तो मेरे प्यारे! उन्हें अपने दसवें महापिता के दर्शन होने लगे उन यंत्रों में। नाना प्रकार की, चित्रावलियों का वर्णन किया, मानो निर्माणित करने लगे। विचार आया बेटा! उन्होंने ओर अनुसंधान किया, गम्भीरता से अध्ययन करने के पश्चात् उन्हें बेटा! उन यंत्रो में पचासवें महापिता के दर्शन होने लगे। तो ये वायुमण्डल में जो स्थिर रहने वाला शब्द है। उन शब्दों को यंत्र में एकत्रित करने लगे। जो प्रतिक्रिया उनके जीवन की, उनके महापिताओं के जीवन की थी, संग्राम की थी, क्रोधाग्नि की थी। उसी प्रकार से मुनिवरो! देखो, दार्शनिक शब्दों में, वो वायुण्डल में ओत–प्रोत हो रहे थे। अब उन्हें बेटा! अपने महापिताओं के दर्शन होने लगे। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो अंतरिक्ष में मानो ओत–प्रोत होकर के वहीं श्याम ब्रह्मे, मानो ऊर्ध्वागति को नहीं जा पोत।

मेरे पुत्रो! विचार आता है कि उन्होंने अपने महापिताओं के दर्शन किए। केवल शब्द विज्ञान को जानकर। नेत्रों की ज्योति के विज्ञान को जानने से इस संसार की कोई चित्रावली ऐसी नहीं रहती जिसका चित्र वो अपने में आकर्षित नहीं कर सकता। इस ब्रह्माण्ड के सर्वत्रः दृष्टिपात करने वाले चित्र का वो चित्रण कर लेता है।

वाक् शक्ति का प्रभाव

तो विचार आता है कि ये इन्द्रियों का विषय है। इन विषयों में सर्वत्र विज्ञान समाहित हो रहा है। विचार विनिमय में क्या मानव की वाक् शक्ति है। महाराजा दिलीप मानो देखो, नन्दनी की सेवा कर रहे थे। कर्तव्य का पालन कर रहे थे और मुनिवरों! देखो, ऋषियों के वाक्यों को स्वीकार कर रहे थे, उसका परिणाम क्या हुआ कि मानो देखो, वाक् शक्ति इतनी विचित्र होती है। वाक् शक्ति के कारण मानो देखो, ये जो सिंहराज, हिंसक प्राणी, अपनी आभा को त्याग देते हैं। अपने में मानो वे भी अहिंसा परमो धर्म की घोषणा करने लगते है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। एक समय जब चाक्राणी गार्गी साम गान गाती थी। तो एक समय चाक्राणी गार्गी और मैत्रेयी दोनों एक स्थली पर विद्यमान होकर के बेटा! साम गान गाने लगी। जब सामगान गाने लगी तो बेटा! यह भयंकर वन है। मानो देखो, सुन्दरगति को प्राप्त होने वाला मानो देखो शम्ब्रहि है, वह भयंकर वन है। जब दोनों एक स्वर में गान गाने लगी। तो मेरे प्यारे! देखो, कौन सिंहराज, सर्पराज और भी नाना प्राणी मेरे प्यारे! देखो, शब्द की ध्वनि को श्रवण करने के लिए, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अब्रहाः मानो देखो, विदुषियों के द्वार पर आ गए और उन शब्दों को श्रवण करने के लिए, वो शब्द इतना तपा हुआ, इतना महान कहलाता है कि मेरे प्यारे! देखो, वो जो शब्दम् ब्रविः व्रताः वह जो शब्द है वो मेरे प्यारे! देखो, हिंसक प्राणियों को भी विदीर्ण कर रहा था। हिंसक प्राणियों को भी अहिंसा परमोधर्म की घोषणा करा रहा था पुत्रो।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय में क्या? इसीलिए वेद का ऋषि कहता है, जब वो साधना के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो कहता है ''ओउम् वाक् वाक्'' मेरी वाक् शक्ति पवित्र हो। मेरी कैसी वाक् शक्ति हो? कि मानो मेरे वाक् को श्रवण करने के लिए, मेरा शब्द इतना विचित्र होना चाहिए जिस शब्द को श्रवण करने के लिए मेरे प्यारे! देखो, सर्पराज, जितना भी हिंसक प्राणी है वे सब अहिंसा परमोधर्म की घोषणा करने लगे।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेषता में क्या उच्चारण कर रहा हूँ कि वेद का 'वाक्यं ब्रह्मे' वेद का ऋषि कहता है कि मेरी वाक् शक्ति पवित्र हो और कैसी वाक् शक्ति हो कि मानो देखो, मेरी वाक् शक्ति से मुनिवरो! देखो, प्रत्येक प्राणी मात्र मन्त्रणा करने लगे जिससे उसके अन्तरात्मा में, हृदय में, विराजमान होने वाली आत्मा का लोक है उस लोक में विराजमान होने वाली जो पवित्रतम आत्मा है, उस आत्मतत्व की आभा में मानव रमण करता रहता है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय में क्या? हमारे यहाँ ऐसे ऐसे ब्रह्मवेता ऋषि हुए है। ऐसी महान मेरी पुत्रियाँ, मेरी माताएँ विदुषी है। जिनके चरणों में मुनिवरो! देखो, सर्पराज ओत–प्रोत होकर के मानो उनकी गाथाएँ गाते रहे है।

साधक की आकांक्षा

तो विचार विनिमय में क्या? मुनिवरो! देखो, साधक सबसे प्रथम कहता है कि मैं आत्मलोक में जाने से पूर्व मानो देखो, मैं शब्द के मार्ग को जानना चाहता हूँ। मैं शब्द की शक्ति को जानना चाहता हूँ। जो ये कहता है प्रथम ही वाक् वाक् कहता है और वाक् वाक् कहकर ही मानो.......। जो रजोगुणी है, तपोगुणी हैं, सतोगुणी है, उनको जानने के लिए मेरे प्यारे! देखो ये मानव का अन्तर्हृदय जान लेता है। कितनी दूरी पर कौन सा खनिज है? वो कितनी उष्णता में है? कितना शीतल है? मेरे प्यारे! देखो, कितना वो प्रेरणादायक है।

तो उनको मुनिवरो! देखो, पृथ्वी का जितना गर्भ विज्ञान है। पृथ्वी में जितना भी विज्ञान गति कर रहा है। भूविज्ञान जितना भी है वह मेरे प्यारे! देखो, प्राण के द्वारा मानो देखो, उसके सुगन्ध में उसकी ध्राण इन्द्रियों में वह समाहित होता रहता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। श्रृंगी ऋषि महाराज इतने विज्ञान में रत रहते थे कि वो पृथ्वी के ऊपर ही देखो, वायुमण्डल में जो तरंगे गति करती रहती थी उसको जानते रहते थे और जानने के पश्चात् उसको बाह्यजगत् में लाते रहते थे। तो परिणाम क्या? मुनिवरो! देखो, यह जो प्राण शक्ति है उसके ऊपर हमारा अधिपत्य होना चाहिए। बेटा! इसमें जो देवता विद्यमान है, एक कश्यय विद्यमान है एक मानो, मित्राणेस्ति विद्यमान है, एक चन्द्रस्वर कहलाता है। एक सूर्यस्वर कहलाता है। मेरे प्यारे! एक में शीतल गति हो रही है, एक में मानो ऊष्ण गति हो रही है, इन दोनों गतियों को जानने वाला मानो देखो, बेटा! वो महान बना रहता है, वो महान कहलाता है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है इसी प्राण के द्वारा चिकित्सा भी होती है। मैंने बहुत पुरातनकाल में एक ऋषि को दृष्टिपात् किया। उन ऋषि का नामोकरण मुनिवरो! देखो, उनका नाम था उद्वेतक ऋषि महराज। उद्वेतक ऋषिमहारज वो भी उद्दालक गोत्रिय कहलाते थे। उद्वेतक ऋषि महाराज भयंकर वन में चन्द्र स्वर पर और मुनिवरो! देखो, सूर्य स्वर पर देखो अनुसंधान कर रहे थे। तो उन्होंने कहा कि मानव के शरीर में जो यौवन होता है वह प्राण से होता है जब वो प्राण चला जाता है मानो प्राण की शक्ति सूक्ष्म हो जाती है मनिराम मानो नृत्य करता रहता है, तो इसीलिए ऋषि ने कहा कि जब प्राण शक्ति चली जाती है............।

४ माता मल्दालसा की तपस्विता 11—04—1988

जीते रहो

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद–वाणी में परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। कोई स्थली ऐसी नही है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। समुद्रों की कोई तरंग ऐसी नहीं, पर्वतों की कोई गुपफा ऐसी नहीं है जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। वे सर्वज्ञ है। मानो वे अनन्तमयी है और जितना भी ज्ञान और विज्ञान है उस सर्वत्र व्रते वृहं ब्रहाः उस विज्ञान की प्रतिभा में वे सदैव निहित रहते है।

परमात्मा की अनुपमता

आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा, वेद का मन्त्र क्या कह रहा है? हमारे यहाँ नाना प्रकार के विचारवेत्ता हुए है और विज्ञानवेत्ता भी हुए है। परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नही हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान को और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके वे सीमा से रहित हैं वह सीमा में आने वाले नहीं है। मानो देखो, जितना भी विज्ञान हमें दृष्टिपात आता है उसमें परमपिता परमात्मा की अनुपमता है।

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। आज मै तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। आज का हमारा वेद मन्त्र कई समय से बेटा! एक वार्ता उद्गीत गा रहा है। वेद मंत्र कहता है मृत्युंजयं ब्रह्मा प्रणास्वस्तः प्रह्मा लोका वेदमन्त्र कहता है कि मानव जिस भी काल में अपनी स्थली पर विद्यमान हुआ है और इसका संसार में आने का जो उद्देश्य है उसके ऊपर मानो विचारता रहता है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान के काल तक नाना प्रकार की विचार धारायें मानव के समीप आती रही हैं और ये विचारता रहा है कि ये संसार क्या? इस संसार में हमारे आने का उद्देश्य क्या है?

मृत्यु की जिज्ञासा

तो मुनिवरो! देखो, वेदमन्त्र ये कहता है। क्या? कि हे मानव! तू मृत्यु से विजय होने के लिए मानो प्रत्येक मानव ये विचारता रहता है कि तेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिये, प्रत्येक मानव के हृदय में ये आकांक्षा लगी रहती है। क्या? कि ये मृत्यु ही हमारा मानो एक वृत्तियों में नृत होता रहा है। बेटा! देखो, कई समय से ये विचार चल रहा है। परन्तु आज का वेदमन्त्र भी यही कहता है कि ये मृत्यु क्या है? मेरे प्यारे! प्रत्येक मानव, प्रत्येक मेरी पुत्रियाँ ममतामयी यह विचारती रहती है कि मै मृत्यु को जानना चाहती हूँ।

माता की व्याकुलता

मेरे प्यारे! एक माता का पुत्र, मुनिवरो! देखो, उसका आत्मा चला गया एक समय वह व्याकुल हो रही थी। जब माता व्याकुल हो रही थी, तो एक दार्शनिक उनके समीप पहुँचा। दार्शनिक ने कहा हे माता! तू व्याकुल क्यों हो रही है? तो माता कहती है कि मेरा पुत्र नहीं रहा, इसलिये मै व्याकुल हो रही हूँ।

मेरे प्यारे ! देखो, जब ये वाक्य उन्होंने कहा – तो उस समय दार्शनिक कहता है कि हे मातेश्वरी! क्या ये आत्मा तेरा पुत्र है या ये शरीर तेरा पुत्र है? तो माता निरूत्तर हो गई। क्योंकि यदि शरीर को वह पुत्र कहती है तो मुनिवरो! वह शव के रूप में विद्यमान है और यदि वह ये कहती है मेरा मानो देखो, वह आत्मा मेरा पुत्र है तो आत्मा का निधन नही होता। आत्मा सदैव मानो प्रकाश में बनी रहती है और प्रकाश का एक द्यौतक बनी रहती है।

इसीलिये मुनिवरो। देखो, वेद का ऋषि कहता है कि आत्मा का निधन नहीं होता, आत्मा तो एक रस रहने वाली चेतना है। जिस का मानो सारस्वत् ये विचार रहता है कि ज्ञान और प्रयत्न उसका मौलिक गुण कहा जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का वेदमन्त्र, जहाँ ये कह रहा है वहाँ मुनिवरो! देखो आत्मवेत्ता अपने में आत्मवादी बनने के लिए सदैव कल्पना करता रहता है, विचारता रहता है और अनुपमता के क्षेत्र में रमण करने के लिए तत्पर हो जाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें इस क्षेत्र में तो विशेष नही ले जाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! यहाँ नाना प्रकार के अनुष्ठान होते रहे है। जितना भी मानो नाना प्रकार के अनुष्ठान करता रहता है। त्याग और तपस्या में परिणत होता रहता है, तो मेरे प्यारे! देखो, उस आभा में जब लगा रहता है तो विचारता रहता है सम्भूः ब्रह्मणं ब्रह्मे वाचन्नमं व्रहि व्रतो देवाः मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में विचारता है चिन्तन और मनन करता हुआ अपनी आभा में सदैव निहित रहता हैं।

जीवन का उद्देश्य

तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या? हम अपने में ये विचारते रहे है, क्या, हमारा जीवन जितना भी है, संसार के जितने भी क्रिया–कलाप है चाहे कोई चन्द्रयात्री बन जाता है, मंगल यात्री बन जाता है, मानो नाना प्रकार के लोक–लोकान्तरों में जाना है और नाना प्रकार के अनुष्ठानों में लगा रहता है तो उसके जीवन में मानो उसके चिन्तन करने के गर्भ में एक ही वाक्य रहता है कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिये। तो बेटा! मृत्युंजयी बनने के लिये मानो परम्परागतों से ही अपना अनुसंधान करता रहा है, विचारता रहा है।

माता मल्दालसा का जीवन

तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हें एक क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है मैने कई कालों में ये चर्चायें की हैं। मुनिवरो! देखो, माता मल्दालसा का जीवन बड़ा विचित्र रहा है। माता मल्दालसा बाल्य काल में जब विद्यालय में बेटा! देखो, वह अध्ययन करती थी तो महर्षि सुनीति मुनि महाराज के आश्रम में अध्ययन करती रहती थी। तो मेरे प्यारे! वे एक समय आचार्यो के चरणों में प्रातः काल पहुंची और कहा कि हे प्रभुः! मैं नोदामयी वेदमन्त्रों का अध्ययन करती रहती हूँ। ज्ञान और विज्ञान में आत्मा के लिए भी सदैव चिन्तन, मनन करती रहती हूँ। हे प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि मैं गृह में प्रवेश नहीं करूंगी मैं मानो देखो, पर्जन्य ब्रह्मवर्चो ब्रह्मा देवत् प्रह्मा मै ब्रह्म की उपासना करने के लिए, ब्रह्मवर्चोसि बनना चाहती हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि बड़े उदार होते है। ऋषि ने कहा कि पुत्री! जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसा ही करो।

मेरे प्यारे! कुछ समय के पश्चात् जब वे युवा होने लगी मानो देखो, प्रबलता में परिणत हो गई तो एक समय वेदों का अध्ययन कर रही थी। वहाँ पुत्र याग का वर्णन आ रहा था। हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! विभिन्न–विभिन्न प्रकार के यागों का वर्णन होता रहता है। जैसे हमारे यहाँ वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, रूद्र याग है, विष्णुयाग है, ब्रह्मयाग है, और भी जैसे कन्या याग का वर्णन आता है अजामेघ याग है, अश्वमेघ याग है। विभिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। परन्तु एक याग हमारे यहाँ पुत्रयाग भी कहा जाता है।

पुत्र याग

तो माता मल्दालसा ने जब मानो पुत्र याग के सम्बन्ध में उन्होंने अध्ययन तो बेटा! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है जब वे आचार्य के कुल में पहुँची तो उस समय उन्होंने कहा–हे प्रभु, हे देवत्व, आचार्य जन! मेरी इच्छा है, मैं गृह में प्रवेश तो करना चाहती हूँ किन्तु मेरा यह संकल्प है कि पाँच वर्ष की आयु तक ब्रह्मचारी को, उस बालक को मेरी शिक्षा होनी चाहिये, उसमें किसी प्रकार का कोई नृत नहीं होना चाहिये। उन्होंने कहा–दिव्या! जैसी तुम्हारी इच्छा हो।

मनुवंश

मेरे प्यारे! जब वे शिक्षा में पूर्णता को प्राप्त हो गई तो एक समय बेटा! देखो, महाराजा मनु वंश में ये मनुवंश का राष्ट्र इस पृथ्वी पर बहुत समय तक रहा। हमारे यहाँ ये माना गया है हमारे साहित्य में क्या? ये जो अयोध्या का निर्माण हुआ था। सबसे प्रथम इस अयोध्या का निर्माण भगवान् मनु ने किया था। इक्ष्वा मनु ने किया था। मेरे प्यारे! देखो, और भी नाना मनु हैं। परन्तु देखो, उन मनुओं ने अपना–अपना कर्तव्य किया।

ऋणिकेतु मनु महाराज

तो मेरे प्यारे! देखो, एक समय मनु वंश से उत्पन्न होने वाले ऋणीता मनु देखो, ऋणिकेतु मनु महाराज एक समय बेटा! भ्रमण कर रहे थे उनके पिता संन्यास को प्राप्त हो गये। हमारे यहाँ यह नियम बनी, जब राष्ट्रीय प्रणाली का निर्माण हुआ तो राष्ट्रीय प्रणाली में ये नियम बना, क्या? देखो, जब पुत्र हो जाये और पुत्र युवा होने लगे तो उस समय राष्ट्र को, पुत्र को देकर के संन्यासी हो जाए और उस समय महात्मा और ऋषि, तपस्वी बन जाए।

तो मानो देखो, मनुवंश में, राष्ट्र में ऐसा ही होता रहा है भगवान मनु ने इस प्रणाली का प्रायः निर्माण किया। तो मुनिवरो! देखो, दृष्टं ब्रह्मे जब उनके पिता चले गये, तो युवा राजा रह गये। तो एक समय मनु वंश के राजा भ्रमण करते हुए। देखो, ऋषि आश्रम में पहुँचे। उन्होंने मल्दालसा का दर्शन किया और मल्दालसा का दर्शन करते हुए उनके हृदय में एक आवृत्त ये दृढ़ निश्चय हो गया कि मेरा संस्कार इससे होना चाहिये। ये मानो देखो, मनु वंश में सुशोभनीय रहेगी।

मेरे प्यारे! उन्होंने ऋषि से प्रार्थना की – हे पनपेतु सम्ब्रवेति ऋषिवर! मेरी ये इच्छा है, कि आपके यहाँ जो कन्या अध्ययन करती है मानो देखो, ये जो मल्दालसा है इसका संस्कार होना चाहिये। ऋषि ने कहा तुम कन्या से ;स्वीकृतिद्ध प्राप्त करो। ऋषि ने जब ये कहा तो राजा ने मल्दालसा से कहा – हे दिव्ये! मेरी इच्छा ऐसी है कि मनु वंश में तुम्हारा जीवन व्यतीत होना चाहिये। उन्होंने कहा हे भगवन्! मेरी तो बहुत–सी प्रतिज्ञायें है और उन प्रतिज्ञाओं में बद्ध रहती हूँ या मानो देखो, ये मैं तब स्वीकार कर सकती हूँ जब मेरी जो प्रतिज्ञायें है वह पूर्ण हो।

माता की प्रतिज्ञा

उन्होंने कहा–हे देवत्वं प्रह्मा, हे दिव्या! तुम्हारी इच्छा क्या है? उन्होंने कहा मेरा यह संकल्प बन गया है कि पाँच वर्ष तक ब्रह्मचारी को मेरी शिक्षा होनी चाहिये। बाल्य को जब पाँच वर्ष की शिक्षा मेरी होगी। मानो उसके पश्चात् इन वाक्यों को स्वीकार कर सकती हूँ। राजा ने वो सब स्वीकार कर लिया। अन्त में ;मल्दालसाद्ध यही कहा–जिस समय मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर दिया जायेगा या बाधक बनेगा तो उसके बारह वर्ष के पश्चात् मैं अपने शरीर को संकल्प के द्वारा त्यागने के लिए तत्पर हो जाऊंगी। राजा ने बेटा! स्वीकार कर लिया।

माता मल्दालसा का संस्कार

मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या? मुनिवरो! देखो राजा ने ऋषि से प्रार्थना की। उन्होंने दोनों का संस्कार किया। जब संस्कार हो गया तो माता मल्दालसा और राजा दोनों का बेटा! अयोध्या में वास हुआ। जब अयोध्या में वास हो गया तो मानो देखो, राष्ट्र की प्रजा में बड़ा एक आनन्द चर्चायें, अप्रतम् आनन्द की तरंगें मानो ओत–प्रोत होने लगी।

गर्भस्थ शिशु से वार्ता

मेरे पुत्रो! ऐसा स्मरण आ रहा है कि देखो, माता मल्दालसा सदैव अपने प्रभु का चिन्तन करती हुई मुनिवरो! देखो, कुछ समय के पश्चात् माता मल्दालसा के गर्भ में एक आत्मा का प्रवेश हुआ, जब आत्मा का प्रवेश हुआ तो मुनिवरो! देखो, माता मल्दालसा प्राण, अपान को जैसे आज के वैदिक पठन–पाठन में प्राण विद्या का वर्णन आ रहा था। हमारे यहाँ प्रायः मातायें इस विद्या को जानती थी, वे समाधिष्ठ हो करके अपनी अन्तरात्मा, अपने अन्तर्हृदय में प्रवेश हो गई। मानो देखो, उससे ;गर्भस्थ शिशुद्ध वार्ता प्रकट करती रहती। मेरे प्यारे! कैसे प्रकट की जाती हैं? ये बड़ा विचित्र एक विषय कहलाया गया है। हमारे यहाँ माता मल्दालसा क्या, वैदिकता में इसका वर्णन आता हैं।

मन और प्राण की एकाग्रता

मुनिवरो! देखो, जब माता प्रातः कालीन और रात्रि के अन्तिम चरण में गायत्राणी छन्दों का पठन–पाठन करती हुई और प्राण को मन से और मानो देखो, मन और प्राण को एकाग्र करती हुई दोनों का समन्वय जब हो जाता है और अपान की पुट लग जाती है तो मानो देखो, ये मातायें समाधिष्ठ हो करके अपनी अन्तरात्मा में जो शरीर में गर्भाशय में एक निर्माणवेत्ता जो निर्माण कर रहा है प्रभु देखो उसे अन्तरात्मा से वार्ता प्रकट करती और ये कहती है कि हे बाल्य। तू शुभजं बह्मा वेद का अध्ययन करती हुई मानो ज्ञान और विज्ञान में रत होती हुई उस बाल्य से वार्ता प्रकट की जाती हैं।

ब्रह्मज्ञान में संस्कार

तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मज्ञान में जो माता संस्कार देती है वही बाल्य मानो देखो, ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रो! मुझे बहुत सी विद्यायें स्मरण आती रहती है। आज मैं उन विद्याओं के क्षेत्र में तो तुम्हे ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये।

मुनिवरो! देखो, माता का जब चन्द्रं ब्रह्मे वासवां ब्रहे एक समय माता मल्दालसा के गर्भ में जब आत्मा था तो मुनिवरो! देखो एक समय स्वाति मुनि उनके द्वार पर पहुँचे। तो स्वाति मुनि बोले–जिस विद्या का तुमने विद्यालय में अध्ययन किया था। मानो देखो, क्रियात्मक अपने जीवन को बनाने का, उसमें तुम्हारा क्या नृत हो रहा है? तो उस समय माता मल्दालसा ने कहा – कि हे भगवन, हे पूज्यपाद! मै उस विद्या का अनुसरण कर रही हूँ। मानो देखो, मै आत्मा से ;गर्भस्थद्ध वार्ता प्रकट कर लेती हूँ। तो ऋषि ने कहा –कितने देवता तुम्हारे शिशु की रक्षा करते है तुम्हारे गर्भ स्थल में। क्योंकि तुम्हें तो प्रतीत नहीं है कौन रक्षा कर रहा है मैं जानना चाहता हूँ?

तो बेटा! माता मल्दालसा ने कहा – चन्द्रमा तो अमृत दे रहा है और देखो, सूर्य प्रकाश दे रहा है और देखो, ये आपोमयी ज्योति बनकर के प्राणं ब्रहे अस्सुतं अवृति ब्रह्मा देखो, गुरुत्व स्थूलं ब्रह्मे पृथ्वी गुरुत्व दे रही है और यह आपोमयी ज्योति, यह जल है जो ये तरलत्व दे रहा हैं वायु प्राण दे रहा है अग्नि उष्णता दे रही है और अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है मानो देखो, मेरा बाल्य, मेरा शिशु मेरे गर्भ में पनप रहा है। मेरे पुत्रो। देखो, जब इस विद्या का उन्होंने अवधान किया तो ऋषि ने कहा – धन्य है।

तीन शब्दों का उदघोष

तो मुनिवरो! देखो, कुछ समय के पश्चात् माता मल्दालसा के गर्भ में बाल्य का जब जन्म हुआ तो माता देखो उसको ओ३म् ब्रह्म वेदों का अध्ययन कराती हुई देखो, वह ब्रह्मं ब्रहे अपने मुखारबिन्दु से वेदों का उदगीत गा रही है और बाल्य से उदगीत गाकर कहती हैं सम्भवं ब्रहे।

हे बाल्य! तू इस संसार में कैसे आया हैं? तू बुद्ध है, शुद्ध हैं, निरंजन हैं मानो देखो, इन तीन वाक्यों की विवेचना करने लगी। उन्होंने कहा – ये आत्मा तो शुद्ध हैं मानो देखो, तू सदैव सारस्वत् रहने वाली है। इस संसार में तेरी मृत्यु भी नहीं होती, तू ज्ञानी है, अज्ञानी भी नहीं है तो बेटा! इन शब्दों का उद्घोष करती रहती बुद्धोसि शुद्धोसि, निरंजनोसि इन वाक्यों का प्रतिपादन होता रहा। तो मेरे प्यारे! मातं ब्रह्मे देखो, बाल्य प्रसन्न युक्त होता रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, पाँच वर्ष का बाल्य ब्रह्मवेत्ता बन गया। जब ब्रह्म की विद्या उन्होंने प्रदान की तो बेटा! वह ब्रह्मवेत्ता बन गया। और ब्रह्मवेत्ता बनकर पाँच वर्ष की आयु में कहता है कि हे माता! अब मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं तप करने जा रहा हूँ। क्योंकि मानव जब ज्ञानी हो जाता है, तब ज्ञान के पश्चात् तप की आवश्यकता होती है और जब वह इन्द्रियों से तप कर लेता है तो प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। वे मानव देखो, आत्मवान् बन जाता है। हे माता! मुझे आज्ञा दीजिये।

मेरे प्यारे! माता बड़ी प्रसन्न हुई। माता मल्दालसा ने कहा कि – हे बाल्य ये तो मेरा सौभाग्य है। मेरी अन्तरात्मा में, मैं सदैव चाहती हूँ कि मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य इस संसार के रजोगुण, तमोगुण में मानो परिणत न हो जाये। वे सत्यवादी बन करके, सत्य से भी उपरामता को प्राप्त हो करके परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में और वह आत्मवान् बन जाये। मेरे पुत्रो! देखो, जब माता ने आज्ञा दी, कहा – जाओ, हे बाल्य! तुम तपस्या के लिये चले जाओ। मेरे प्यारे! वह तप करने के लिये चला गया।

माता मल्दलसा का द्वितीय पुत्र

मेरे पुत्रो! कुछ समय के पश्चात् माता के गर्भ में द्वितीय आत्मा का प्रवेश हुआ। आत्मं ब्रह्मे लोकाम् आत्मवान बनाने के लिये मानो बडी प्रबलता रहती है। तो बेटा! देखो, कुछ समय पश्चात् उसे भी यही उपदेश देती रहती शुद्धो, बुद्धो ब्रह्मणं ब्रहे कृतं लोकाम् हे बाल्य! तू महान बन। मेरे पुत्रो। देखो जब वह संसार में आया तो माता उसे लोरियाँ देती रहती और ये कहती रहती – हे आत्मा। तू शुद्ध है। हे आत्मा! तू बुद्ध है। तू सदैव–सदैव रहने वाली है। हे आत्मा। तेरा ह्रास नहीं होता। मेरे पुत्रो। देखो, माता इस प्रकार का उपदेश देती रही हैं।

तो मेरे पुत्रो! वह बाल्य भी पाँच वर्ष की आयु में बोला –हे माता। मुझे आज्ञा दो, मैं तप करने के लिये जा रहा हूँ। माता मल्दालसा ने कहा हे पुत्र! तुम तप करने के लिये क्यों जा रहे हो? उन्होंने कहा माता! ये तो आपकी आज्ञा है। जब मानव को ब्रह्मज्ञान हो जाता है और ये ज्ञान लेता है कि यह परमात्मा क्या है? प्रकृति क्या है? यह संसार क्या है? रजोगुण, तमोगुण क्या है? जब इस प्रकार की जानकारी हो जाती है तो इसको क्रिया में लाने के लिये तप करने की आवश्यकता होती है। इसलिये मैं तप कर रहा हूँ। क्योंकि जब तक इन्द्रियों को एकाग्र करते हुए मानो मनस्तव प्राण को एक सूत्र में पिरोया नहीं जाता तब तक मानो देखो, वह तपस्या पूर्ण नही होती। प्रत्येक इन्द्रियों का शाकल्य बनाना, और शाकल्य बना करके उसके ऊपर हमे याग करना है। यागां ब्रह्मणं ब्रहे वे आत्मवेत्ता, आत्मवान् बनने के लिये, इस प्रकार की हम सदैव इच्छा प्रकट करते रहते है।

जब बाल्य ने ये कहा – तो माता बड़ी हर्षित हुई और माता ने कहा – ये तो मेरा बड़ा सौभाग्य जागरूक हो गया है। मानो देखो, मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाले बाल्य यदि ब्रह्मचारी हो करके ब्रह्म का चिन्तन करके ब्रह्मवेत्ता हो जाये तो ये माता का बड़ा सौभाग्य रहता है। वे माता ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाती है। मानो देखो, एक राजा से सौ ज्ञानी राजा हो तो मानो देखो, उससे एक सहस्र राजाओं का जन्म हो, और एक सहस्र, राजाओं के ऊपर एक ब्रह्मवेत्ता ही बन जाये तो देखो, यह माता का सौभाग्य है। मेरे पुत्रो! देखो, जब माता के हृदय में ये विचार आने लगे। तो बाल्य आज्ञा पाकर के तप करने चला गया। माता की आज्ञा हो गई।

इसी तरह जब तीन पुत्र ब्रह्मवेत्ता बन गये तो मुनिवरो। देखो मनुवंश के जो राजा थे, उनके हृदय में यह आशंका हो गई कि यह राज्य कैसे चलेगा? देखो, जब ये सब पुत्र संन्यासी, ऋषि और ब्रह्मवेत्ता बन जाएंगे। तो इस राष्ट्र की पालना कौन करेगा?

असंस्कारी पुत्र

तो मेरे पुत्रो! देखो, जब चतुर्थ आत्मा का प्रवेश हुआ गर्भ में तो उस समय राजा ने देवी से प्रार्थना की – हे दिव्या! देखो, यह राष्ट्र कैसे चलेगा? इस राष्ट्र का कौन दायित्व बनेगा। तुम ये क्या कर रही हो। ये सब बाल्य संन्यास और महात्मा, ब्रह्मवेत्ता बनकर के सब तप करने चले गये। तो उन्होंने कहा – हे राजन! आपने मेरी प्रतिज्ञा को नष्ट कर दिया। मेरी जो प्रतिज्ञा थी वह यह थी कि मैं अपने पुत्रो को गर्भ से जन्म लेने वालों को इस संसार के वैभव में परिणत नहीं करना चाहती। मानो देखो, आपकी आज्ञा हुई हैं। आपने जो कहा है, मेरी प्रतिज्ञा नष्ट कर दी है। चलो अब राजा होगा। माता ने तब कोई संस्कार नहीं दिया। मानो देखो, वह राष्ट्र के विचारों में पनपता रहा देखो, राष्ट्र के आरोह को प्रदान करती रही। उस माता के गर्भ से जब ;शिशुद्ध ने जन्म लिया तो उसे कोई संस्कार नही दिया, वे केवल राष्ट्र की चर्चा श्रवण करता रहा। तो मेरे प्यारे! देखो, मम ब्रह्मे अब माता मल्दालसा ने कहा हे राजन! आपकी इच्छा मानो पूर्ण हो गई है, आपने मेरी प्रतिज्ञा को नष्ट कर दिया। अब मैं, जब ये बाल्य बारह वर्ष का ब्रह्मचारी हो जायेगा तो हे राजन! मैं अपने शरीर को संकल्प से त्याग दूँगी। बेटा! देखो, राजा को बड़ी चिन्ता हुई राजा ने कहा ये देवी तो बडी अद्भुत है।

माता मल्दालसा द्वारा शरीर त्याग

मुनिवरो! देखो जब बारह साल का ब्रह्मचारी हुआ तो उस समय एक आसन पर राजा है और एक आसन पर मानो वह ब्रह्मचारी हैं। मेरे प्यारे! उस समय राजा ने कहा सम्भवं प्रहे वाचन्नमं ब्रह्मः वायुः सम्भवे लोकानं वाचानं द्वितीय देवाः ऐसा वाक्य वर्णन करके माता मल्दालसा ने कहा – हे राजन! अब मैं अपने शरीर को त्याग रही हूँ। तो माता मल्दालसा ने अपनी वसीयत, अपनी लेखनी बद्ध करके आल्य के कण्ठ में नियुक्त कर दी और कहा –हे बाल्य! जब कोई विशेष आपत्ति हो। उस काल में मेरे इन वचनों को मानो देखो, कण्ठ से निकालकर अपने नेत्रों के सम्मुख करके अपने में स्मरण कर लेना। मेरे प्यारे! ये उच्चारण करके उन्होंने कहा हे – राजन! अब मैं जा रही हूँ इस संसार से, अपने राष्ट्र को पवित्र बनाना और महान बनाना।

मेरे प्यारे! माता मल्दालसा ने गायत्री, छन्दों का पठन–पाठन किया और प्राणायाम करके मुनिवरो! देखो, इस शरीर को त्याग दिया। शरीर के त्यागने के पश्चात सम्भव ब्रह्मे वास्राहे मेरे पुत्रो! देखो, जब शरीर को त्याग दिया तो वह राष्ट्र बडा कष्ट में हुआ, राजा को दुखद हुआ। परन्तु देखो, उसका दाह संस्कार हो गया। मेरे प्यारे! राजा भी कुछ समय संन्यास को ऋषितव को प्राप्त हो गया।

मेरे प्यारे! देखो ;उसके पश्चातद्ध वह राजा ;माता मल्दालसा का चतुर्थ पुत्रद्ध बहुत समय तक राष्ट्र का भोग करता रहा। पुत्र हो गये, पौत्र हो गये परन्तु उसने राष्ट्र को नही त्यागा। राष्ट्र में त्राहि–त्राहि हो गई। ये मानो राजा कैसा है जो राष्ट्र को नही त्याग रहा है।

मेरे प्यारे! वे तीनो जो महापुरूष थे, माता ने जिनको ब्रह्मवेत्ता बनाया, वे राजा के समीप आये और राजा से कहा–हे राजन! हमारे यहाँ मानो देखो, एक नियमावली बनी थी। क्या? संन्यास को तुम्हें प्राप्त होना था, तुम इस राष्ट्र को त्यागो, इस द्रव्य से क्यों इतना मोह कर रहे हो? राजा ने कहा– मेरी इच्छा नही। मेरे प्यारे! उन्होंने ;ब्रह्मवेत्ताओंद्ध कहा – सम्ब्रहे मुनिवरो! देखो, जब ऋषियों का अपमान कर दिया तो उस समय तीनों ऋषियों ने जाकर के द्वितीय राष्ट्र में पहुँचे और राजा से ये प्रार्थना की कि भगवन्! ये जो मनु वंश का राजा है इस पर आक्रमण करो, उसको कारागार में नियुक्त करो।

माता की वसीयत

मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय राजा ने आक्रमण किया, आक्रमण करके बेटा! उस राजा को कारागार में स्थित कर दिया। जब वह कारागार में पहुँचा तो मानो देखो, उसे मृत्यु दृष्टिपात आने लगी। तो वह जो माता की वसीयत थी, वह उसे अपने नेत्रों के सम्मुख लाये तो उसमें एक ही सत्ता थी कि हे पुत्र! यह संसार निस्सार है इसमें कोई सार नही है ये संसार तो परम्परागतों से ही ऐसा ही चल रहा है।

मेरे पुत्रो! देखो, राजा को माता के शब्दों को स्मरण करते ही मानो ज्ञान हो गया और विवेक हो गया। उन्होंने कारागार के अपने सेवकों से कहा – जाओ, देखो, राजा को लाओ और महापुरूषों को लाओ मैं भी संन्यास को प्राप्त हो रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो, राजा आये! राजा ने अमृतम् संन्यासी, महापुरुष आए और उन्होंने कहा 'सम्भवं ब्रहे' हम तो चाहते ही ये थे राजन!

तो मेरे प्यारे! देखो, अपने पुत्र को राज्य दे करके वे राजा भी संन्यास को प्राप्त हो गये। तो परिणाम क्या है मुनिवरो! देखो, आज हमारे विचारों का देखो, माता अपने में कितनी महान और पवित्र होती रही है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल ये क्या, ये जो संसार है यह प्रायः परम्परागतों से इसी तरह चल रहा है ये गतिवान होता रहता है। परन्तु इसमें मोह होते रहते है और भी नाना प्रकार की विडम्बनायें होती रहती है। परन्तु माताओं का बड़ा सहयोग रहा इस संसार में। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ वे राजा बन गये परन्तु देखो, मां अमृत ब्रह्मः वायु सम्भवाः मेरे पुत्रो! वे तीनो जो महापुरूष थे, वे ब्रह्मवेत्ता थे उनका नाम बेटा! एक का नाम था प्रवाहण, एक का नाम शिलक और मुनिवरो! देखो, दालभ्य। ये पाँच पुत्र माता मल्दालसा के थे जो ब्रह्मनिष्ट, ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मवर्चोसि ब्रह्म की चरी को अपने में चरने वाले थे।

ज्ञान और विवेक

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता भी नही हूँ केवल तुम्हें ये परिचय देने के लिये आया हूँ कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मेरे पुत्रो! देखो, इस संसार में मृत्यु से पार हो जाए क्योंकि मृत्यु से पार होने का अभिप्राय यही है कि ज्ञान होना और ज्ञान और विवेक के साथ में मानो जो अपने जीवन को व्यतीत करता है बेटा! वह विवेकी बनकर के इस संसार सागर से पार हो जाता हैं।

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जान करके ओर मुनिवरों। देखो इस सागर से पार होने का प्रयास करें मानो देखो, आत्मवान बने, आत्मवेता बन इस संसार सागर से पार हो जाये बेटा! ये माता मल्दालसा ने कहा था अपने पुत्रो से। उन दोनों का विचार विनिमय भी होता रहता समय–समय पर। बेटा! ज्ञान और विज्ञान की चर्चाये भी होती रहती।

मृत्यु स्वरूप

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुण–गान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाये और मृत्युंजयी बन जाये। क्योंकि मृत्यु किसे कहते हैं? आचार्य और माता मल्दालसा ने ये कहा था कि अज्ञान का नाम मृत्यु है और ज्ञान का नाम ही मानो जीवन माना जाता है। इसीलिये अज्ञान को त्यागना, अंधकार को त्यागना, प्रकाश में आ जाना मुनिवरो! देखो मृत्युंजयी बनना है।

आज का विचार बेटा! समाप्त होने जा रहा है। मैं कोई विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नही आया हूँ। विचार केवल ये कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानते हुए मानो उसके एक–एक विज्ञानमयी अपने जीवन को बनाकर विज्ञानवेत्ता सर्वस्वीकार करते हुए इस संसार से पार हो जाये।

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या –कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जान करके इस संसार सागर से पार हो जाये। ये है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चा कल प्रकट करूँगा। आज के वेद के पठन–पाठन में विष्णु की विवेचना, क्या, विष्णु कौन है? बेटा! देखो, परमपिता परमात्मा का नामोकरण विष्णु और माता को भी विष्णु कहा गया है ये चर्चाये हम कल प्रकट करेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन–पाठन **ओ३म् ब्रह्म गणाः वायुः रथं मानाः वायाः ओ३म् तनु गन्धर्वाः वाचन् गृहीता मनुः आभाः।। ओ३म् शंजना रथं आपाः।**दिनांक–**11–04–1988 दिनकरपुर**

५ विष्णु स्वरूप एवं ऋषियों द्वारा द्यौ गामी चित्रा दर्शन 12–04–1988

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद–मंत्रों का गुण–गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया। आज के हमारे वेद मन्त्रों में, उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनन्तता का वर्णन किया जा रहा। आज के हमारे पठन पाठन में, मानो उस विष्णु की याजना रही थी जो विष्णु हमारा कल्याण करने वाला है। परन्तु हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में एक–एक शब्द के नाना पर्यायवाची माने गये है। जैसे विष्णु नाम है विष्णु कहते है परमपिता परमात्मा को। जो पालन करने वाला है पालना कर रहा है। मानो वह सत्त्वमयी कहलाता है। तो वह परमपिता परमात्मा विष्णु है। क्योंकि जितना भी पालना का प्रसंग है वह सत्वमयी में निहित रहता है इसलिये इसका पर्याचवायी शब्द बन जाता हैं। क्योंकि जितने भी पालना करने वाले है उन सर्वत्र का नाम विष्णु वाची जाता है।

पालक विष्णु

जैसे हमारे यहाँ विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है वह पालना कर रहा है। क्योंकि इस संसार का जो नियमन हो रहा है अथवा जो निर्माण हो रहा है। निर्माण का भी नियमन है वह नियम में गति कर रहा है तो वह उसकी पालना का द्योतक है। इससे हमें सिद्ध होता है कि वह पालना करने वाला है। क्योंकि संसार की रचना–रचना में उसका जो नियम बद्ध, रचना है वह बड़ी अनुपम है। तो इसलिए उस परम पिता परमात्मा को पालक कहा गया है।

मेरे प्यारे! हमारे यहाँ दार्शनिक सूत्रों में कुछ ऐसा माना गया है कि ये जो विष्णु शब्द है यह पालना का द्योतक कहा गया है। जो भी पालन कर रहा है वही विष्णु है। हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! विष्णु नाम जहाँ परमपिता परमात्मा का है वही माता का नाम भी विष्णु है। जहाँ माता का नाम विष्णु है वहाँ राजा को भी विष्णु कहा जाता है। जहाँ राजा का नाम विष्णु है वहीं सूर्य का नाम भी विष्णु है। जहाँ सूर्य का नाम विष्णु हैं वही आत्मा का नाम भी विष्णु है। तो मुनिवरो! विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द है जहाँ पालना का प्रसंग है या जहाँ भी पालना का प्रसंग आएगा, वही विष्णु की विवेचना प्रारम्भ हो जायेगी। तो इसी लिए हमारे यहाँ विष्णु नाम परमपिता परमात्मा को कहा गया है। केवल एक शब्द वेद का कालवृहतं प्रमाणं वृहे विष्णु मानो देखो, जो पालना का रहा है वह विष्णु है।

मेरे प्यारे! देखो, माता का नाम विष्णु इसलिए है क्योंकि वह पालना कर रही है। मानो गर्भ स्थल से लेकर के पाँच वर्ष की आयु तक बालक की पालना कर रही है। मानो उसे शिक्षा दे देती है, दीक्षा देती नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान से बाल्य को भरण कर देती है।

विष्णुस्वरूप माता

मेरे पुत्रो! देखो, जब बाह्य जगत में बाल्य आ जाता है तो उस समय माता मानो उसका पालन कर रही है। कहीं मानो देखो सतोगुण में उसे लोरिया पान कराती रजो गुणों से उसे दण्डित कर रही है और तमोगुण में बेटा! उसी की उत्पति का मूल बन जाता है तो विचार आता है मानो देखो, एक पुत्र के तीन मनके है वही रजोगुण है वही तमोगुण हैं और वही सतोगुण माना गया है। मानो देखो, एक दूसरे में पिरोये हुए है जैसे नाना मनके एक ही धागे में पिरोये जाते है तो वे माला बन जाते है जैसे नाना प्रकार के मण्डल है और वे मण्डल एक ही मण्डल में पिरोए जाते है जैसे देखो, बेटा! मधुमक्खी होती है मानो एक राजरानी मक्खी होती है जैसे सर्वत्र उसका परिकर पिरोया हुआ रहता है। उसी प्रकार माता बेटा! पालना कर रही है। बाल्य को ''ब्रह्मणं ब्रहे'' सतोगुणमयी लोरियों का पान कराती हुई ऊर्ध्वा में शिक्षा दे रही है। सत्य उच्चारण कर रही है बेटा! इससे पूर्व काल में हमने में हमने बेटा! माता मल्दालसा का वर्णन किया था। माता मल्दालसा अपने में कितनी विचित्र रही है। जिन्होंने बेटा! उनके साहित्य को दृष्टिपात किया है वे तो भव्यता में सदैव परिणत रहे ही है। तो मुनिवरो! देखा, प्रत्येक माता अपने में नमत्तव को धारण कर लेती तो जान लेती है कि वास्तव में तेरा पालना का एक प्रसंग है और वह एक दूसरे में पिरोयी हुई प्रवृत्ति रहती है।

मेरे पुत्रो! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में प्रायः इसकी विवेचना करते हुए महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने इसकी विवेचना इस प्रकार की है। माता मल्दालसा से जब ये प्रश्न किया जाता, कि माता विष्णु है, तो माता मल्दालसा ने भी इसकी इस प्रकार ही विवेचना की है।

आत्मा स्वरूप विष्णु

आज में बेटा, इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। कई कालों में ये चर्चायें होती रही है आज तो हम तुम्हें ये उद्‌गीत गाने के लिये आए है क्या, ये माता मानो विष्णु है, पालना कर रही है। मुनिवरो! देखो, तमोगुण मे उत्पति का मूल है और निर्माण का मूल है और रजोगुण में मुनिवरो! उसकी दण्डित और सतोगुण में पालना की प्रतीक्षा बन रही है। तो माना देखो, ये माता ही तो कर रही है। तो विचार आता है बेटा! देखो, इसमें दार्शनिक विचार और भव्यता में हो तो उसका सौभाग्य बन जाता है। यदि उन्ही विचारों में देखो, उग्र और अशुद्ध हो तो वो मानव देखो, दुरिता में परिणत हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल ये कि हमारे यहाँ विष्णु नाम जहाँ परमात्मा का है वही विष्णु नाम माता को भी कहते है। और माता का नाम जहाँ विष्णु वृत्तियों में रत होता रहा है तो मुनिवरो! देखो, उसी आभा में विष्णु नाम आत्मा का है बेटा! आत्मा जब तक इस शरीर में विद्यमान रहता है तब तक मानो ये शरीर चेतना बद्ध रहता है, क्रियाशील रहता है। ज्ञान और प्रयत्न से युक्त रहता है। तो मुनिवरो! देखो, सिद्धवाती आत्मा मेरे प्यारे! जब तक इस शरीर में विद्यमान है तो विष्णु बन करके रहता हैं। मानो देखो, वे विष्णु पालना करने वाला, अणु और परमाणुओ की पालना हो रही है सुगठितता हो रही है। एक सूत्र ही में मानो सर्वत्र पिरोये हुए दृष्टिपात आते है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, विचार आता रहता है मैं तुम्हें गम्भीरता में तो ले जाना नहीं चाहता हूँ केवल यह कि आत्मा का नाम विष्णु है जो पालना करने वाला, इस शरीर की पालना उसी के मूल में है वो चेतना का द्योतक बना हुआ है। जब तक आत्मा विद्यमान है ये शरीर मानो चेतना में रत रहता है। ज्ञान और विज्ञान में रत रहते वाला है। संसार के नाना यौगिकवाद में परिणत हो जाता है।

सूर्य स्वरूप विष्णु

तो मेरे प्यारे! इस आत्मा का नाम जहाँ विष्णु है वही विष्णु नाम सूर्य का है। जो मेरे प्यारे! नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देकर के इस संसार की पालना कर रहा है मानो नाना प्रकार की कही ये सूर्य अदिति बन रहा है, कही मानों देखो, उदय हो रहा है और कही ये बावन अवतार बन कर के आ रहा है। ये नाना प्रकार के रूपों में इसकी प्रतिष्ठा मानी है। तो मेरे प्यारे! देखो, ये सूर्य अदिति है ये सूर्य भास्कर है भाता रहता है। तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है ''ब्रह्मणं ब्रह्मेः लोकं वाचन्नमं ब्रह्मे व्रतां'' तो मेरे प्यारे! देखो विष्णु नाम इस मानो देखो, सूर्य का है। प्रातः काल से उदय होता है और सायं को अस्त हो जाता है। नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देता हुआ और वे ऊर्ज्वा देकर के बेटा! भव्यता में परिणत कर रहा है।

राजा स्वरूप विष्णु

तो आओ मेरे आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ विष्णु नाम मुनिवरो! देखो जहाँ सूर्य का है वही विष्णु नाम राजा का है। उस राजा का नाम विष्णु है जो चार नियम बनाने वाला है जो अपने राष्ट्र का निर्माण करता है। जिस राजा के राष्ट्र में बेटा! चार प्रकार के नियम होते है। चार प्रकार की नियमावली बनी रहती है। मेरे पुत्रो! सबसे प्रथम मानो देखो चरित्र की प्रतिभा है। उसके पश्चात् मुनिवरो! देखो, वह 'अप्रतम् ब्रह्मा' देखो, पालना में 'गदा' का मानो एक स्रोत माना गया है और मुनिवरो! देखो,''शंख ध्वनि'' बुद्धिमानों का प्रतीक है और मुनिवरो! देखो, ''ब्रह्मणं ब्रह्माः लोक प्रह्मा' संस्कृति' का प्रसार और मानवीय वैदिकता और यौगिकता में रमण करने वाले को राजा कहते है। उस राजा का नाम विष्णु है वे कल्याणकारी मानो देखो, जो राजा इस प्रकार के नियमों का नियमन करता है वह राष्ट्र का महान और विष्णु बनकर के रहता है।

यज्ञ स्वरूप विष्णु

तो मेरे प्यारे! आज का विचार क्या? आज बेटा! देखो मैं तुम्हें विष्णु की विवेचना देने नहीं आया था क्या। ये विष्णु क्या हैं? ये केवल आज का वेद मन्त्र विष्णु की विवेचना कर रहा था कि विष्णु क्या हैं? तो विष्णु नाम बेटा! यज्ञ को भी माना है। वेदं ब्रह्माः देखो, कहते यज्ञोमयी मानो देखो, विष्णु जो कल्याणकारी है याग कैसे विष्णु है? भी पालना कर रहा है। यदि संसार से मानो याग की सुगन्ध और याग की क्रियायें समाप्त हो जाएगी तो मानवीयता का ह्रास हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए यज्ञोमयी विष्णु हमारे यहाँ जो यज्ञं ब्रह्मा थे, यज्ञ विष्णु के रूप में परिणत रहता है।

आओ मेरे पुत्रों! क्या 'सम्भवं लोकां वाचन्नमं ब्रहे'' मेरे प्यारे! एक–एक वेद मन्त्र में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड की कुञ्जी विद्यमान रहती है जिसको हम विचारते रहते है। अन्वेषन करते रहते है और अनुसंधान वृत्तियों में रत रहते है।

महर्षि भारद्वाज की यज्ञशाला

तो आओ मेरे पुत्रों! देखो हमारे यहाँ विष्णु नाम याग को माना गया है। हमारे यहाँ याग की बड़ी प्रांस और बड़ा इसको मानो सृष्टि के प्रारम्भ से इसको बड़ा गहन विषय माना गया है। आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें एक यज्ञशाला में ले जाना चाहता हूँ। एक समय बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना ऋषिवरों का एक समूह उनके द्वार पर पहुँचा। वह गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज वाली अध्यक्षता वाला समाज था। जिसमें बेटा! महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि विभाण्डक, महर्षि रेणुकेतु, महर्षि स्वाति, महर्षि व्रणकेतु मेरे प्यारे! सोमकेतु इत्यादि नाना ऋषिवर बेटा! उनके द्वार पर पहुँचे। तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने उनका अतिथि किया और नाना ब्रह्मचारियों से कहा, जो उनके विद्यालय में अध्ययन करते थे उन्होंने कहा – ऋषियों का स्वागत करो। मेरे प्यारे! ऋषियों का स्वागत होने लगा, नाना प्रकार के कन्दमूल, इत्यादि उन्हें पान कराये। जो उनके विद्यालय में पर्याप्त सामग्री थी, उन्हें उसको पान कराया, जिससे वे तृप्त हो गये। मेरे प्यारे! आसन लग गये। महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा–कहो भगवन्! आज ये मेरा आसन कैसे पवित्र किया? मैं उसके मूल को नहीं जान पाया हूँ। कि ये आसन कैसे पवित्र किया आपने?

अनूठा कर्म याग

तो मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि ने जब ये प्रार्थत्रा की, अतिथि करने के पश्चात् तो उस समय महर्षि प्रवाहण ने कहा हे प्रभु! हम इस लिए तुम्हारे यहाँ आये है क्योंकि आज हम सब ऋषि एक स्थली पर विद्यमान होकर न्यौदा में से कुछ मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे और अध्ययन में आ रहा था

सम्भवं ब्रह्मे लोकां वायु सम्भवं वृत्ति यज्ञं ब्रह्म क्षिप्रा कि प्रभु! हम ये अध्ययन कर रहे थे। क्या याग अपने में कितना मानो अनूठा कर्म है। इसके ऊपर विचारते–विचारते हम नाना लोक लोकन्तरो में चले गये आध्यात्मिकवाद में चले गये, शब्द विज्ञान में चले गये।

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने जब ये श्रवण किया तो उन्होने कहा–आओ, भगवन्! मेरे आश्रम में एक नियम है क्या–आओ, तुम यज्ञशाला में याग करो। मेरे यहाँ चौबीस कोणों से लेकर के द्विकोण तक की यज्ञशाला है। नाना प्रकार की विज्ञानशालायें हैं। हे प्रभु! आओ, हमारे यहाँ एक नियम है कि ब्रह्मवेत्ता याग करें।

'स्वाहा' का दिग्दर्शन

मेरे प्यारे! देखो! यज्ञशाला में ले गये। यज्ञशाला में नाना चरू और साकल्य विद्यमान था। वे साकल्य मानो देखो, जब घृत इत्यादि उन्होंने कहा प्रभु! याग करो। तो बेटा! देखो, उनमें कोई ब्रह्मा बना, कोई यजमान बना, कोई होता बना और उन्होने बेटा! याग का प्रारम्भ किया। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज की बड़ी महान उपलब्धि रही है। विज्ञान के क्षेत्र में तो बेटा! उन्होंने देखो, एक यन्त्र स्थित कर दिया और जैसे ही वे स्वाहा उच्चारण करते थे, तो मुनिवरो! उनका जो शब्द है, उनका जो क्रियाकलाप है वे मेरे पुत्रो! देखो, अन्तरिक्ष में जाता हुआ यन्त्रों के द्वारा दृष्टिपात होने लगा। मेरे पुत्रो भारद्वाज मुनि ने कहा प्रभु! देखो, ये तुम्हारा शब्द द्यौ लोक को जा रहा है इसे दृष्टिपात कर लेना। मेरे प्यारे! देखो, चित्रावली में, जैसे स्वाहा उच्चारण करते है मानो देखो, स्वाहा के साथ में उनका क्रियाकलाप यहाँ तक के उनके मनो की जो भावना है मानो देखो, उनका चित्र बनकर के बेटा! द्यौ लोक में, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के द्यौ लोक को प्रवेश कर जाता हैं।

दर्शनों से निर्णय

मेरे प्यारे! विज्ञान अपने में कितना विचित्र रहा है। महर्षि भारद्वाज के विज्ञान को दृष्टिपात करके ऋषि मुनि बहुत प्रसन्न हुए और प्रसन्नचित होकर के बोले कि धन्य है प्रभु। हम तो मानो ये श्रवण ही करते थे। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि ने कहा कि हम तो केवल दर्शनो में अध्ययन करते थे। न्यौदा में भिन्न–भिन्न प्रकार के मन्त्रों की प्रतिभा का प्रायः जन्म होता रहा और हम उनको दृष्टिपात करके उनको दर्शनों से सुगठित कराते हुए, दर्शनो से निर्णय कराते रहते थे। हे प्रभु! यह हमारा सौभाग्य है जो हम आपके इन क्रियाकलापों को साक्षात् दृष्टिपात् कर रहे है।

मेरे प्यारे। देखो, उन्होंने याग किया, उसमें चित्र दृष्टिपात किये, जितना भी मानव का शब्द ऊर्ध्वा में होता है, दार्शनिकता से गुंथा हुआ होता, उतना ही शब्द द्यौ लोक को प्राप्त होता है। मानो भूः भुवः स्वः ये मुनिवरो! देखो भूः भुवः में ही शब्द रह जाता है। मेरे पुत्रो! स्वः कहते है, द्यौ को। वे द्यौ में प्रवेश हो जाता है और वह मेरे पुत्रो! वायुमण्डल में प्रवेश कर जाता है। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के वे चित्र गमन करते रहते है।

मेरे प्यारे! जब उन्होंने ये दृष्टिपात कराया, तो महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने ये प्रार्थना की कि प्रभु! मैंने आपका यज्ञ का क्रियाकलाप तो दृष्टिपात कर लिया, इसको तो प्रायः हम वैसे भी अनुभव करते रहते हैं। हम ये जानना चाहते है प्रभु! ये आपके द्वारा ही प्राप्त किया गया है या और भी अन्य ऋषि इस प्रकार के हुए है।

ज्ञान की परम्परा

मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि बोले। हे प्रभु! ये तो परम्परा से चल रहा है। ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने इसको जाना है और रेंगणी भारद्वाज मेरे महापिता ने जाना है। मेरे पिता और मेरे जो महापिता कोलवेतुऋषि महाराज ने जाना तो मानो हरितत् गोत्र में बहुत सो ने जाना। हे प्रभु! आओ, देखो, यदि तुम्हे विश्वसनीय न हो तो ये विज्ञान की धारा है ये मैने तुम्हे साक्षात् दृष्टिपात करायी है। आओ, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज उसकी अध्यक्षता वाले समाज को ले करके हम देखो, महर्षि भारद्वाज गोत्र में गमन करते हैं।

चित्रों का द्यौ से अन्तरिक्ष में गमन

शिकामकेतु उद्यालक मुनि के यहाँ प्रायः देखो पति पत्नी अपने जीवन में इसी प्रकार के विज्ञान और ज्ञान में लगे हुए हैं। मेरे प्यारे! देखो, उनसे कुछ और वार्ता प्रकट होने लगी। क्या महाराज इसका भी निर्णय कर पायेंगे। परन्तु हम ये जानना और चाहते है कि ये यज्ञ में जो चित्र होते है ये द्यौ में प्रवेश करके कहां जाते है। उन्होंने कहा ये द्यौ में प्रवेश करके मानो देखो, अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाते हैं उसी में ये निहित रहते हैं। समय–समय पर जब वो प्रकरण आता है चाहे वो किसी भी जन्म में आ जाये परन्तु देखो, उसका संस्कार उद्‌बुद्ध होकर, चित्र बनकर के मानो देखो, उसी को प्राप्त होते रहते हैं, जिसके वे होते है।

मेरे प्यारे! देखो, इस वाक्य को श्रवण करके आश्चर्य हुआ महर्षि वैशम्पायन बोले कि प्रभु! ये तो मैंने राजा अश्वपति के याग के लिये जब गया था तब वहाँ भी मुझे दृष्टिपात हुआ। अब हम "एकं ब्रहे ब्रह्माः" देखो, उद्यालक गोत्र में गमन करते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि इत्यादि ऋषियों का वो समाज ब्रह्मचारी भी विद्यालय के मेरे पुत्रो! वहाँ से प्रस्थान करते है और भ्रमण करते हुए वे मुनिवरो! देखो, महर्षि उद्यालक गोत्र में पहुँचे और उद्यालक गोत्र में बेटा! देखो उनकी पत्नी, शिकामकेतु। उद्यालक की पत्नी और वे दोनों अपने में अनुसंधान कर रहे थे। विचार विनिमय कर रहे थे।

शिकामकेतु उद्यालक के यहाँ ऋषियों का आगमन

मेरे प्यारे! देखो, याग सम्पन्न हो गया था और विचार विनिमय हो रहा था। इतने में ऋषि, मुनियों का ये समाज जा पहुँचा। मेरे प्यारे देखो, जब शिकामकेतु ने दृष्टिपात किया, कि आज तो मेरा बड़ा अहो भाग्य है जो मानो ऋषिवरों का आगमन हो रहा है। ये तो सब ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मचारी है, ब्रह्मवर्चोसि है मानो देखो, ये हमारा कैसा सौभाग्य है। मेरे पुत्रो! देखो, जब ये वाक्य उनके हृदय प्रभा अर्वण ब्रह्मे देखो, ब्रह्मवेत्ता को दृष्टिपात करके किसका हृदय पुलकित नहीं होता। मानो प्रसन्न हो जाता है।

मेरे पुत्रो! जब ऋषियों को दृष्टिपात किया तो शिकामकेतु और उनकी पत्नी शकुन्तकेतु दोनों ने मुनिवरो! देखो, जल लेकर चरणों को स्पर्श करते हुए जल का आचमण किया। मेरे प्यारे! पंक्तियाँ लग गई, विद्यमान हो गये। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने और उनकी पत्नी नें अतिथि किया और उनको कहा – प्रभु! हम गृह स्वामी है, आप ;शिकामकेतुद्ध गृह स्वामी है और मैं गृह स्वामिनी हूँ मानो ये महापुरूष है ये अपने त्याग और तपस्या वाले ऋषिवर हैं इनका अतिथि सत्कार किया जाये। तो बेटा! उनका अतिथि सत्कार किया। अतिथि सत्कार करने के पश्चात् उनसे नम्रता से दोनों ने कहा कहो भगवन् आज कैसे आसन को पवित्र किया, कौन सा उद्‌गार था मानो उदं ब्रह्मे हमारा कैसे पुण्य उदय हो गया है। मेरे पुत्रो! ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। महर्षि वैशम्पायन और भारद्वाज दोनों उपस्थित हुए। भारद्वाज मुनि ने कहा, हे भगवन! देखो आज मेरे आश्रम में ये नाना ब्रह्मवेत्ता और ब्रह्मचारी पहुँचे। परन्तु देखो, उनके द्वारा याग हुआ। मेरा हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। महापुरूषों के द्वारा याग हो और महापुरूषों से याग के लिये मानो देखो, वनों से ऋषिवर आते हैं।

महाराजा अश्वपति के यहाँ वृष्टि याग

उन्होंने कहा – मुझे वो काल स्मरण है जिस समय देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ एक वृष्टि याग हुआ। तो वृष्टि याग के लिये ये विचारा कि कौन ऐसा ऋषि है जो वृष्टि याग में पारायण हैं। मेरे प्यारे! देखो उनके, उस समय कोई पुत्र भी नहीं था। उन्होंने ये प्रार्थना की कि ऐसा कौन–सा ऋषि है जो पुत्रेष्टि याग करा सके? तो मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने कहा भयंकर वनों में ऋषिवर रहते हैं। तो महर्षि शिकामकेतु उद्यालक ने कहा 'ब्रह्मणं ब्रह्मे'। हे भगवन! ये तो मेरा सौभाग्य है।

मानो देखो, महाराजा अश्वपति भ्रमण करते हुए कजली वनों मे देखो, महर्षि स्वाति व्रण श्रृंगकेतु मुनि महाराज विश्राम करते थे। वे ब्रह्मचर्य व्रत में थे। उन्हें संसार का ज्ञान भी नही था। मानो देखो, एक सौ इक्हत्तर वर्ष की आयु और उन्होंने देखो, उनसे प्रार्थना की प्रभु! मेरा पुत्रेष्टि याग करा दीजिए। उन्होंने कहा 'सम्भव ब्रह्मे लोकां वाचन्नमे'' मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने जब प्रार्थना की तो उन्होंने कहा– 'शाश्वत'।

मेरे प्यारे ! देखो, वह पुत्रेष्टि याग हुआ। उसका चरू भिन्न मानो साकल्य भिन्न–भिन्न बनकर के वो याग किया जिससे परमाणुवाद की प्रतिष्ठा हुआ करती हैं। विचारवेत्ता कहते है विज्ञानवेत्ताओं का भी ये कथन है कि ये परमाणुवाद ही तो है जो इस संसार के, ब्रह्माण्ड की चप्पिका को अपने में धारण कर रहा है। तो मानो देखो, जिस समय वो याग हुआ, याग होने के पश्चात राजा और उनकी पत्नी बड़े प्रसन्न हुए और मुनिवरो! देखो, याग सम्पन्न हो गया।

परिणाम ये है देखो, हमारे उच्चारण करने का प्रभु! ऋषि मुनियों का, ब्रह्मवेत्ता का भयंकर वनों में जाते और आज देखो, मेरा ये ऐसा सौभाग्य जागरुक हो गया है कि आप बिना निमन्त्रण के मेरे आश्रम में पधारे। आप मेरे अतिथि हो, मेरा ऐसा सौभाग्य है, मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ। मेरे प्यारे! देखो, 'ब्रह्मणं ब्रहे व्रताः' वे विराजमान हो गये।

तो उन्होंने कहा–हे ऋषिवर। हे उद्यालक गोत्र में जन्म लेनें वाले शिकामकेतु उद्यालक। हम इसलिये पधारे है, हम वेदों में अध्ययन कर रहे थे मानो ब्रह्मणं ब्रह्मे भारद्वाज मुनि के यहाँ पहुँचे। भारद्वाज मुनि महाराज ने याग के लिये हमें कहा तो देखो, नाना प्रकार की चित्रावली–यन्त्रों में हमारे शब्द, हमारे चित्र हमारे क्रियाकलापों को हमने दृष्टिपात किया है। हे प्रभु! उसे हम जानने के लिये, आपका नामोकरण हमने श्रवण किया था। आपका बड़ा ऊर्ध्वा में गति देने वाला विचार रहता है। प्रभु! हमने ये श्रवण किया कि उद्यालक गोत्र में प्रायः ऐसा होता रहा है अब हम भगवन्! उनको दृष्टिपात करना चाहते हैं। चित्रावलियों में चित्रों को दृष्टिपात करना चाहते हैं, आपने याग के माध्यम से क्या–क्या जाना है? तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा बहुत प्रियतम वे विराजमान हो गये।

यन्त्रावलियों से पूर्वजों के दर्शन

मेरे पुत्रो! देखो, याग प्रारम्भ होने लगा। मानो देखो, यन्त्रावलियों में ले गये। याग को यन्त्रों में दृष्टिपात कराने लगे। हे प्रभु! मेरे यहाँ एक यन्त्र हैं। इस यन्त्र में मानो सर्वप्रथम विज्ञान के क्षेत्र में पहुँचा तो विज्ञानवेत्ता बनने के लिये मेरे यन्त्रों में हमारे चित्र दृष्टिपात आने लगे। तरंगों के द्वारा, उन तरंगों के ऊपर हमने और अनुसंधान किया तो हमारे पूर्वज दृष्टिपात आने लगे। जब पूर्वजो का दर्शन होने लगा तो मानो ओर अनुसंधान किया। क्योंकि आवश्यकता जब मानव की बलवती हो जाती है तो मानो देखो, मानव सुविधा प्राप्त करने लगता है और वो उसे अपने में धारण करना चाहता है।

तो मेरे प्यारे! देखो जब उन्होने अनुसंधान किया तो ऋषि ने कहा देखो, भगवन! ये मेरे पच्चीसवे महापिता हैं। मानो पच्चीसवे महापिता का दर्शन यन्त्रों में दृष्टिपात आ रहा हैं। मेरे प्यारे! ऋषि बड़े प्रसन्न हुए और उन्होने कहा – प्रभु! हमने और अनुसंधान किया तो हमारे यहाँ ''सम्भवं ब्रह्मः लोकं वाचप्रह्म लोकं ब्रहे'' हे भगवन! मेरी विज्ञानशाला में, मेरे पचासवे महापिता का दर्शन होता रहता है। पचासवे महापिता का दर्शन उनके क्रिया–कलाप, उनकी रजोगुणी प्रवृति है या सतोगुणी प्रवृति या मानो देखो, तपोगुणी, उनके भी चित्र आते रहे हैं। उनके भी प्रतिभाषित होते रहते हैं। तो मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान हमने जाना हैं।

सोवे महापिता के दर्शन

मेरे प्यारे! ऋषि वैशम्पायन बोले ''प्रभु! आपने और भी जाना? ऋषि बोले मैं सोवे महापिता तक पहुँच गया हूँ। मैं सोवे महापिता का दर्शन करता रहता हूँ। भगवन! यन्त्रों के द्वारा, अनुभूति के द्वारा इस मानो देखो, याग के माध्यम से मेरे पुत्रो! देखो, ये बड़ा अनुसंधान का विषय है और विचार का। मानो देखो, ये बड़े विवेकी पुरूषों का विषय है।

उद्यालक गोत्र की प्रणाली

मुनिवरो! देखो, महर्षि वैशम्पायन को जब ये निर्णय कराया तो महर्षि वैशम्पायन बोले – हे प्रभु! मुझे ये प्रतीत है कि तुम्हारा जो गोत्र है, हे शिकामकेतु उद्यालक। तुम्हारा गोत्र उद्यालक है और उद्यालक गोत्र में मुझे अब तक जो प्रणाली तुम्हारी चल रही है वो उद्यालक गोत्र में लगभग दो हजार पाँच सौ इक्यासी वो तुम्हारा वंशलज चल रहा है, मानो तुम्हारी प्रणाली चल रही है और तुम्हारे जो उद्यालक गोत्र का जो, निकास हुआ हैं, उद्यालक गोत्र का निकास मानो हरिकेतु ऋषि गोत्र से हुआ। हरिकेतु जो मानो गोत्र रहा है वो लगभग देखो, ग्यारह हजार पाँच सौ इकसट ;के लगभग उसमें वंशलज हुए और देखो, हरिकेतु गोत्र का जो निकास हुआ था, वह वायु गोत्र से हुआ था और वायु गोत्र में लगभग इकसट हजार पाँच सौ इक्यासी के लगभग वंशलज समाप्त हुए। मानो देखो, वायु गोत्र का जो निकास हुआ था वो मानो देखो, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा मानो ब्रह्म के पुत्र अथर्वा के लाखों वंशलज समाप्त हो गये थे। हे प्रभु! मैने ऐसा श्रवण नहीं किया, कि यहाँ इस प्रकार का विज्ञानवेत्ताओ में कोई ऋषि हुआ हो? आप ऐसे विज्ञानवेत्ता क्यों हुए और ऐसी प्रेरणा तुम्हें कहाँ से प्राप्त हुई?

मानवीय मस्तिष्क में विज्ञान

मेरे प्यारे! शिकामकेतु उद्यालक बोले हे वैशम्पायन। हे कोटि व्रणं मानो देखो, तुम्हें ये प्रतीत होना चाहिये, ये विज्ञान तो मानवीय मस्तिष्कों में सदैव रहा है। तुम्हें ये प्रतीत होना चाहिये कि मानव आध्यात्मिकवेत्ता बनना चाहता, आत्मा को जानने के लिये जब गमन करता है तो भौतिकवाद को पवित्र बनाते हुए, जानते हुए, जब वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है तो मानो देखो, हमारे वंशलज बहुत से आध्यात्मिकवेत्ता हुए, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी हुए है मानो वो भौतिकवाद के मार्ग से होकर, आध्यात्मिकवाद को प्राप्त होते रहे है।

मानो देखो, आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, मेरे पुत्रो। देखो ऋषि कहते है। नाना वंशलज में, नाना ब्रह्मवेत्ता भी हुए है और भौतिक विज्ञानवेत्ता भी हुए ऐसा मानो कोई वृत्त नहीं है जो वास्तव में नाना ऋषिवर न हुए हों। आज का हमारा 'ब्रह्मणं ब्रहे केतपं प्रमाणं लोकां' वेद का आचार्य कहता है, शिकामकेतु उद्यालक, कि ये तो परम्परागतों से ही ज्ञान और विज्ञान मानों नृत्य करता रहा है, आभा में आभाहित होता रहा है तो इसलिये ये न विचारो की ऐसा नही होता। परन्तु देखो, विचार विनिमय केवल ये है आज हमारे सोवे महापिता जो अब इस संसार नही हैं उनके चित्र हम यन्त्रों के द्वारा दृष्टिपात करते है। अग्नि की धाराओं से मानो देखो, जब स्वाहा उच्चारण करते तो वे दर्शनों से मानव की एकाग्रता वाला जो शब्द है वो द्यौ लोक में चला जाता है अन्यथा वही शब्द लोक में भुवः में चला जाता है।

तो परिणाम क्या है मानो देखो अपने–अपने रूप में रत होकर के और वे शब्द उसी को प्राप्त होते रहते है क्योंकि चित्त में भिन्न–भिन्न प्रकार के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार होते हैं उनका जो नृत्य है वो होता रहता है, उसी को प्राप्त होता रहता हैं।

ज्ञान विज्ञान में रमण

आज बेटा! मैं बहुत गम्भीर रूप में तुम्हे ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार केवल उदगीत गाने के लिये हम आये है क्या –नाना विज्ञानवेत्ता हुए, नाना गोत्रों में नाना प्रकार के ऋषि हुए है। मेरे प्यारे आज मैं तुम्हें कोई गाथा वर्णन करने नहीं आया हूँ। केवल परिचय देने के लिये आया हूँ और वह परिचय केवल इतना कह रहा है कि हम बेटा! देखो, ज्ञान और विज्ञान में रमण करने वाले हो। मेरे प्यारे! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि का जो आश्रम था उसमें नाना प्रकार का विज्ञान पनपता रहा, शिकामकेतु उद्यालक मुनि पनपता रहा।

वेद का यथार्थ कथन

तो बेटा! देखो, ऋषि मुनियों को विश्वास हो गया। जब चित्रों में दृष्टिपात किया तो उन्होंने बेटा ! शिकामकेतु उद्यालक चरणान्वित करते हुए बोले 'प्रभु अब हमें आज्ञा दीजिए। उन्होंने कहा भगवन्! आप कहाँ गमन करेंगे? तो उन्होंने कहा अपने–अपने आश्रमों में अब हमें निर्णय हो गया है। हम ये जान गये कि वेद जो कहता है, वेद का मन्त्र जो कहता है वह यथार्थ कहता है। वेद का मन्त्र जब न्यौदा में अध्ययन करते थे तो वह कहता "चित्र ब्रह्मणं ब्रहे कृतं लोकां वाचं ब्रह्मे चित्राः।

देखो, चित्र की कल्पना करते हुए मानो नाना प्रकार के चित्रों का दर्शन करता है और पूर्वजो का दर्शन करता है और भी नाना प्रकार के देखो, चित्रों में रमण करना। भारद्वाज मुनि के यहाँ स्वाहा के साथ में उद्‌गीत गाने वाले चित्रों का चित्रण हो रहा है। यहाँ तक भारद्वाज ने अपनी विज्ञानशाला में जाना कि माता के गर्भ स्थल में जितने परमाणुओं से शिशु का निर्माण होता है और शिशु का वृत बन जाता है उसी प्रकार यन्त्रों में एक एक रक्त के बिन्दु में मानो देखो, उस मानव के चित्रों की चित्रावली दृष्टिपात आने लगती है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विज्ञान में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता है विचार ये चल रहा था।

आओ मुनिवरों! 'विज्ञानं विष्णुरूद्धम्' हे विष्णु। तू कल्याण करने वाला है। विष्णु कहते है परमपिता परमात्मा को। बेटा! विष्णु कहते है जो इस विज्ञान की याग के माध्यम से जो यज्ञ को जाना जाता है। और दुरिता को नष्ट कर देता हूँ और संसार का शुद्धिकरण करने वाला है तो वो याग कहलाता है चित्रो को बेटा, अन्तरिक्ष में परिणत करा देता है द्यौ लोक से इसका समन्वय होता है। विचारार्थ होते हुए बेटा! महानता को प्राप्त होते रहे।

आओ, मेरे प्यारे! मै विशेष विवेचना न देता हुआ क्योंकि यह तो विचारों का भयंकर वन है। परन्तु केवल इतना वाक्य कि हम अपने प्रभु की याचना करते हुए कि हे विष्णु! तू पालक है, पालन करने वाला है। हमें भी अपनी आभा में से कुछ प्रदान कर, जिससे ज्ञान और विज्ञान का जान करके इस संसार सागर से पार हो जाये, हमारी मृत्यु न आ जाये।

प्रकाश का जीवन

मेरे प्यारे! जब मानव इस प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में रहता है तो उसके जीवन में अज्ञान, अन्धकार नहीं आता और अज्ञान जो अन्धकार है यही तो बेटा! मानव को रसातल की ओर ले जाता है। अन्धकार में पहुँचा देता है।

मेरे प्यारे! देखो, प्रकाश का जीवन रहना चाहिये। मुनिवरो! देखो, परमात्मा के राष्ट्र में चले जाओ, परमात्मा के राष्ट्र में बेटा सदैव दिवस रहता है वहाँ रात्रि नही होती, वहाँ आलस्य नहीं होता, वहाँ प्रमाद नही होता। जहाँ रात्रि, प्रमाद और आलस्य नही होता तो वहाँ बेटा! मृत्यु भी नहीं हुआ करती।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आज का वाक्य अब ये समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये क्या हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हे विष्णु! तू मानो चार रूपों में रत होकर के राष्ट्र और समाज का कल्याण करने वाला है। तो ये है बेटा! आज का वाक्, अब वेदों का पठन पाठन होगा। **ओउम् देवः रथाः आम्यां ऋषि वायुःआप्यां लोकं सर्वाः आ पाः । ओउम् मनु रथं आ भाः**

दिनांक–12–04–1988–दिनकरपुर, मु. नगर

६ माता वसुन्धरा 15–04–1988

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद–मंत्रों का गुण–गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही इस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, उस परमपिता परमात्मा की महती हमें दृष्टिपात आती रहती है।

ब्रह्माण्ड के दो रूप

क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित है। वो सीमा में आने वाले नहीं है। और यह ब्रह्माण्ड, हमें दो रूपों में दृष्टिपात आता रहता है। एक जड़वत में दूसरा चैतन्यवत् कहलाता है और वह दोनों में ही विद्यमान है। मानो उसी की प्रतिभा से यह संसार प्रतिभाषित हो रहा है। मानव जब एक–एक वेद मंत्र के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करता है। तो प्रायः उसमें ऐसा ही ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगता है। जिससे मानव विचार विनिमय में करता हुआ, मौन हो जाता है। क्योंकि इन्द्रियों से उपरामता का जो विषय होता है उसमें मानव प्रायः मौन हो जाता है।

वसुन्धरा

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेदमंत्र हमें कुछ प्रेरित कर रहा है क्योंकि प्रायः प्रत्येक वेद मन्त्र में, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन होता रहता है। क्योंकि जिस भी वेदमंत्र के ऊपर तुम अध्ययन करना प्रारम्भ करोगे, तो उसमें चिंतन करने वाला, जब गंभीर मुद्रा में मुद्रित हो जाता है तो ऐसे अगाध समुद्र में परिणत हो जाओगे, जहाँ मानव के अन्तर्हृदय में, उस परमपिता परमात्मा की महती ही दृष्टिपात आती है। आज का हमारा वेद मंत्रः उस माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में, और उस परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा के रूप में वर्णन कर रहा था। क्योंकि वसुन्धरा का अभिप्राय यह है, जिसके गर्भ स्थल में ये मानव वशीभूत रहता है। प्राणी मात्र जिसके गर्भ में निहित रहता है, वसता है। तो वसने से उसका नाम वसुन्धरा कहलाता है।

तो हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मंत्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है, और जिस प्रकार यह पृथ्वी बह्माण्ड की गाथा गा रही है। इस सम्बन्ध में बहुत–सी चर्चाएँ होती रही है। परन्तु आज का हमारा वेद मंत्रः उस माता को वसुन्धरा कह रहा है जिसके गर्भ में बेटा! हम सब वशीभूत रहते है। हे ममत्वां ब्रह्मणं ब्रहे। हे माता! तू अपने में ममता को धारण करने वाली है। परन्तु देखो, तेरे में ही हम जैसे शिशु पनपते रहते है और बसते रहते हैं और तू उसे अपने में बसाने वाली है।

पालक देवता

तो मुनिवरो! देखो, उस माता का नाम वसुन्धरा है। जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत रहते है। तो वह कौन–सी माता, जो जननी माता है जिसके गर्भ में एक बिन्दु है, उस बिन्दु में शिशु है और जैसे ही शिशु का प्रवेश होता है तो मानो सर्वत्र देवता जागरूक हो जाते हैं। मेरे प्यारे! जैसे शिशु गर्भ में प्रवेश हुआ तो देवता जन अपने–अपने क्रिया कलापों में परिणत हो जाते हैं। जैसे चन्द्रमा अमृत देना प्रारम्भ करता है, सूर्य प्रकाश देता है और पृथ्वी गुरुत्व देती है और जल आपोमयी ज्योति देने वाला है। जब मुनिवरो! देखो, माता के गर्भ स्थल में हम जैसे शिशु तपते रहते है तो आपोमयी ज्योति में ही तो जीवन रहता है। मानो उसका ओढ़न भी आपो ही है, आसन भी मानो आपो ही है और पासे भी आपो बने हुए हैं। मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। कितना विज्ञानमयी कहलाता है। मेरी भोली माता को यह ज्ञान नहीं हो रहा है कि कौन निर्माण कर रहा है और निर्माण भी कैसी विचित्रता से हो रहा है।

समन्वय

मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा अमृत देता है। चन्द्रमा का समन्वय समुद्रों से होता है और समुद्रों का समन्वय द्यौ से होता है और द्यौ का समन्वय सूर्य से होता है और सूर्य से चन्द्रमा अपने में धारयामि बनाकर के बेटा! अमृत की वृष्टि करने वाला है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य प्रकाश दे रहा है। सूर्य का प्रकाश एक ऊर्ज्वामयी कहलाता हैं। जितनी ऊर्ज्वा है, वह सूर्य से प्राप्त होती रहती है। कैसा अनुपम बेटा! सूर्य प्रकाश दे

रहा है। इसका द्यौ से समन्वय रहता है और द्यौ से प्रकाश लेकर के बेटा! यह मानो देखो, वही प्रकाश अब्रतं ब्रह्माः प्रकाशाः अग्नं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, वही तो प्रकाश एक अनुपम है जो नाना पृथ्वियों को अपने में माला के सहस्र रूपों में धारण करता है।

मेरे प्यारे! जैसे एक माला है, उस माला में एक सूत्र है और उस सूत्र में भिन्न–भिन्न प्रकार के मनके पिरोये जाते है तो वो माला कहलाती है। इसी प्रकार यह जो सूर्य ऊर्जा देने वाला है, प्रकाश देने वाला है। यह नाना पृथ्वियों को अपने में धारण कर है, पिरो रहा है। माला बना करके अपने में धारण कर रहा है। वह धारयामि बना हुआ है। मेरे पुत्रो! देखो, कितनी अनुपमता है उसके विज्ञान में। विचार आता रहता है बेटा! जब वेद मंत्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करते है तो मानो ये सर्वत्र विज्ञान का स्पष्टीकरण हो जाता है।

आनन्दमयी ज्योति

मुनिवरो! देखो, वह प्रभु ब्रह्मणं ब्रहे मेरे पुत्रो! देखो, जल आपोमयी ज्योति है। जब शिशु माता के गर्भ में रहता है तो बेटा! वही तो एक आनन्दमयी ज्योति कहलाती है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण और अनुसंधान करता रहा है। उस अनुसंधानशाला में जब मानव विद्यमान होता है तो अपने में, अपनेपन को ही धारण करता रहता। तो बेटा! यह ब्रह्माण्ड एक अनन्तता में ही दृष्टिपात आने लगता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना नहीं, केवल वसुन्धरा के सम्बन्ध में मुनिवरो! देखो, वही माता वसुन्धरा है जो कल्याणकारी है। हे माता! तू अपने में धारण करने वाली है। परन्तु निर्माणवेत्ता, तो वह चैतन्य देव है जो निर्माणवेत्ता कहलाता है। मुनिवरो! देखो, माता के गर्भ स्थल में जब मानो देखो, आपोमयी ज्योति पासें बने हुए और आसन बने हुए रहते है तो वहां एक सत्ता है जो मानो सूर्य उसमें से प्रकाश अवृत करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय अप्रतं ब्रह्मः मानो अग्नि उसे ऊष्ण बनाती है। उतना ही ताप देती है जितनी आवश्यकता होती है। वह अग्नि तेजोमयी कहलाती है।

वैदिक साहित्य में अग्नि

अग्नि, मुनिवरो! देखो, हमारे वैदिक सहित्य में अग्नि का बड़ा विस्तार माना गया है। भिन्न–भिन्न प्रकार की अग्नि कहलाती है वही अग्नि मेरे पुत्रो! यज्ञशाला में यजमान के मध्य में मुनिवरो! देखो, एक यज्ञशाला की अग्नि बनकर के रहती है जो काष्ठ, साकल्य में परिणत रहती है। परन्तु वही अग्नि ब्रह्माग्नि बन करके रहती है। जब ब्रह्मवेता अपनी वाणी से, ब्रह्म का गान गाता है, ब्रह्म की ऊर्ज्वा में प्रवेश हो जाता है तो बेटा! वह ब्रह्माग्नि कहलाती है। जिसका रसनं बह्माः जो रस बेटा! देखो, ब्रह्मवेत्ता, बह्म की ही चर्चा करते हुए इस वाणी का शोधन करते रहते है। वाणी को ऊर्ध्वा में परिणत करते रहते हैं यह वाणी एक ब्रह्माग्नि बन कर के रहती है।

स्वर्ग–गृह

यही अग्नि बेटा! देखो, गृहपथ्य नाम की अग्नि बनकर के रहती है। जब माता पिता अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहते है तो मेरे पुत्रो! उसे गृहपथ्य नाम की अग्नि कहते है। वह अग्नि मानो वाणी के माघ्यम से उसका उद्घोष होता रहता है और माता पिता जब यह चाहते हैं कि हमारा गृह स्वर्ग बन जाए, तो स्वर्ग कैसे बनेगा? जब कि माता पिता अपने गृह में ऊर्ध्वा में मानो दर्शनों की मीमांसा करने वाली अपनी वाणी को अग्निस्वरूप स्वीकार करके जब अग्नि के द्वारा दर्शनों की प्रतिभा का, परमाणुवाद रूप में जब उसका प्रसारण होता है तो माता पिता मानो प्रातः कालीन गान गाते हैं। बाल्य, बालिका उनको अपने में श्रवण करके वे भी उनके अनुकूल, अपने जीवन में बरतने जगते हैं तो बेटा! गृह स्वर्ग बन जाता है। मेरे प्यारे! उसे गृहपथ्य नाम की अग्नि कहते हैं जहाँ दर्शनों की मीमांसा करने वाला गृहस्वामी और गृह स्वामिनी होती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आगे वेद का ऋषि क्या कहता है सम्भूति ब्रह्मणं वाचन्नमं ब्रहे व्रतम् मेरे प्यारे! देखो, अग्नं ब्रह्माः यह अग्नि मुनिवरो! देखो, यही अग्नि है जो विद्यालयों में, ब्रह्मचारियों के हृदयों में मानो प्रदीप्त रहती हैं और उस अग्नि को मानो उसे गाहर्पथ्य नाम की अग्नि कहते है। मेरे प्यारे! वही अग्नि काष्ठ में रहती है, वही अग्नि जब बेटा! अनुसंधानवेत्ता अनुसंधान करता है तो अणु और परमाणु में रत हो करके इसका ऊर्ज्वा से समन्वय हो जाता है।

प्राण सत्ता के दस भाग

तो मेरे प्यारे! मैं अग्नि की विवेचना तो नहीं करने जा रहा हूँ। वह अग्नि, बाल्य को माता के गर्भ स्थल में बेटा! ऊष्ण और देखो, उसे उतना ताप देती है जितनी उस शिशु को आवश्यकता है। आवश्यकता के अनुसार बेटा! कौन निर्माण दे रहा है? वह कैसा अनुपम विज्ञानवेत्ता है बेटा! मेरे प्यारे! देखो, वही अग्नि ब्रह्मणं ब्रहे तव कृतं वही अग्नि बेटा! देखो, तापां ब्रह्मे आपो को भी तपायमान करती है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहता है हे शिशु ब्रह्मं ब्रहाः मुनिवरो! देखो, जब अग्नं ब्रह्माः मुनिवरो! देखो, वायु प्राण देना प्रारम्भ करता है। मुनिवरो! देखो, वायु के, इसी प्राण सत्ता के बेटा! दस भाग हो जाते हैं जिसको प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान, नाग, देवदत्त, धनंजय, कुरु, कृकल ये दस प्राण कहलाते है। मेरे प्यारे! देखो, उसी वायु के दस भाग बन करके मानव के जीवन का भिन्न–भिन्न रूपों में, शरीरों को विभक्त करते रहते है।

मेरे पुत्रो! वही प्राण सत्ता के जो साधक अपने में देखो, प्राण को अपान में, अपान को प्राण में और प्राण को देखो, समान में और समान को उदान में मुनिवरो! देखो वृत्ति अस्सुत उदान को व्यान में परिणत करते हुए वो साधक अपने में बेटा! प्राण सत्ता को अपने में धारण करने लगता है। वह योगेश्वर मानो प्राण सत्ता के द्वारा हो ब्रह्मवर्चोसि बन करके, वह ब्रह्मचरिष्यामि को अपने में ही ग्रहण करता हुआ बेटा! देखो, अपने में धारयामि बना रहता है।

ब्रह्माण्ड की प्रतिभा

मुनिवरो! देखो, वह वायु, प्राण देने वाला है। प्राण अपान, उदान, समान और व्यान मानो देखो, ये पांच प्राण ही तो ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में निहित हो रहे है। वही उपप्राण कहलाते हैं बेटा! नाग, देवदत, धनंजय, कुरु, कृकल ये एक ही प्राण के दस विभक्त हो रहे हैं। जिससे मानव का जीवन, मानव का शरीर भिन्न–भिन्न प्रकार की क्रियाओं में रत रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, निर्माण करने वाला कौन है माता के गर्भ स्थल में? मेरे पुत्रो! जब हम जैसे शिशुओं का निर्माण होता है। तो 72 करोड़ 72 लाख 10 हजार 202 नाड़ियों का निर्माण हो जाता है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना उज्ज्वल निर्माणवेत्ता है, अमृत दे रहा है, अमृत प्राप्त करा रहा है, प्राण सत्ता में, अपनी वृत्तियों में रत रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, वही तो पंचं वृति कहलाती है जिसको मुनिवरो! देखो, माता वसुन्धरा जो अपने गर्भ में, अपने में ही धारण करने लगती है।

बुद्धि के चार प्रकार

मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि भी चार प्रकार की होती है। बुद्धि, मेघा, ऋतम्बरा और प्रज्ञावी कहलाती है। मुनिवरो! देखो, यहाँ मन की वृत्तियाँ भी नाना प्रकार की हैं। प्राण की धारा भी भिन्न–भिन्न प्रकार है। परन्तु आत्मा के दो ही गुण रहते है ज्ञान और प्रयत्न वह उसमें बेटा! निहित रहती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, वह माता के गर्भ स्थल में, हे माता! वेद तुझे वसुन्धरा कह रहा है और वही बाल्य बनकर के जब बाह्य जगत–में आता है तो वही माता की गाथा गा रहा है। माता का वर्णन कर रहा है। माता की प्रतिभा का वर्णन करता हुआ अपने में ही धारण कर रहा है।

जीवन की उद्‌बुद्धता

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, यह माता वसुन्धरा मुनिवरो! देखो जब बाल्य, हम जैसे शिशु माता के गर्भ स्थल से पूर्ण हो करके इस पृथ्वी माता के गर्भ में प्रवेश कर जाते है तो बेटा! इस पृथ्वी माता के गर्भ में क्या नही है? ये तो बड़ी अनुपम है। मानो देखो, जब विज्ञानवेत्ता या आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता इसके ऊपर विचार विनिमय करते हैं तो ऊर्ध्वा में गमन करने लगते हैं। मानो देखो, इसको माता वसुन्ध्रा के रूप में वर्णन करते हैं। हे माता! जब जननी माता के गर्भ से पृथक् होकर के हम जैसे शिशु पृथ्वी माता की गोद में प्रवेश कर जाते हैं तो पृथ्वी माता की लोरियों का पान करने लगते है। मुनिवरो!

देखो, पृथ्वी के गर्भ में कहीं खाद्यान्न तप रहा है, कहीं खनिज पदार्थ तप रहा है, मुनिवरो! देखो, वही तो मानव का एक दुग्धाहार के रूप में परिणत करने लगता है। उसी के द्वारा बेटा! देखो, विज्ञानवेत्ता खनिज को जानते हैं तो राष्ट्रों का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! विज्ञान की धाराओं का जन्म होने लगता है और उसी धारा को जो अपने में धारण करने लगता है अन्नाद के रूप में वही तो भोज बना हुआ है। उसी के द्वारा ही तो यह मानव का जीवन संचालित और उद्बुद्ध होकर के ऊर्ध्वा गति को प्राप्त करता हुआ मेरे पुत्रो! देखो, वही तो परमाणुओं का समूह बनकर के, मानव का शरीर विशाल बन जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं अपने विचारों को दूरी नहीं ले जा रहा हूँ विचार केवल ये कि हम माता वसुन्धरा की याचना कर रहे है। हे माता! तू वसुन्धरा के रूप में वर्णित की जाती है। जब माता के, जननी के गर्भ से पृथक् होता है तो मानव इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करता है, इसमें बस जाता है और इसके नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थो को वो धूने लगता है। जैसे बेटा! देखो, गौ का दूध धूने वाला, धू करके उसका पान करके आनन्दित होता है। उसी प्रकार माता वसुन्धरा इस पृथ्वी को धूने के पश्चात् इसके गर्भ में प्रवेश करती है। कहीं बेटा! देखो, स्वर्ण के परमाणुओं का आदन प्रदान हो रहा है। कहीं रत्नों की धातुओं का निर्माण हो रहा है कहीं बेटा! नाना प्रकार का धातु पिपात अपने में अर्पित हो रहा है। विचार क्या, जब बेटा! वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में प्रवेश करते हैं तो मुनिवरो! इसके गर्भ स्थल में देखो, कहीं नाना प्रकार के जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है जो वाहनों में क्रिया कलाप कर रहा है। मानो देखो, कहीं इसके गर्भ में नाना प्रकार की धातुएँ एक दूसरे का मिश्रण होती, अपने में अपनेपन को दर्शा रही है और यह वर्णन कर रही है कि मैं मानो देखो, इस के गर्भ में प्रवेश कर रही हूँ।

प्रभु की कृपा

तो मुनिवरो! देखो, इसको जानकर के वैज्ञानिक—जन विज्ञानवेत्ता बनते हैं। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अन्नाद को पाकर के अपने में सुखद अनुभव करते है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह मेरी कैसी प्रिय माता है। हे माता! तेरे ही गर्भ स्थल में नाना प्रकार के अन्न की उत्पत्ति होती है। मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है बेटा! एक पौधा उत्पन्न होता, उस पौधे पर दो प्रकार का अन्न है। एक अन्न को मानव पान करता है तो एक को पशु पान करता है। और एक पशु पान करके दुग्ध दे रहा है। मानव पान कर रहा है तो ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। कैसा विचित्र है मेरे प्यारे प्रभु का ये विज्ञान, जिसके ऊपर हमारे यहाँ बेटा! परम्परागतों से अन्वेषण होता रहा है। और मानव विचारता रहा है और अन्त में विचारते, विचारते बेटा! यह एक रहस्य बना हुआ है। अन्तिम एक रहस्य भी बन जाता है।

उत्पत्ति का मूल

परन्तु देखो, इन विचारों में विशेष न जाते हुए, विचार केवल यह कि माता पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की अग्नियाँ प्रदीप्त होकर के मानों नाना प्रकार का जल देखो, अपने में प्रवाह करता हुआ और सूर्य की नाना प्रकार की, चन्द्रमा की काँति से और उसके प्रकाश के द्वारा बेटा! देखो, इस में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ को उत्पत्ति का एक मूल बना रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा नहीं, वह मेरी प्यारी वसुन्धरा है जो हमारा कल्याण करने वाली है। हे माँ! तेरी ही महिमा मानो हम अपने में सदैव धारण करते रहे जिससे हमारा जीवन उद्बुद्ध होता रहे। तो मेरे प्यारे! देखो, जिस प्रकार ये पृथ्वी विज्ञानवेताओं ने जिस भी काल में, विज्ञानवेत्ता हुए है, उसी काल में गुरुत्व और परमाणु के ऊपर अनुसंधान किया है और गुरुत्व परमाणु का अनुसंधान करते रहते तो मेरे प्यारे! लोक लोकान्तरों की उड़ाने—उड़ने लगे। इसी प्रकार देखो, जैसे ये माता वसुन्धरा है इसकी उड़ान उड़ने वाला, विज्ञानमयी उड़ान उड़ रहा है। इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो, वह जो मेरी प्यारी माँ—प्रभु है जो निर्माणवेत्ता है, निर्माण कर रहा है वह ममत्व को धारण करने वाली बेटा! वेद उसकी गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है। और ये कह रहा है वर्णनं ब्रहे कृतम् मानो देखो, वह वरणीय है उसे हमें वरणा चाहिए, उसकी उपासना करनी चाहिए।

ब्रह्माण्ड का सूत्र

मेरे प्यारे! देखो, वही तो एक दूसरे में तारतम्य, वही तो इस ब्रह्माण्ड का सूत्र बना हुआ है जैसे माला में भिन्न—भिन्न प्रकार के मनके जब पिरोये जाते हैं तो बेटा! उसमें एक सूत्र होता है और उस सूत्र के ऊपर एक सुमेरू होता है। तो वो माला बन जाती है। इसी प्रकार नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों को बेटा! एक सूत्र में पिरोएँ हुए है। परन्तु ब्रह्म को सुमेरू की भाँति देखो, अपने में धारण कर रहा है। परन्तु वह स्वतः सुमेरू की भाँति रहता है।

आनन्दमयी धाराएँ

तो मेरे पुत्रो! विचार क्या, आज जब हम इन विचारों को लेते है कि वह माता वसुन्धरा कहलाती है। जब पृथ्वी माता के गर्भ से यह मानव पृथक् हो जाता है, इससे भी उपराम हो जाता है तो यह प्रभु की आनन्दमयी धाराओं में परिणत हो जाता है और उसमें, अपने में आनन्द अनुभव करने लगता है। वह मेरा प्यारा प्रभु, जो संसार का नियन्ता वेदज्ञ ज्ञान को प्रकाश के रूप में, प्रकाशित करने वाला है। जो मानव के अन्तः करण को पवित्र बनाता है। मानव की प्रवृत्तियों को महान बना देता है वह कैसा अनन्तमयी कहलाता है।

ब्रह्म की गाथा

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, वह प्यारी माता के रूप में प्रभु स्वीकार किया गया। तो आओ, मेरे पुत्रो! देखो, मैं दूरी न चला जाऊँ विचार केवल ये है कि हम उस माता मानो देखो, प्रभु की गाथा गाने वाले, अनन्य मंत्र है जो उसकी गाथा गा रहे है। एक दूसरा जैसे बेटा! यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। जिस भी काल में विज्ञानवेता पनपे है और इस गुरुत्व परमाणु के ऊपर अन्वेषण किया और गुरुत्व परमाणु को लेकर के तरलत्व, तेजोमयी तीनों परमाणुओं से उद्बुद्ध होकर के वैज्ञानिक जन बेटा! देखो, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते रहे है। और देखो, भिन्न—भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ते रहे है। तो विचार इसी प्रकार जैसे बेटा! यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार जैसे माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है उसी प्रकार मुनिवरो! देखो, यह वेद मंत्र उस ब्रह्म की गाथा गा रहे है। परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है।

तो आओ मेरे प्यारे! वह माता वसुन्धरा कहलाती है। हे वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है, हम तेरे में ही वशीभूत रहते है। परन्तु हमें सु बनाकर के इस सागर से पार ले जा। तो मेरे प्यारे! देखो, ये वेद का मंत्र अपने में बड़ा विशिष्ट आभा में हमें परिणत कर रहा है और प्रेरित कर रहा है। और ये कह रहा है कि ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक माता के गर्भस्थल में वशीभूत रहता है वो चेतना है, चैतन्य देव है वो पिण्डरूप में, जड़वत् रूप में भी वो चैतन्य के रूप में भी मानो सदैव निहित रहता है।

जीवन का लक्ष्य

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा था, विचार यह चल रहा था कि परमपिता परमात्मा का ये जगत् बड़ा अनूठा है, बड़ा विचित्र है जिसके ऊपर विचार करते रहते है। मानो अंधकार छाया हुआ है, मानो तारामण्डलों की आभा में बेटा! निहित हो गया है। तारामण्डलों को गणना में ला रहा है, विचारता रहता है। परन्तु वैदिक आचार्यो ने ये कहा कि वसुन्धरा के सर्वत्र चिन्तन करने का मानो देखो, वृत्त क्या है? तो वेद का ऋषि कहता है। मृत्युंजयं ब्रह्माः लोकाम् वेद का वाक् कहता है कि मृत्यु को विजय करने के लिए ये सर्वत्र जितने भी क्रियाकलाप है ये मानो इसलिए करता रहता है, चिन्तन में लगा रहता है, मनन करता रहता है और वेद मंत्रों की प्रतिभा में लगा रहता है। इसलिए कि मृत्य न आ जाए, अन्धकार न आ जाए जीवन में। लक्ष्य केवल ये है कि अंधकार नहीं आना चाहिए।

अन्धकार का अभिप्राय

बेटा! अंधकार क्या है? अंधकार कहते हैं बेटा! अज्ञान को। और अज्ञान उसे कहते हैं जो मेरे प्यारे! आलस्य और प्रमाद में परिणत कर देता है। तो मुनिवरो! वैदिक आचार्यों ने कहा कि तुम मृत्यु से विजय होने का प्रयास करो, कि मृत्यु है क्या? मेरे प्यारे! जितना भी ज्ञान है, माता वसुन्धरा की प्रतिभा है

कि जितना भी बेटा! देखो, उसका विश्लेषण है कि वो मानो अपने मस्तिष्क से इसीलिए कर रहा है, विचार रहा है, विचारता रहता है कि शून्यता में शून्य बिन्दु में जाने के लिए शून्य बिन्दु को प्रतिभा में लाने के लिए। मेरे प्यारे! देखो, उससे अंधकार न आ जाए क्योंकि यदि अंधकार आ गया तो मृत्यु से भयभीत हो जाएँगें। और मृत्यु आने पर देखो, मानव, मानव नहीं रहता।

माता का मौन

जैसे बेटा! एक माता व्याकुल हो रही। देखो, एक दार्शनिक उसके समीप पहुँचा और दार्शनिक ने कहा – माता! तू व्याकुल क्यों हो रही है? माता कहती है – मेरा पुत्र था, परन्तु वो मृत्यु को प्राप्त हो गया है। तो दार्शनिक कहता है – हे माता! ये शरीर मृतक हो गया या आत्मा मृतक हो गया है। अब मुनिवरो! देखो, माता मौन हो जाती है। माता यदि यह कहती है कि शरीर मेरा पुत्र है तो शरीर तो शव के रूप में विद्यमान है और यदि माता ये कहती हैं कि आत्मा मेरा पुत्र है तो आत्मा को तो माता जानती ही नही, कितना आकार वाला है कि कितना चैतन्य रूप कहलाता है परन्तु वो क्या है इसको माता नहीं जानती तो अन्त में मौन हो जाती है।

तो विचार आया कि अज्ञानां ब्रह्मणं ब्रहे कि अज्ञान है इस अज्ञान से ही दूरी होना है। तो ऋषि कहता है कि बेटा! अज्ञान से कैसे दूरी होंगें? अज्ञान से जब दूरी होंगें जब मानो देखो, हम एक दूसरे में, माता वसुन्धरा के गर्भ को जानते हुए, पृथक् होते हुए अन्त में देखो, प्रभु की चेतना के गर्भ में हम प्रवेश कर जाए। मेरे प्यारे! देखो, हम एक दूसरी माता के गर्भ में प्रवेश होते हुए जानकारी के लिए, उनको जानते हुए और वह जो चेतनामयी जो संसार का मानो निर्माणवेत्ता है जो मानो आनन्दमयी है उस आनन्दमयी के गर्भ में हम प्रवेश हो जाएँ।

प्रभु का राष्ट्र

तो मेरे प्यारे! देखो, अज्ञान दूरी हो जाता है। और वही माता वसुन्धरा के रूप में, स्वरूप में मानो देखो, हम संसार को दृष्टिपात करने लगे। तो मेरे प्यारे! विचार क्या हे मन्मं ब्रह्मा वसुन्धराः मेरे प्यारे! वही तो माता वसुन्धरा कहलाती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा है, मुनिवरो! जो प्रभु है चैतन्य देव है। उसको जानना है उसकी आभा में परिणत होना है। मेरे प्यारे! देखो, अज्ञान क्या है? ज्ञान क्या है? अज्ञान का नाम तो मृत्यु कहलाता है और ज्ञान का नाम प्रकाश और जीवन कहलता है। मेरे प्यारे! देखो, जब हम परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत में प्रवेश कर जाते हैं तो वहाँ हमें आनन्द, प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिपात आता है और जब मानो देखो, हम अज्ञान में आते हैं तो मेरे प्यारे! आलस्य और प्रमाद में, निन्द्रा में, रात्रि में प्रवेश कर जाते हैं। बेटा! क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नहीं होती। बेटा! जब प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नहीं होती तो वहाँ आलस्य और प्रमाद भी नहीं होता। जहाँ आलस्य और प्रमाद नहीं होता, तो मेरे प्यारे! वहाँ मृत्यु भी नहीं हुआ करती और मुनिवरो! देखो, ब्रह्म प्रहे देखो, जहाँ प्रभु का राष्ट्रं ब्रह्माःजहाँ रात्रि नहीं है तो वहाँ अंधकार का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। तो प्रभु का जो राष्ट्र है वो ज्ञान में है, विज्ञान में, आध्यात्मिक वाद में प्रवेश कर रहा है। तो बेटा! देखो, वह ज्ञान की कुंजी कहलाती है।

योगेश्वर

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेषता में न जाता हुआ केवल विचार विनिमय क्या? मुनिवरो! देखो, अमृत की वृष्टि करने वाला चैतन्य देव है। अमृत की वृष्टि उसके नियमानुकूल बेटा! मानव को प्राप्त हो रही है। तो आओ मुनिवरो! देखो, आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विचार यह कि हम उस प्रभु को जानते रहें, और प्रभु के विज्ञान को जानते रहें और जितना विज्ञान देखो, माता के गर्भस्थल में तुम्हें शिशु के साथ प्रतीत होता है ऐसा विज्ञान मानो द्वितीय और बाह्य जगत् में मानो प्राप्त नहीं होगा। मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि, मेधा ऋतम्बरा और प्रज्ञावी इन्हीं की प्रतिभा को जानने से ही मानो देखो, योगेश्वर बन जाता है। जब इनमें प्राणों की पुट लगा देता है। तो मुनिवरो! देखो, बुद्धि और प्राणों का जब दोनों का समन्वय होता है तो योगेश्वर बन जाता है। प्राण को एक सूत्र में लाना प्रारम्भ कर देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह चेतना ब्रह्मणं ब्रहे कृतम् साहित्यों में भी बेटा! वो हमें प्रदीप्त होती दृष्टिपात आती है।

आओ मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा है मुनिवरो! देखो, वह प्राणं ब्रहे व्रतं देवाः वह प्राणेश्वर कहलाता है। जो प्राण का संचार करने वाला है। माता नहीं जानती कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है आपोमयी ज्योति ही तो जीवन और देखो, प्राणसत्ता को प्रदान करने वाली है। मेरे पुत्रो! कैसा अद्भुत उस प्रभु का यह ब्रह्माण्ड है। मानो देखो, जब मैं माला के सम्बन्ध में विचारने लगता हूँ कि गुरुत्व परमाणु के ऊपर अनुंसधान करने वाला, अनुसंधान करता हुआ माला को धारण करने लगता है। तो एक दूसरे में ये ब्रह्माण्ड, एक माला के रूप में दृष्टिपात आता है।

मुझे बेटा! विज्ञानवेत्ताओं के समीप विद्यमान होने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है तो ऐसा प्रतीत होता है कि विज्ञानवेत्ता अपने में कितना अनुसंधान करने रहते है। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के गुरुत्व परमाणु को जानना। यह ब्रह्माण्ड को सबसे प्रथम एक मानो देखो, ये चुनौती प्रदान की जाती है कि ये गुरुत्व परमाणु अग्नि बन करके यहीं संसार की माला बन करके रहते है। इसीलिए जिस भी वैज्ञानिक ने अब तक विज्ञानवेत्ता बनने का साहस किया उसने गुरुत्व परमाणु के ऊपर अनुसंधान किया। जिसके ऊपर बेटा! परम्परागतों से मानव अन्वेषण और अनुसंधान करता रहा है और करता रहेगा, जब तक यह सृष्टि इस रूप में हमें दृष्टिपात आती रहेगी।

तीस लाख पृथ्वियों की माला

तो मेरे प्यारे! देखो, माला कैसे पिरोई जाती है। विचार आता है जब वैज्ञानिकों के, विज्ञान के युग में प्रवेश करते हैं या महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ उद्यालक गोत्र में शिकामकेतु उद्यालक के गृह में प्रवेश करते हैं तो वहाँ विज्ञान एक ऐसा दृष्टिपात आता कि सबसे प्रथम देखो, पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण किया, वसुन्धरा के गर्भ में चले गए और परमाणुवाद में जाते–जाते बेटा! गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो गए। मानो देखो, उनकी माला बना करके सूर्य के रूप में प्रवेश हो गए। वेद का आचार्य यह कहता है, बेटा! शिकामकेतु उद्यालक ने यह कहा है कि 30 लाख पृथ्वियों की माला बनकर के सूर्य धारण करने वाला है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि मुनियों का जो कथन वैदिक साहित्य के आधार पर उद्घृत होता है तो वह बड़ा विचित्र कहलाता है।

प्रभु महिमा की गाथा

आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए और माता वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश हो जाएँ बेटा! जैसे माता का पुत्र, माता का वर्णन कर रहा है जैसे पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार बेटा! प्रत्येक वेद मंत्र प्रभु की गाथा गा रहा है। यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक्, उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि हम माता वसुन्धरा की गोद में जाने का प्रयास करें और ज्ञान और विज्ञान में रत हो करके, अज्ञान को त्याग करके, प्रकाश में रत हो जाएँ। जहाँ हम बेटा! आत्मवान बन करके प्रभु का दर्शन कर सकें। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँ।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि जितना भी यह जड़ जगत् और चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। ये है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा मैं तुम्हें इससे आगे की शेष चर्चाएँ कल प्रकट कर सकूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन। **ओ३म् ब्रह्म गणः आ पा रथं ब्रह्मगणःवाचन्नमम् ओ३म् सर्व प्रभुःसर्वत्रॅ वाचन्नमः वमः ग्राहणत्वाः ओ३म् जनु गृहीता रेवं आप्यां लोकश्चमा रुद्रचमाः वायाः** अच्छा भगवन्, आज्ञा। **दिनांक–15–04–1988**–आनन्दपुरी, मुजफ्फरनगर

७ महर्षि विश्वामित्रःराजर्षि से ब्रह्मर्षि 06–05–1988

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मंत्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, जिन वेद मंत्रो का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी

में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये है और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात् आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वे परमपिता परमात्मा ही दृष्टिपात आते रहते है। क्योंकि संसार की कोई ऐसी वस्तु नहीं हैं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। वह अनन्तमयी माने गये हैं और उनका ज्ञान और विज्ञान वह प्रायः अनन्तता में दृष्टिपात आता रहा है।

परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, वर्तमान के काल तक कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ है जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। इसीलिए हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की वृत्तियाँ प्रायः मानव को प्राप्त होती रही है। जितना भी ज्ञान और विज्ञान है वह मानो दो रूपों में विभक्त हो गया है एक भौतिकवाद है तो एक आध्यात्मिकवाद है। मानो दोनो प्रकार के वादों में, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, मानव इसके ऊपर अन्वेषण करता रहा है और विचारता रहा है, कि ये जो परमपिता परमात्मा का जो अनूठा जगत है मानो देखो, जिस स्थली पर रचना हो रही है उस स्थली वाले को भी ज्ञान नही हो रहा है। अन्तरात्मा मानो देखो, जिस स्थली पर पंचमहाभूतों के लोक में वास करता हैं उसे यह प्रतीत नही है।बेटा! कैसी अनन्तता है। मानो सृष्टि के प्रारम्भ से मानव इन वाक्यों के ऊपर विचार विनिमय करता रहा है और विचारता हुआ बड़ी ऊर्ध्वागति में प्रवेश कर जाता है। परन्तु अन्त में जो वह जान लेता है तो मौन हो जाता है। कैसी विचित्रता है?

वास्तविक निर्माणवेत्ता

इसीलिए परमपिता परमात्मा का ये जगत बडा अनूठा है। अरे, एक अनुपम है। माता के गर्भस्थल में, मानो निर्माण हो रहा है। हम जैसे शिशुओं का निर्माण हो रहा है। निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। परन्तु उस मेरी भोली माता को प्रतीत नहीं, है कि कौन निर्माण कर रहा है। मानो निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। जिस स्थली पर हो रहा है, उसको ये प्रतीत नहीं, कौन निर्माणवेत्ता है। माता के गर्भस्थल में जब निर्माण हुआ, तो मानो देवताओं का एक वास बन गया, देवताओं की एक स्थली बन गयी और वह देवता अपना, अपना क्रियाकलाप कर रहे है। परन्तु माता को प्रतीत नही, कि कौन अमृत दे रहा है? कौन तेजोमयी बना रहा है? मेरे प्यारे! कौन प्राणों को प्रदान कर रहा है। कहाँ नस नाड़ियों का निर्माण हो रहा है।

माता के गर्भस्थल में सर्वत्र विज्ञान

वैदिक साहित्य में यह आया है कि 72 करोड 72 लाख 10 हजार 202 नाड़ियों का निर्माण हो रहा हे। परन्तु मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है, कि कौन निर्माण कर रहा है। कहीं हृदय का निर्माण हो रहा, है, कही मेघा, ऋतम्बरा और प्रज्ञावी इन बुद्धियों का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! वह प्रभु कितना अनन्तमयी रचयिता है, एक आनन्दवत् है। जिसके ऊपर, हमारे यहाँ ऋषि मुनि ये विचारते रहे है कि ये संसार अपने में कितना अनूठा और कितना विचित्र माना गया है। एक दूसरे का सहयोग, एक दूसरे की प्रतिभा में यह जगत लगा हुआ है। लोक लोकान्तरों में चले जाओ, उसकें विज्ञान में, माता के गर्भस्थल में तो सर्वत्र संसार का, जितना भी विज्ञान की प्रतिभा है वह वहाँ निहित हो रहा है। ये परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी विज्ञान है।

ब्रह्म का सूत्र

मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत में जब लोक लोकान्तरों में मानव प्रवेश करता है, तो मुनिवरो! एक मण्डल दूसरे का सहायक बना हुआ है।जैसे प्राणीमात्र एक दूसरे की आभा में मानो आभायित हो रहा है। इसी प्रकार ये लोक लोकान्तर भी मानो एक दूसरे में आभायित हो रहे है। एक दूसरे का सहयोग दे रहे है और वे मानो देखो, एक सूत्र में सब सूत्रित हो रहे है। वह सूत्र ही मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म माना गया है। वे परमपिता परमात्मा माने गये है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, इस सम्बन्ध में। आओ, आज हम बेटा! देखो तुम्हे तपस्या के सम्बन्ध में, बहुत–सी चर्चाएँ होती रहती है परम्परागतो से बेटा! मानो तपस्वी,अपने में, तपो में मानो सदैव तत्पर रहते है और मुनिवरो! नाना प्रकार की आभा में आभायित रहे है। परन्तु जब ये चिन्तन और मनन का एक विषय बन जाता है कि वह परमपिता परमात्मा अनन्त और विश्वस्तर मानो देखो, उसी में रत रहते है। तो मुनिवरो! देखो, इसी आभा को लेकर मैने बहुत पुरातन काल में तुम्हे यह निर्णय देते हुए कहा था कि यह संसार अपनी, अपनी स्थलियों में मानो अपनी, अपनी आभा में आभायित हो रहा है, गतिवान हो रहा है। इसीलिए मानव को भी देखो, जानते, जानते अपने में आत्मवान् बनना चाहिए। मैं आत्मवान् की चर्चा कई समय से बेटा! देखो, हम उदगीत रूपो में गाते रहते हैं और विचारते रहते है कि ऋषि, मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके मानो एक, एक वेद मंत्र के ऊपर अनुसंधान अथवा अन्वेषण करते रहे है।

महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ संवाद

तो मेरे प्यारे! देखो, आओ मैं तुम्हे उस काल में ले जाना चाहता हूँ, जिस काल में बेटा! देखो, महर्षि विश्वामित्र अपनी उपाधि को प्राप्त हो गए थे। उपाधिवत् बन करके मानो देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, माता अरून्धती मेरे पुत्रो! देखो, जब यहाँ धनुर्याग की विवेचनाएँ होती, तो मुनिवरो! देखो, महर्षि विश्वामित्र अस्सुतं ब्रह्माः जब ब्रह्म उपाधिवादी को प्राप्त हो गए तो मेरे प्यारे! देखो, वे नम्र बन गए। चरणों में ओत–प्रोत हो गए ऋषि के, तो उस समय बेटा! ब्रह्मणं ब्रहे मानो उसके पूर्व जब वे ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए तत्पर हुए तो माता अरून्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज, अपने चन्द्रमा की मानो आभा में मानो रत हो रहे थे। माता अरून्धती यह उदगीत गा रही थी कि हे प्रभु! ये चन्द्रमा अपनी कितनी सम्पन्न कलाओं से युक्त है। मानो ये चन्द्रमा अपना प्रकाश दे रहा है, और यही चन्द्रमा मानो ब्रह्मे व्रतम् ये इसका समुद्रों से समन्वय रहता है। हे प्रभु! कितना प्रकाशमयी है।

महर्षि विश्वामित्र को राजर्षि का सम्बोधन

तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज मानो उस समय, उसी दिवस महर्षि विश्वामित्र को राजर्षि उच्चारण कर गए और उन्होने महर्षि विश्वामित्र ने अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि आज मैं इस ब्रह्मवेत्ता को मृत्युदण्ड दूँगा। ये मानो देखो, अपने में अभिमानी है। वह एक वाटिका में निहित हो गए थे, कि जब ये निद्रा की गोद में जाएँगे तो मैं इन्हे मृत्यु दण्ड दूँगा। मेरे प्यारे! देखो, वह शांत थे।

महर्षि विश्वामित्र की तपस्या का प्रकाश

परन्तु महर्षि वशिष्ठ और माता अरून्धती का विचार विनिमय हो रहा था, तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा कि हे देवी! यह जो चन्द्रमा का मानो ऋषि व्रत्तं ब्रह्माः ये जो प्रकाश है यह महर्षि विश्वामित्र की तपस्या के आगे मानो ये प्रकाश कोई प्रकाश नही है। मानो यदि सहस्र चन्द्रमा भी प्रकाश वाले आ जाए इस प्रकार के परन्तु महर्षि विश्वामित्र के तप के आगे वह न होने के समान है। उनके तपों का प्रकाश इतना अद्वितीय है, इतना महान है कि वे प्रकाश में रत हो रहे है।

नम्रता से प्रभु का द्वार

मेरे प्यारे! देखो, माता अरून्धती बोली–हे प्रभु! आप बडे विचित्रतम् है। मानो जो आपको अशुद्ध वाक् उच्चारण करते रहते है आप उनकी प्रशंसा कर रहे है। उन्होने कहा–देवी! मैं उनके अवगुणों की प्रशंसा नही कर रहा हूँ, गुणों की प्रशंसा कर रहा हूँ। प्रत्येक मानव का ये कर्तव्य है, कि वह दूसरों के गुणो को अपने में ग्रहण करते रहे और जो मानो अशुद्धं ब्रह्मा व्रतो देवाः मानो जो इस प्रकार का नृतः वृहस्सुति जो व्रत होता रहता है। मानो देखो,इसकी हमे अवहेलना करनी चाहिए। अव्रत की अवहेलना है और व्रत का पालन करना है। तो हे देवी! उनका जो व्रत है, तपस्या का जो अनुष्ठान है, मैं उसकी प्रशंसा कर रहा हूँ। परन्तु मैं उनके अवगुणों की प्रशंसा नही कर रहा हूँ। क्योंकि उनमें अवगुण है वे नम्रता नहीं ला सके अब तक। क्योंकि मानव तपस्या करता रहता है, इद्रियों को संयम में लाता रहता है। परन्तु इद्रियों को संयम में लाने के पश्चात् भी यदि उसमें नम्रता नही होती तो वह प्रभु के द्वार पर नही

जा पाता। क्योंकि वह जो प्रभु है वह नम्र है, वह निरभिमानी है। मानो देखो, जो साधक अपने में अभिमान करता है। वह भी प्रभु के द्वार पर नहीं जा सकता देवी! क्योंकि वे परमपिता परमात्मा निरभिमानी है इसलिए जो भी साधक जन है। वे निरभिमानी बन करके प्रभु के समीप जाएँ।

ब्रह्मवेत्ता

तो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले–देवी! हे दिव्या से! मैं यह वर्णन करता रहता हूँ। सदैव हमारा ये एक व्रत रहा है क्योंकि हम ब्रह्मवेत्ता कहलाते हैं। हमें मानो प्रभा मानो देखो, बुद्धिजीवी प्राणी हमें ब्रह्मवेत्ता कहते है। ब्रह्मवेत्ता वह होता है जो मानो देखो, ब्रह्म जैसे गुणों को मानो देखो, उसकी प्रतिभा में वो रत हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि छाई हुई है, परन्तु देखो, अन्धकार स्थली पर एक साधक अपनी स्थली पर विद्यमान रहता है। परन्तु वह तारामण्डलों को गणना में ला रहा है और उन तारामण्डलों को गणना में लाता हुआ, उनकी आभा में आभायित हो रहा है। तो मानो देखो, ब्रह्म की रचना को, अपने में ध्यानावस्थित हो रहा है। क्योंकि ब्रह्म की रचना इतनी विचित्र है कि उसकी आभा में सदैव रत रहता है।

जीवन में तप

मेरे प्यारे! देखो, वह साधक कहलाता है। इसीलिए कोई भी मानव, संसार में बह्मवेत्ता बनना चाहता है तो नम्रता की आवश्यकता है। क्योंकि परमपिता नम्र है। परमपिता परमात्मा सृष्टि की रचना में मानों वो रचनाकार है। रचना करके उसकी पालना कर रहे है। तो वह रचना भी कर रहे हैं, पालना भी हो रही है तो इसीलिए वो नम्र है। इसीलिए मानव को अपने जीवन में, तपों की रचना में रचित हो जाना चाहिए। परन्तु तपस्या तो मानो देखो, जब उसमें, नम्रता का विधान हो जाएगा तो वह मानव ब्रह्म के समीप पहुँचने का प्रयास करता रहता है।

चन्द्रमा का प्रकाश

तो आओ, मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने माता अरून्धती से कहा कि हे दिव्या! तुम्हे यह प्रतीत हो गया, मैं उच्चारण कर रहा हूँ कि ये चन्द्रमा मानो प्रकाश दे रहा है। पूर्णिमा का चन्द्रमा है जो सम्पन्न कलाओं से युक्त है। ये समुद्रों से मानो देखो, अमृत को ग्रहण करता है। उसी अमृत को बिखेरता रहता है। वो जगत में देता रहता है। जो पृथ्वी के गर्भ में, वसुन्धरा के गर्भ में जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ तप रहा हैं मानो देखो, ये अमृत बना रहा है। जैसे वनस्पतियाँ है, नाना प्रकार की वनस्पतियों में यह रस प्रदान कर रहा है, अमृत दे रहा है। उसी अमृत से मानो देखो, ऊर्ध्व गतियों में प्राप्त होते रहते है।

महर्षि विश्वामित्र में नम्रता की सूक्ष्मता

तो मेरे प्यारे! देखो, जब माता अरून्धती से महर्षि वशिष्ठ मुनि ने यह कहा कि हे देवी! इसी प्रकार ब्रह्मणं ब्रह्मे कृतं ऋषि वरूणाः मानो ये जो ऋषि है, ब्रह्मवेत्ता बनने में सूक्ष्मता है क्योंकि नम्रता की सूक्ष्मता है। देखो, ज्ञान अपार है। जितना ज्ञान होना चाहिए वो ज्ञान भी है, अन्तःकरण भी पवित्र हो गया है, प्रकाश में चला गया इंद्रियों ने अपने–अपने विषयों को, इद्रियों के विषयों को जान गया है कि नेत्रों का क्या विषय है, घ्राण का क्या विषय है मानो श्रोत्रों का क्या विषय है सब देवता, और उपदेवताओं को जानने वाले ये बन गए है, परन्तु नम्रता की सूक्ष्मता है।

मेरे प्यारे! देखो, माता अरून्धती बोली कि–प्रभु! ये मैं बडी विचित्र आपसे गाथा श्रवण कर रही हूँ मानो आप इतने उदार है, इतने महान है। कि मानो देखो, वे कितने आपको अशुद्धता में परिणत करते रहते है। उन्होने कहा–देवी! यही तो नम्रता का एक सूचक कहलाया गया है। यदि नम्रता आ जाती तो वह अशुद्ध, देखो अरूणावलियों में प्राप्त हो जाते तो मानो वह अपनी वाणी से अशुद्ध उच्चारण नही कर पा सकते थे।

महर्षि वशिष्ठ द्वारा महर्षि विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि सम्बोधन

तो मेरे प्यारे! देखो, जब महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज यह उच्चारण कर रहे थे तो वाटिका में विद्यमान होने वाले, विश्वामित्र अपने में यह विचार रहे थे कि तू कितना पामर है, तू कितना धूर्त है। मानो देखो, एक ऋषि को तू नष्ट करना चाहता है और ऋषि के उद्‌गार कितने पवित्र है। मानो देखो, वह हदयग्राही है। मेरे प्यारे! देखो, अश्रुपात हो रहे है। वे वाटिका में विद्यमान हुए, ऋषि के अश्रुपात हो रहे है और अश्रुपात होकर के बेटा! अपनी वाटिका को उसने त्याग दिया और त्याग करके मुनिवरो! देखो, वे वशिष्ठ मुनि महाराज के चरणों में ओत प्रोत हो गए और ये कहा–कि प्रभु! मुझे क्षमा कर दीजिए, मैं बडा पामर हूँ।

उन्होने कहा–आइए, ब्रह्मर्षि जी! पधारिए। मेरे प्यारे! उन्होंने ब्रह्मर्षि जैसे ही उच्चारण किया मेरे प्यारे! उन्होने कहा–ऋषि! अब तुममें नम्रता आ गई है। देखो, तुम्हारा जो जीवन है वो अब नम्र होकर के प्रभु के समीप, ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए तत्पर हो गए।

आत्मा और ब्रह्म की प्रेरणा

तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब ये कहा–तो रात्रि का काल था। उन्होने कहा–हे ब्रह्मवेत्ता। जाओ, तुम अब विश्राम करो। मेरे प्यारे! महर्षि विश्वामित्र ने ऋषि की आज्ञा पाकर के अपने कक्ष में जा पहुचे, जहाँ उनके विश्राम का गृह था। मेरे पुत्रो! देखो, माता अरून्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज वार्ता प्रारम्भ करते रहे। उन्होने कहा–हे भगवन्! आज तो आपके चरणों की पादुका मानो उनके मस्तिष्क के द्वारा स्तुति, तो उन्होने कहा–हे देवी! यही तो मानो देखो नम्रता का एक अव्रत गुण कहलाता है कि एक मानव,एक स्थली पर मानो दैत्य बना हुआ है दूसरे क्षण जब आत्मा और ब्रह्म की प्रेरणा होती है तो वही देवतव को प्राप्त होता रहता है। तो हे देवी! वो देवता बन गए है। वो देवतव को प्राप्त हो गए है। वो ब्रह्म के निकटतम मानो जाने के लिए तत्पर होने लगे है।

अनन्तमयी जगत की विचित्रता

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने जब यह कहा तो मुनिवरो! उन्होंने कहा–प्रभु! आप तो धन्य है। आपकी वाणी, आपकी जो विचार शक्ति है वो बडी विचित्र है। वो बड़ी नम्र है मानो देखो, एक ऋषि के अन्तर्हृदय को कितना विश्वसनीय बना दिया है। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा–हे देवी! ये जो प्रभु का अनन्तमयी जगत तुम्हे दृष्टिपात आ रहा है इस जगत में प्रायः ऐसा ही होता है। मानो एक दूसरे में, एक दूसरा पिरोया हुआ है। एक दूसरा एक दूसरे को प्रेरणा दे रहा है और वह प्रेरित हो करके, अपने दुर्गुणों को त्याग करके वह गुणग्राही बन जाता है। हे देवी! आज जब हम यह विचारते है कि एक दूसरा सहायक है। जैसे तुम चन्द्रमा की वार्ता उच्चारण कर रही हो इस चन्द्रमा का जो समन्वय है, वह सूर्य से रहता है। सूर्य इसे उर्ज्वा देता है। इसे मानो महानता देता है। परमपिता परमात्मा की मानो ऐसी विचित्र रचना है कि इसी का समन्वय मानो देखो, अपने में शीतलता को प्राप्त करके, यह जल को अपनें में ग्रहण करता हैं और यही अमृत बना करके मानो वृष्टि रूप में परिणत करता है। ये रात्रि समय मानो देखो, उस अमृत को बिखेरते रहते है। माता के गर्भस्थल में क्या मानो पृथ्वी के गर्भस्थल में क्या, प्रत्येक मानो देखो, वनस्पतियो के गर्भ में जो भी वस्तु पनप रही है सब में मानो देखो, अमृत को बहाने वाला यह चन्द्रमा है।

परमात्मा की आभा

हे दिव्यासे! तुम्हे यह प्रतीत है। कि मानो देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम, जैसे शिशु मानो विद्यमान होते है तो यही देवता, ऐसा चन्द्रमा है, जो अमृत को देने वाला है। अमृत को बहाता रहता है। मानो देखो, माता की रसना के निचले विभाग में, एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है। उस नाड़ी का समन्वय, माता की पुरातत वरिष्ठ नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत नाम की नाडी का सम्बन्ध एक मृचिका नाम की नाड़ी होती है, उस से होता है और उस नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है। वहाँ उस नाड़ी की पंच धाराएँ बनती है और पंच धारा बनकर के माता की नाभि में उन पांच नाड़ियों का समन्वय हो करके और जो बाल्य माता के गर्भ में पनप रहा है मानो देखो, उस की नाभि का और माता की नाभि का समन्वय होकर के बेटा! अमृत को

बहाया जा रहा है। वाह रे, मेरे प्रभु, तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब हम बेटा! इस विज्ञान की विवेचना में प्रवेश करते है तो मानो एक आभा, द्वितीय आभा वे इतनी अगणित हो जाती है कि हम गणना में नही ला सकते।

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या देखो, यह चन्द्रमा मानो सहायता कहाँ से लेता है? सूर्य से। मानो सूर्य कहाँ से सहायता लेता है? बेटा! ये द्यौ से लेता है। ये द्यौ से सहायता लेकर के, ये मानो देखो, तेजोमयी बिखेर रहा है। ये सूर्य मुनिवरो! देखो, ऊर्ज्वा दे रहा है और उस ऊर्ज्वा को ये प्राणी मात्र अपनें में पान करता हुआ बेटा! अपनें में महान बन रहा है, विचित्र बन रहा है। जिसके ऊपर हमारे ऋषि, मुनि मानो देखो, नाना प्रकार का अन्वेषण, अनुसन्धान करते रहे है।

वशिष्ठ और अरुन्धती मण्डलों का प्रभाव

तो मेरे प्यारे! विशेष विवेचना न देता हुआ, क्या माता अरून्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि के ये विचार विनिमय हो रहे थे मानो देखो, उन्होंने कहा–प्रभु! माता अरून्धती बोली–कि प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ कि मानो देखो, जैसे यह अरून्धती मण्डल और देखो, यह वशिष्ठ मण्डल कहलाता है। मानो देखो, दोनों का परस्पर क्या समन्वय रहता है? उन्होंने कहा–हे दिव्यासे! ये मानो देखो, एक वशिष्ठ मण्डल है और एक अरून्धती मण्डल कहलाता है। मानो देखो, ये दोनो मण्डल है। देखो, वास्तव में किस आभा में तुम जानना चाहते हो, मैं उस रूप को नही जान सका हूँ। उन्होंने कहा–हे प्रभु! सबसे प्रथम, मैं जब आचार्य के द्वारा अध्ययन करती थी तो मानो देखो, एक पोथी का निर्माण, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने किया था और उस सूक्ष्म–सी पोथी में मैंने यह अध्ययन किया था कि जितने मण्डलों का, जो धारा रूप में प्रकाश होता है वह माता के गर्भस्थल से उसका विशेषकर होता है। मानो देखो, मैं सबसे प्रथम तो यह जानना चाहती हूँ कि मानव के जीवन में, बाल्य के जीवन की रचना से इसका क्या समन्वय रहता है?

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा –हे देवी! मैंने भी कुछ वेद मंत्रो का अध्ययन किया। जिसके ऊपर मनन भी किया है। ऐसा मुझे प्रतीत है, ऐसा मुझे कुछ भान हुआ है कि वशिष्ठ और देखो, अरून्धती दोनों जो मण्डल है अरून्धती कहते है, जो बुद्धि का सूचक है। वशिष्ठ कहते है जो मानो देखो, बुद्धि में वरिष्ठ होता है उसका नाम वशिष्ठ कहलाता है। इसलिए दोनो का परस्पर जो समन्वय है मानो देखो, उसकी जो तरंगे चलती है, धाराएँ चलती है, मण्डलों की। माता के गर्भस्थल में क्या, मानो देखो, माता के ब्रह्मरन्द्र में एक नाड़ी होती है। उस नाड़ी का नाम वृत्तिका कहते है। वृत्तिका नाड़ी का समन्वय, माता की रीढ़ से होता है और रीढ़ से समन्वय होकर के जब वह मानो देखो, त्रिवर्धा से मानो देखो उस नाड़ी से, एक नाड़ी मानो पुनः ब्रह्मरन्द्र को, मस्तिष्क को गमन करती है और वह गमन करके, माता की रसना के और मानो देखो, तुरिता के, दोनो के मध्यम में उस नाड़ी का समन्वय होकर के मानो देखो, वह धराएँ आ रही हैं और जब माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु मानो देखो, अष्ट माह के होते है तो उस समय उनकी धराओं का, माता के मस्तिष्क से, बाल्य के मस्तिष्क का हम जैसे शिशुओं के मस्तिष्क का परस्पर जब समन्वय होता है तो उसकी धराओं से देखो, एक वशिष्ठ नाम की बुद्धि का, विशेष प्रकार से उसका निर्माण होता है। मानो देखो, उसका विच्छेद वृत्तिकाओं से रहता है।

अष्ट माह का गर्भ

तो ऐसा हमारे यहाँ कुछ अनुभव आया है। विचारा गया है कि अष्ट माह का गर्भ यदि माता के गर्भ से पृथक् हो जाए तो देखो, वो प्राणवर्धक नही होता। मानो देखो, उसका विच्छेद हो जाता है। शरीर और आत्मा दोनो का विच्छेद होकर के शून्यता को प्राप्त हो जाता है। हा, सप्त माह का विच्छेद नही हो पाता यह बडी विचित्रता है प्रभु की रचना की, मानो देखो, इस विचार में मैं तुम्हे ले जाना नही चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि मुनिवरो! देखो, विचारं व्रहे वृतम मानो देखो, देवत्तम् देखो, जब यह विचार में आ गया, माता अरून्धती ने यह स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा देवत्तम् मानो आचार्य के कुल में जब मैं अध्ययन करती थी तो मानो देखो माता सुलेलता मुझे यह वर्णन कराती रहती थी। महर्षि तत्व मुनि महाराज की विद्या से ऋषि पत्नी मुझे यह वर्णन कराती रहती थी और यह आपने भी मुझे उसी प्रकार का उतर दिया तो आपको धन्य है।

विश्वामित्र का अभिप्राय

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि से इस प्रकार विचार विनिमय होने लगा, तो बेटा! उन्हे इसी विचार में प्रातः काल हो गया। प्रातः काल होते ही मेरे पुत्रो! अपनी क्रियाओं से निवृत्त हुए और निवृत्त होकर के मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हो गए। ब्रह्मचारी अपनी क्रियाओं से निवृत्त होकर के वह भी और मानो देखो, अपनी क्रियाओं से निवृत्त होकर, महर्षि विश्वामित्र मेरे प्यारे! देखो, ऋषि के द्वार पर आए और ऋषि के चरणों की वन्दना करते हुए बोले –कि हे प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए। जो भी आप मुझे आज्ञा देंगे उन्हीं क्रियाकलापों में परिणत हो जाऊगा। मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले –कि हे अप्रतं मण्डलं व्रहे हे विश्वामित्र! तुम विश्व के मित्र हो। तुम मुझे उत्तर दो कि तुम्हे ये नामोकरण किसने दिया? उन्होंने कहा–प्रभु! जब मैं अनुष्ठान कर रहा था तो मानो देखो, महर्षि प्रवाहण और महर्षि शिलक मुनि ने ये अप्रतम् मुझे उपाधि प्रदान की, कि तुम विश्वामित्र बन गए हो और विश्व के मित्र बन गए हो। उन्होंने कहा कि विश्वामित्र कौन होता है? उन्होंने कहा विश्वामित्र वो होता है जिसके क्रियाकलापों में इतनी नम्रता, इतना विवेक हो मानो उसका कार्य इतना विचित्र हो कि वह सर्वत्रता में मित्रता का व्यवहार करे। तो वह विश्वामित्र कहलाता है।

मेरे प्यारे! उन्होंने पुनः कहा –कि हे ब्रह्मचारी! हे वृतम् मानो देखो, ये विश्वामित्र कौन होता है? ऋषि ने कहा– हे प्रभु! वास्तव में तो विश्वामित्र प्रभु ही है क्योंकि जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड का मित्र है ऐसा ही प्रकाश मानो देखो, अवृतो में परिणत करते रहते। ऐसा ही पृथ्वी में, ऐसा ही मंगल में, ऐसा ही चन्द्रमा में जो एक रसवत् हो वही मानो देखो, विश्व का मित्र कहा जाता है। वास्तव में मैं ये स्वीकार कर गया हूँ। परन्तु रहा ये, कि मुझे विश्वामित्र स्वीकार किया गया, तो मैं प्रभु की आभा में रत होना चाहता हूँ। प्रभु! अपने को, इस संसार से मानो त्रिवंधा में परिणत करता हुआ, प्रभु के समीप जाना चाहता हूँ। और जो प्रभु के समीप जाता है वो मानो देखो, अपनी अपनी जो इंद्रिया है जो इंद्रियाँ मानो देखो, पाप से बिंधी है वे भी पुण्य से परिणत होती हुइ ज्ञान और विज्ञान से पिरोई मानो देखो, वहाँ विश्व की मित्रता की वार्ता आ जाती है।

आत्मा का मित्र

मेरे प्यारे! उन्होने यह स्वीकार कर लिया। माता अरून्धती बोली–कि हे विश्वामित्र! मानो अब तुम ब्रह्मचारी हो या मानो देखो, तुम विश्वसनीय, विचित्र बन गए हो। तो मेरे प्यारे! उन्होने कहा–हे दिव्यासे! मैं आपके लिए तो मानो समय का वृत हूँ और परमपिता परमात्मा की आभा में, और उसके राष्ट्र में विद्यमान हूँ। परन्तु देखो, मैं ज्ञान का जिज्ञासु हूँ और विवेक मे मैं मानो देखो, परिणत होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा धन्यं ब्रहे वासवं बृहि व्रतम् कि हे विश्वामित्र! तुम्हे संसार के लिए, मानो जिस संसार में तुम रहते हो, उसमें तुम्हे विश्वामित्र कहते है। तुम विश्व के मित्र कैसे हो ? उन्होंने कहा–हे माता! मेरे शरीर में जो पंचमहाभौतिक मानो पिण्ड रूप में क्रियाकलाप हो रहे है वे मेरे संचार रूप से चलते हैं। तो मानो देखो, मैं ज्ञान और विज्ञान में रत रहता हुआ, उसी में रत रहकर, मैं विश्व की कल्पना कर सकता हूँ। मैं वास्तव में विश्व का मित्र नही हूँ। क्योंकि मैं अन्तरात्मा का मित्र बन गया हूँ तो मानो देखो, मैं विश्व का मित्र बन गया हूँ। मैं आपकी कृपा आनन्द से मैं मानो देखो, मैं आत्मा का मित्र बनना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, यह विचार आता है कि आत्मा का मित्र कौन होता है? आज के हमारे वैदिक साहित्य में मानो देखो, आत्मा की चर्चा आ रही थी। आत्मा की विवेचना आ रही थी। तो बेटा! देखो, आत्मा ब्रहे मानव को देखो, जब आत्मा ब्रह्मे व्रतम् जब आत्मा को जानने के लिए तत्पर होता है। तो मेरे प्यारे! वो संसार से ओझल हो जाता है। वे संसार से दूरी हो जाता है। एकोकी चरण रहता है। कि आत्मवान बनकर के मैं प्रभु के समीप जाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब प्रभु के हृदय, से मेरे हृदय का समन्वय हो जाएगा तो मैं मानो देखो, विश्वामित्र के कुछ प्रकाश में मानो अपने अन्तःकरण को पवित्र बना सकूंगा जिससे मैं मानो निर्द्वन्द्व होकर के इस संसार की नाना प्रकार की आभाओं से परिणत होना चाहता।

राष्ट्र के प्रति कर्तव्य

मेरे प्यारे! माता अरून्धती के प्रश्नों का उत्तर यथावत् उन्होंने दिया तो उन्होंने व्रतम् मेरे प्यारे! देखो, पुनः विश्वामित्र ने आज्ञा पाई कि भगवन् हे वशिष्टो ब्रभ्ये दिव्या! मुझे आज्ञा दीजिए, मेरे लिए कोई आज्ञा हो तो मुझे उदगीत रूप में गाइये।

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे भगवन् हे विश्वामित्र! मैं तुम्हारे गुणों को जानता हूँ। तुमने अपने जीवन में जितना अध्ययन किया है, जितना क्रियाकलाप किया है, मैं उसको जानता हूँ। मानो देखो, तुम धनुर्विद्या में बड़े पारायण हो, मेरी इच्छा यह है कि तुम मानो देखो, दण्डक वन में चले जाओं और धनुर्याग की रचना करो और धनुर्याग को मानो देखो, अपने में क्रियात्मक लाना प्रारम्भ करो। जिससे देखो, हमारा सबसे प्रथम कर्तव्य है कि जिस राष्ट्र में हम गमन करते है, जिस राष्ट्र में हम मानो देखो, वायु सेवन करते है और जिस राष्ट्र का अन्न इत्यादि ग्रहण करते है, जल इत्यादि पान करते है तो मानो सबसे प्रथम उस राष्ट्र के लिए, कोई ना कोई मानो ऐसा क्रियात्मक, क्रियाकलाप करना चाहिए जिस क्रियाकलाप से राजा के राष्ट्र में कोई ना कोई, गुण प्रहे व्रतः देखो, अर्पित कर दें। जिससे राजा के राष्ट में एक महानता की ज्योति जागरूक हो जाए।

मेरे पुत्रो! देखो, विश्वामित्र ने यह स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा–प्रभु! मुझे राजकुमार चाहिए। मुझे मानो देखो, युवक, ब्रह्मचारी चाहिए जिसे मैं धनुर्विद्या प्रदान कर सकूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तो सबसे प्रथम मानो देखो, तुम दण्डक वनों में एक रचना रचो। उसके पश्चात् मानो देखो, हमारे विद्यालय में भी ब्रह्मचारियों को इस प्रकार की शिक्षा होनी चाहिए मानो देखो, इनके यहाँ भी एक धनुर्विद्या की रचना अवृत होनी चाहिए।

याग के प्रकार

हमारे यहाँ जहाँ नाना प्रकार की विद्याओं का वर्णन आता रहता है जैसे हमारे यहाँ देखो, कर्मकाण्ड की पद्धतियों में याग का वर्णन आता है और याग भी कई प्रकार के माने गए है जैसे अश्वमेघ याग है, अजामेघ याग है, गोमेघ याग है। मानो देखो, वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है ,वृत्तिका याग है, ब्रह्मयाग है, रूद्र याग है, विष्णु याग है, देवी याग है, कन्या याग है और भी भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन आता रहता है। परन्तु देखो, यह वैदिक साहित्य की तो हमें देन है और इसका वर्णन करते हुए नाना ऋषि मुनियों ने इसका बड़ा वर्णन किया है। यहाँ गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने 85 प्रकार के यागों को जानने का प्रयास किया। जो की वैदिक साहित्य से प्राप्त हुआ।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार की आभा में रत होकर के अपने में अपनेपन की आभा में सदैव हमें रत रहना चाहिए। मेरे प्यारे! उन्होंने ब्रह्मं व्रहते ये धनुर्याग भी एक याग कहलाता है। जहाँ ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करते रहे।

नम्रता में मानवीयता

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार ऋषि ने अपना व्रत करते हुए अपनी वर्णना वृत्तियो में मेरे प्यारे! आज्ञा पाकर के वो भयंकर वनो में चले गए और वे धनुर्याग के लिए तत्पर हो गए। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या आज के हमारे वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह मुनिवरो! देखो, ब्रह्मवेत्ता बनकर के अपनें में क्रियाकलापों में तत्पर हो जाए और महानता की ज्योति में रत हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, वो महान कहलाता है। अपने में नम्रता को लाना ही मानवीयत्व कहलाया गया है।

तो बेटा ! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा तो प्रकट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह है कि हमारे यहा विश्वं ब्रह्मलोकां वाचन्नमं व्रहे मेरे प्यारे! महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का विचार विनिमय होता रहता था। समय समय पर बेटा! ब्रह्म की चर्चाएँ और धनुर्याग की चर्चाओं का विषय तो हम कल ही उच्चारण करेंगे। आज तो इतना समय आज्ञा नही दे रहा है। कई समय धनुर्विद्या की चर्चाएँ की है आज भी मुनिवरो! देखो, हम धनुर्विद्या में जाना चाहते है। परन्तु देखो, अब यहाँ से याग का प्रारम्भ होगा।

मेरे प्यारे! आज का विचार क्या, मुनिवरो! देखो, ऋषि कहते है–हे मानव! तू नम्र हो करके ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में रत होकर के, तू अपने प्रभु को जानने का प्रयास कर, अपने में आत्मवान बनकर के प्रकाशवान हो। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूगा।

नम्रता में विवेक

आज के वाक् उच्चारण करने कर अभिप्रायः यह कि हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार का ज्ञान और विज्ञान, भिन्न भिन्न प्रकार की तपस्याओं का वर्णन और भिन्न भिन्न प्रकार के क्रियाकलापों का वर्णन प्रायः होता रहता है। तपस्याओं का और अनुष्ठानों का वर्णन भी होता रहा है। परन्तु जो ऋषि कहते है जब तक मानव में नम्रता नही आती, मानो ओजस्विता, विवेक नही आता तब तक मानव महान नही बनता। यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं तुम्हे बेटा! शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि परमपिता परमात्मा का ये जो जगत है यह बड़ा अनूठा है। ज्ञान और विज्ञान से गुथा हुआ है। जिस भी स्थली पर जाओ, वहीं ज्ञान और विवेक तुम्हें प्राप्त हो जाएगा। ये हे बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा, शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। **ओउम् देवाः यं रथा मां वृहिता वायाः ओउम् यश्चां ग्यौः आप्यां लोकं रथाः वायुरेताः** **अच्छा दिनांक–06–05–1988–** पानीपत, हरियाणा

८ **यमाचार्य, नचिकेता संवाद** **07–05–1988**

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रो का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात् आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते है। क्योंकि उनकी अनुपमता और महानता सदैव एक, एक वेद मंत्र में निहित रहती है।

हमारे यहाँ परम्परागतो से ही ऋषि, मुनि एकत्रित हो करके एक, एक वेद मंत्र के ऊपर अनुसंधाान करते रहे हैं और परमपिता परमात्मा का जो ये ज्ञान और विज्ञानमयी मानो जगत हैं इसके ऊपर वे अनुसंधाान और अपने में मानो अपनेपन का भान करते रहते है। परमपिता परमात्मा को पुरोहित माना है। क्योकि जो पराविद्या का नेतृत्व करने वाला है वे परमपिता परमात्मा पुरोहित के रूप में विद्यमान रहते है।

पुरोहित की उपासना

तो आओ, मुनिवरो! देखो, आज हम उस पुरोहित की उपासना और पुरोहित की महानता के ऊपर प्रायः हमारा विचार विनिमय होता रहा है और मानव अपनी बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ता रहा है। क्योंकि परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक उनके ऊपर अन्वेषण होता रहा है, मानव मुग्ध होता रहा हैं। उसके गर्भ में प्रवेश किया है और उसके गर्भ को जन्मं बह्मे वृतं देवाः उसके गर्भाशय को जानकर के ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ता रहा है।

तो आओ मुनिवरो! आज का हमारा वेद मंत्र बहुत ऊधर्वा में अपनी उड़ाने उड़ता रहता है। हमारे यहाँ साहित्यिक चर्चाओं में भी नाना प्रकार की उड़ाने होती रही है। परन्तु आज का हमारा वेद मंत्र क्या कह रहा है ? कि वे परमपिता परमात्मा पुरोहित है और हमारा कल्याण करने वाले है। मानो वो पराविद्या में हमें ले जाते है और उसका अवगाहन कराते रहते है। तो मुनिवरो! देखो, वे परमपिता परमात्मा अनुपम है और वे पुरोहित, जो पराविद्या में रत रहने वाले है।

माता की गाथा

तो मुनिवरो! आओ, आज का हमारा वेद मंत्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। मानो जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गाता रहता है। जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद मंत्र बेटा! परमपिता परमात्मा का वर्णन कर रहा है अथवा उसके गुणो का गुणवादन कर रहा है। माता अपने में ममत्वं ब्रह्माः मानो देखो, उसे माता कहते है जो वसुन्धरं ब्रह्मव्रताः जो अपने गर्भस्थल में बेटा! हम जैसे पुत्रों को बसाने वाली है। मानो देखो, माता जो ममतामयी की प्राप्ति होती है उसके गर्भ में, वो मानव ब्रहे हम जैसे शिशु विद्यमान रहते है।

तो माता की गाथा कौन गा रहा है। मानो पुत्र ही तो उसकी गाथा गाता है अथवा उसका वर्णन करता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक जब मानव यह अन्वेषण करने लगा, कि ये पृथ्वी, जो ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है अथवा ब्रह्माण्ड का वर्णन कर रही है। जब भी जिस भी काल में विज्ञान पनपा है उसमें गुरूत्व परमाणु के ऊपर अन्वेषण किया है और उसकी उड़ान उड़ता हुआ वह कितनी उधर्वा में गति करने लगा है। मानो अणु और परमाणुओं को लेकर के यह लोक लोकान्तरों की यात्रा में रत हो गया है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती है। परमात्मा का अनूठा ब्रह्माण्ड है और उसकी गाथा गाने वाला मानो देखो, अपनी वृत्तियों में रत हो करके ही उसका गुणगान गाया जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज मैं तुम्हे यह वर्णन कराने के लिए, कि हमारे यहाँ नाना ऋषियों के गोत्र हुए है और उन गोत्रों में मानो अपने क्रियाकलाप बड़े विचित्रता से होते रहें है। आज का बेटा! एक वेद मंत्र उद्‌गीत रूपों से ऐसा गा रहा है कि मानो अपने में उद्‌गीत गाता रहता हुआ अपनें में अपनेपन को दृष्टिपात करता रहा।

उद्यालक गोत्र के ऋषि

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे मानो देखो, ऋषियों के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। हमारे यहाँ नाना वंशलज हुए है जैसे हमारे यहाँ उद्यालक गोत्र हुआ है और उद्यालक गोत्र के जो ऋषि हुए है वे बडे विचित्रतम, महानता में सदैव गति करते रहें है।

तो आओ, मुनिवरो! आज मैं तुम्हे उद्यालक गोत्र में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! देखो, विश्वश्रवा की चर्चा आती है। मुनिवरो! देखो, उद्यालक गोत्र में बहुत से वंशलज हुए है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में शिकामकेतु उद्यालक हुए हैं जिन्होने बेटा! विज्ञान के माधयम से, शब्दो के आकार और शब्दो में जो क्रियाकलाप होते रहे है। मानो उनको दृष्टिपात करते रहे।

मोक्ष–जिज्ञासा

आओ, मेरे पुत्रो! मैं उन क्षेत्र में नही ले जाना चाहता हूँ। केवल यह कि महाराजा विश्वश्रवा एक समय बेटा! अपने आसन पर विद्यमान थे और आसन पर विद्यमान होकर के उनके मन में यह जिज्ञासा जागरूक हुई कि मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ। अब मुझे मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? मैं परमात्मा को किस प्रकार मानो उसकी लोरियों का पान कर सकूँगा? जैसे माता का पुत्र क्षुधा से पीड़ित हो रहा है। परन्तु माता अपनी आनन्दमयी लोरियों से उसकी क्षुधा को शांत कर देती है। उसी प्रकार मानो यह विचारने लगे, महात्मा ने यह विचारा कि मैं अपने को मोक्ष का गामी बनाना चाहता हूँ। अब ये मुझे कैसे प्राप्त हो, आनन्द कैसे प्राप्त हो?

महाराज विश्वश्रवा का सर्व द्रव्य से याग

मेरे प्यारे! देखो, इसी चिन्तन में वह अपने मनोनीत में, चिन्तन व्रतं ब्रह्माः वे मनन और चिन्तन कर रहे थे। अपने में यह विचार रहे थे कि यह कैसे मुझे प्राप्त हो? मेरे प्यारे! कही से महर्षि विभाण्डक भ्रमण करते हुए ऋषि के आसन पर विद्यमान हो गए और उन्होने कहा–प्रभु! क्या चिन्तन कर रहे हो? उन्होने कहा–प्रभु! मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं मोक्ष के लिए तत्पर ब्रहे, मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ। अब मैं यह विचार रहा हूँ कि ऐसा कौन–सा क्रियाकलाप है जिस क्रियाकलाप के द्वारा मैं प्रभु को प्राप्त कर सकूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होने ये विचारा, कि भगवन्! मेरा विचार यह आया है कि जब तक मैं द्रव्यपति, द्रव्य मेरे समीप है मानो मैं परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में रत नही हो सकता। इसीलिए मेरी इच्छा यह कि सर्व द्रव्य का याग कर दिया जाए।

तो महर्षि विभाण्डक मुनि ने कहा–प्रभु! यह वाक् तो आप का बहुत प्रियतम है। क्योंकि याग एक ऐसा कर्म है, ऐसा एक क्रियाकलाप है जिससे मानव की प्रवत्तियाँ, मानव के शब्द मानो सब द्यौ लोक में प्रवेश कर जाएँ मानो देखो, चित्राव्रणः व्रते।

तो महर्षि विभाण्डक ने कहा–प्रभु! एक समय हम महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में गए और महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में हमने एक याग किया था और वह यागं ब्रह्मे उन्होने वैज्ञानिक यन्त्रों का मानो निर्माण किया था। जिस निर्माणं ब्रह्मे जैसे हम स्वाहा उच्चारण करते थे। उसके शब्द मानो देखो, यंत्रो में हमें दृष्टिपात आते रहे। जिस शब्द ने हमारे यंत्र में प्रवेश किया, वह द्यौ–लोक को जा रहा था। यह हमने अपने में मानो गमन किया है, प्रभु! अब हमारी इच्छा यह कि आपका जो याग है वो सम्पन्न होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वश्रवा ने यह विचार लिया कि मैं याग करूगाँ और जितनी सम्पदा है उस सर्व सम्पदा को मैं याग में समर्पित करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, यह निश्चय हो गया। मुनिवरो! देखो, उनके यहाँ बहुत–सी गऊएँ थी, बहुत–सा द्रव्य था। उन सर्वत्र का मानो देखो, एक याग का उन्होने नृत किया। महर्षि विभाण्डक और महर्षि भिण्डीरेति मुनि महाराज भी देखो, उस आश्रम में विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होने नाना ऋषियो मुनियों को निमंत्रित किया और निमंत्रित करने के पश्चात् उन्होंने यज्ञशाला का निर्माण किया।

याग का निर्वाचन

यज्ञशाला का निर्माण हो गया। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि विश्वश्रवा याज्ञिक बनकर के, यजमान बनकर के मानो देखो, निर्वाचन करने लगे। सबसे प्रथम उन्होने ब्रह्मा का निर्वाचन किया। मेरे प्यारे! महर्षि विभाण्डक मुनि उस याग के ब्रह्मत्व को प्राप्त हुए और महर्षि भिण्डी मुनि महाराज बेटा! उसके मानो देखो, वह उद्‌गाता के रूप में परिणत हो गए और मेरे प्यारे! देखो, महर्षि स्वाति मुनि महाराज को उस याग का अध्वर्यु नियुक्त किया मानो देखो, याग का जब प्रारम्भ होने लगा तो बेटा! देखो, याग वरणं बह्मे कृतं यज्ञं भवितं ब्रह्मेः मानो देखो, याग अपने में ब्रह्मत्व को प्राप्त होने लगा। बेटा! याग तो अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है। हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक बेटा! देखो, याग का अपने में बडा महत्त्व माना गया है। याग अपने में अनूठा है। क्योंकि सृष्टि के गर्भ से इसकी निर्माण वृत्तियों को उन्होने धारयामि बनाया है।

ब्रह्माण्ड रूपी याग

जिस प्रकार बेटा! देखो, यज्ञ, यह ब्रह्माण्ड जो हमें दृष्टिपात आ रहा है यह भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। इसी यज्ञशाला में बेटा! देखो, जब सृष्टि के वृणं ब्रह्मा जब इसकी रचना होती है तो मानो देखो, ब्रह्मा स्वतः अपने में ब्रह्मणं ब्रह्मे देखो, परमात्मा ब्रह्मा बनते हैं। आत्मा, यजमान बनता है। पंच महाभौतिक सब ऋत्विज बनकर के एक अनूठा याग प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे! इसी क्रम को उन्होने बाह्य जगत में लिया। बाह्य जगत में भी देखो, इसी प्रकार का नृत मानो उसके क्रियाकलापों की, कर्मकांड की विशुद्ध पद्धति को अपना करके बेटा! उसी प्रकार का उन्होने नृत करना प्रारम्भ किया।

उपयोगी दान

याग जब प्रारम्भ हो गया तो मेरे प्यारे! देखो, अपने–अपने उपदेशों से एक दूसरे में अपने–अपने वेदो का गान गाते हुए, वेद प्रमाणं ब्रहे वे वेद के मंत्रो के द्वारा याग प्रारम्भ होने लगा। मेरे प्यारे! याग प्रारम्भ होता रहा, परन्तु देखो, जब याग कुछ समय पश्चात् सम्पन्न हुआ, निवृत्तियों में सम्पन्न हो गया। सम्पन्न हुआ तो बेटा! अब वह दक्षिणा का क्रियाकलाप किया जाता है। द्रव्य की आभा रह जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह गऊ इत्यादियों को अर्पित करने लगे, ब्राह्मणों को प्रदान करने लगे। जब प्रदान करने लगे तो मानो देखो, उनमें बहुत–सी गऊएँ वृद्ध, जिसको दूसरो को देने से लाभप्रद नहीं होता। उसमें एक पापाचार बन जाता है। तो मानो क्योंकि यहाँ तो परम्परा रही है

पुत्र–सम्पदा

बेटा! उनका एक बाल्य है मानो देखो, वह बाल्य केवल सात वर्ष का ब्रह्मचारी है। सात दिवस और सात वर्ष का ब्रह्मचारी मानो अपने पितर को दृष्टिपात कर रहा है। पितर देखो, जब दान देने लगे तो बहुत सी गऊएँ वृद्ध थी। उन्होने कहा–हे पितर! ये क्या कर रहे हो? जैसे तुमने याग किया, अब जिसको तुम समर्पित कर रहे हो गऊ इत्यादियों को, इनमें बहुत–सी गऊएँ वृद्ध है। इनको देने से तुम्हे लाभ नही होगा। इनमें और पापाचार बन जाएगा। क्योंकि वस्तु वह समर्पित करनी चाहिए जिस वस्तु का वो उपयोग कर सकें और अपने में धारयामि बना सके। भगवन्! आप यह क्या कर रहे है क्योंकि जब सर्व सम्पदा को आपने देखो, समर्पित करना है तो मैं, मानो माता–पिता का पुत्र भी एक सम्पदा होती है। आप मुझे किसे प्रदान करोगे?

पिता की आज्ञा

मेरे प्यारे! देखो, विश्वश्रवा ने आवेश में आ कर कहा–कि हे ब्रह्मचारी! मैं तुझे मृत्यु को प्रदान करूगाँ। मेरे प्यारे! देखो, जब मृत्यु का नामोकरण किया, तो वह बाल्य मौन हो गया। मेरे प्यारे! देखो, उनका वो कर्म चलता रहा। सांयकाल को वह सम्पन्न हुआ। जब याग सम्पन्न हो गया, दक्षिणा से निवृत्त हो गए। तो मुनिवरो! देखो, रात्रि का जब समय आया तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वश्रवा अपने आसन पर विद्यमान है। शांतचित्त अपने में मनन कर रहे है।

मेरे पुत्रो! देखो, वह बाल्य, बालक नचिकेता मानो उनके समीप पहुँचे और उन्होने कहा चरणों को स्पर्श करते हुए, प्रभु! हमारा जो गोत्र है, वो उद्यालक है।और उद्यालक गोत्र का जो निकास हुआ था वो हरितत् गोत्रों से हुआ था और हरितत् गोत्र का जो निकास हुआ वो अंग्रीरस गोत्रों से हुआ और अंग्रीरस गोत्रों का जो निकास हुआ वो वृत्तिका गोत्रों से हुआ और वृतिका गोत्रों का जो निकास हुआ है वो ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ। तो हे प्रभु! मानो देखो, इनमें बहुत से ब्रह्मवेत्ता और विज्ञानवेत्ता भी हुए है परन्तु आत्मवान भी बहुत से महापुरूष हुए। हे प्रभु! कोई ऐसा नहीं हुआ कि जिसके माता पिता ने जो वाक् कहा है, और बाल्य ने मानो पुत्र ने उसकी अवहेलना की हो। हे प्रभु! मैं आपके समीप आया हूँ। प्रभु! आप मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं मृत्यु को चला जाऊँ। मानो देखो, आप मुझे आज्ञा नही देगे तो ये मानो देखो, यह बडा अवृत्त होगा। क्योंकि हमारा जो वंशलज है यह बडा विचित्र रहा है। इसमें सब ने अपने माता पिता की आज्ञा का पालन ही किया है। कोई ऐसा नही हुआ जिसने माता पिता की आज्ञा की अवहेलना की हो।

मेरे प्यारे! देखो, बाल्य ने कोई अपराध तो किया नहीं था, तो उन्होने बालक नचिकेता के वाक्यों को पान करके कहा–जाओ, तुम मृत्यु आचारकं प्रवाहं ब्रहे कृतो संभवः उन्होने कहा–तुम मृत्यु आचार्य के समीप प्रवेश कर जाओ। मेरे प्यारे! देखो, इसके दो स्वरूप बन गए। आचार्य का अभिप्राय यह है जो पठन पाठन कराने वाला हो। परन्तु मृत्यु का अर्थ यह भी बनता है कि जिस महापुरूष ने मृत्यु को विजय कर लिया है मानो देखो, उन्होने ये विचारते हुए कि एक वाक्य के कई प्रकार के मानो स्वरूप माने गए हैं।

यमाचार्य का गृह

तो बालक नचिकेता ने कहा–प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए। आज्ञा पा करके वे वहाँ से गमन करते है और भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, वह मृत्यु–आचार्य के गृह में उन्होने प्रवेश किया। मानो उनका नामोकरण यमाचार्य भी था और मृत्यु–आचार्य भी। क्योंकि वह यमाचार्य इसलिए कहलाते थे क्योंकि उन्होने मृत्यु को भी विजय कर लिया था। वे यमं ब्रह्मे व्रतं यमं ब्रह्माः वृतो मेरे प्यारे! देखो, मृत्यु आचार्य के गृह में जैसे ही ब्रह्मचारी का प्रवेश हुआ तो माता ने कहा–आओ, भगवन्! वे बड़ी प्रसन्न हुई। उनकी दिव्या ने कहा–हे प्रभु! मानो आपका आगमन? उन्होने कहा कि मैं मृत्यु–आचार्य के दर्शन करने आया हूँ। उन्होने कहा–कि विराजिए, अन्न, जल का पान कीजिए। और मानो कुछ समय के पश्चात् उनका आगमन होगा।

उन्होंने कहा–माता! कदापि नही। जब तक आचार्य का मुझे दर्शन नही होगा, तब तक मैं मानो देखो, अन्न, जल का पान नही करूँगा। मेरे प्यारे! देखो, दिव्यासे, अपने में बडी मानो प्रसन्न और शोकातुर हो गई और विचारने लगी कि ब्रह्मे व्रतं बृहि मानो ये तो ब्रह्मचारी बड़ा विचित्र है। जिस गृह में मानो अन्न, जल से पीडित एक ब्रह्मचारी वास करता है उस गृह में वो ब्रह्मचारी मानो पापों को प्रदान कर देता है। अन्नादं भूतं ब्रह्मेः मानो समेट कर के उसे प्रदान कर देता है। उसके पुण्यों को ले लेता है।

यमाचार्य की पत्नी का मनन

मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ एक वृत्तिका मानी गए है। जिस गृह में देखो, अतिथि ब्रह्मवेत्ता अन्न, जल से पीडित रह जाए मानो देखो, वह अपने पापों को त्याग देता है और वहाँ के पुण्यों को ले जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् उन्होने वृत्ति अपने में विचारी तो दिव्यासे बड़ी मानो देखो, शोकातुर होने लगी। विचारने लगी, प्रभु से प्रार्थना करने लगी हे प्रभु! ऐसा ब्रह्मवेता जिसने उद्यालक गोत्र में जन्म लिया। हमारे यहाँ उद्यालक गोत्र बड़ा विचित्र माना गया है। क्योकि उनमें ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ, सत्यवादी महापुरूषों का जन्म होता है। मानो देखो, हम बड़े आभारी बन गए है। तो ये मानो प्रभु से मनन, चिन्तन कर रही थी।

पत्नी की व्याकुलता

मानो तीन रात्रि और तीन दिवस हो गए। ब्रह्मचारी अन्न और जल से पीडित। मेरे प्यारे! देखो, ब्रहे कृतम् जब तीन दिवस हो गए तो यमाचार्य कहीं से भ्रमण करते हुए मानो उन्होंने अपने गृह में प्रवेश किया। पत्नी बड़ी व्याकुल हो रही है। उन्होंने कहा–हे दिव्या! तुम व्याकुल क्यों हो? उन्होंने कहा–प्रभु! मैं इसलिए व्याकुल हूँ क्योंकि देखो, गृह में उद्यालक गोत्र के एक ब्रह्मचारी विद्यमान है। जो द्वार पर विद्यमान है उन्हे तीन दिवस हो गए है। उन्होने अन्न, जल पान नही किया। इसलिए हमारे पुण्य नष्ट हो रहे है और पाप बलवती हो रहे है।

यमाचार्य द्वारा तीन वर

बेटा! यमाचार्य ने उस वाक् को स्वीकार कर लिया। मानो मृत्यु–आचार्य अब वह देखो, बालक के समीप जाते है, गमन करते है। ब्रह्मणे व्रताः मेरे प्यारे! देखो, उन्होने मन ही मन में विचारा यह तो बडा विचित्र ब्रह्मचारी है। उन्होने कहा – हे ब्रह्मचारी! अव्रतं ब्रहे मेरे प्यारे! यह उच्चारण करते ही बालक नचिकेता ने नम्रता से ऋषि के चरणो को स्पर्श किया और ऋषि के चरणों में मानो वह अप्रतम् स्पर्श करते हुए बोले – कि प्रभु! मैं पिता की आज्ञा से तेरे गृह में, मेरा गमन हुआ है। उन्होने कहा – व्रहे मैं तुम्हें तीन रात्रि और तीन दिवस तक तुमने मेरे यहाँ गमन किया है। मैं तुम्हें तीन वर देता हूँ। मेरे प्यारे! तीन वचन देता हूँ जो तुम्हे स्वीकार है।

प्रथम वर

मेरे प्यारे! देखो, बालक नचिकेता ने कहा हे भगवन! मैं सबसे प्रथम उसी वर को पाना चाहता हूँ जिसमें मेरे पितर ने मानो देखो, सर्व द्रव्य देखो, वह सब द्रव्य यज्ञ में प्रदान कर दिया अथवा हूत कर दिया है। मेरी इच्छा यह है कि जिस अभिलाषा से मेरे पितर ने वो याग किया है मेरे पितर की वह इच्छा पूर्ण हो जानी चाहिए।

स्वर्ग की जिज्ञासा

मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने, मृत्यु ने कहा–"तथास्तु" यह उच्चारण करते हुए मौन हो गए। उन्होंने कहा–भगवन्! क्या मेरे पितर की इच्छा पूर्ण हो जाएगी? यमाचार्य ने कहा–यथार्थ होगी। मानो देखो, इच्छाएँ पूर्ण होती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उच्चारण करके यमाचार्य ने कहा–हे ब्रह्मचारी! तुम द्वितीय वचन को स्वीकार करो। उन्होने कहा–कि भगवन्! मैं यह चाहता हूँ कि मैं उस अग्नि ब्रह्मे में मानो देखो, द्वितीय वचनं ब्रह्माः मेरी इच्छा यह है कि मैं स्वर्ग को जानना चाहता हूँ कि ये स्वर्ग क्या है?

तीन प्रकार की अग्नियाँ

मेरे पुत्रो! देखो, यमाचार्य, मृत्यु ने, जिन्होने मृत्यु को विजय कर लिया था, उन्हे मृत्यु भी कहते थे। आचारं ब्रह्मे और उन्हे यमाचार्य भी कहा जाता था। मेरे प्यारे! उन्होने कहा–हे ब्रह्मचारी! स्वर्ग उस मानव को प्राप्त होता है जो अग्नियों की पूजा करता है अथवा अग्नि की पूजा करने वाला ही मेरे पुत्रो! देखो, स्वर्ग को प्राप्त होता है। उन्होने कहा–प्रभु! वह अग्नि कौन–सी है, जिन अग्नियों की पूजा करने से मानो देखो, मैं स्वर्ग में जा सकूँगा। तो मुनिवरो! देखो, यमाचार्य ने कहा ये तीन प्रकार की अग्नियाँ है। ब्रह्मचारी, ब्रह्मचरिष्यमि, मानो देखो गृहवृत्तिका और देखो, जो गृह को त्याग कर के विद्यालयों में अपनें अनुभव की शिक्षा देते है मानो देखो, तीन प्रकार की अग्नि कहलाती है।

मेरे प्यारे! सबसे प्रथम अग्नि का नाम देखो, गाहर्पथ्य नाम की अग्नि माना गया है। जिस गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का जो पूजन करता है वह ब्रह्मचारी है। पूजन का अभिप्राय यह है कि उस अग्नि को क्रियात्मकता में लाना हैं। क्रिया में लाने का नाम ही मानो उसकी पूजा कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी प्रातः कालीन अपने में देखो, वह विद्यमान हो करके, वह प्रातः कालीन याग करता है। अग्नि की पूजा करता है, अग्न्याधान करता है और अग्न्याधान करके जो अग्नि अन्तर्हृदय में प्रदीप्त हो रही है जिससे वो अधययन करने वाला है। मानो अधययन करता है वह उसी के द्वारा एकान्त स्थली में वेद का अधययन कर रहा है। और वेद में जो विद्याएँ है उनका जो अधययन करने वाला है वही मानो देखो, ब्रह्मणं ब्रहे वह ब्रह्मचारी कहलाता है। हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, उस अग्नि का पूजन करो। जिस अग्नि के द्वारा, जिस अग्नि में मानो देखो, मानव सदैव निहित रहता है। वाणी जिसमें रत हो जाती है, उस अग्नि का पूजन करो। जिस अग्नि के द्वारा तुम तेजोमयी बन करके मानो देखो, ब्रह्माण्ड के ब्रह्माण्ड को जानकर के तुम इस संसार सागर से पार हो जाओगे।

प्रवृत्तियों में ब्रह्म

मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने कहा–हे बाल्य! मानो देखो, सबसे प्रथम तुम ब्रह्मचरिष्यामि, तुम ब्रह्मचारी बनो। और ब्रह्मचारी वो बनता है जो गृह में, जो गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है मानो देखो, वह ब्रह्मचरिष्यामि, वह ब्रह्मचारी है। जो प्रत्येक श्वास के साथ में देखो, ब्रह्म का चिन्तन करता है और ब्रह्म का चिन्तन करने वाला मानो देखो, वो मनका बनाता है और मनका बना करके सूत्र में वो सूत्रित कर देता है और वही सूत्रित होता हुआ मानो देखो, अधययन करता रहता है। मानो देखो, अधययन करता रहता है, मानो देखो, ब्रह्मचारी ही जानता है कि ब्रह्मचारी कौन होता है ? जो मानो देखो अपनी प्रवृत्तियों को ब्रह्म में पिरो देता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो ब्रह्मचारी अपने में आश्चर्य में हो गए। उन्होने कहा–हे ब्रह्मचारी! आओ, मानो देखो, तुम अपने में याज्ञिक बनो और याज्ञिक बन करके तुम अपनें जीवन को ऊर्ज्वा में ले जाओ। मेरे प्यारे! देखो, जब तुम्हारें शब्दों में इतनी सार्थकता आ जाए कि वह गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का पूजन करने लगे, उन शब्दों में इतनी सार्थकता आ जाए मानो देखो,वो अपनें में ब्रह्म का दर्शन करने लगे। हे ब्रह्मचारी! देवताओं की सभाओं में वही तो सुशोभनीय होता है जो ब्रह्मचारी बन करके देवताओं के समीप चला जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होने यह वाक् वर्णन किया तो ब्रह्मचारी बड़ा प्रसन्न हुआ उन्होने कहा–धन्य। हे प्रभु ! आपने मेरे नेत्रों में मानो मेरी प्रवृत्तियों में प्रकाश आ गया है। आप को धन्य है, प्रभु! मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी भिन्न, भिन्न प्रकार का अधययन करता हुआ अपने में अपनेपन का भान करने लगे। मानो देखो, वह ब्रह्मचरिष्यामि अपने में ब्रह्मव्रणोति अप्रतम् मानो देखो, ऊधर्वा में गमन करने वाला ये मानो ब्रह्मचरिष्यामि बनता है और वो मृत्यु को विजय कर लेता है।

मृत्युंजयी

मृत्यु को कौन विजय कर लेता है ? जो ब्रह्मचारी चरी को जान लेता है। चरी कहते है, प्रकृति को और ब्रह्म कहते है, परमपिता परमात्मा को। जो मानो देखो, चरी को ब्रह्म में पिरोना जानता है और ब्रह्म को चरी में दृष्टिपात करने लगता है। मेरे प्यारे! वही तो अपने में देखो, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके वह देवताओ की सभा में सुशोभनीय हो जाता है। मानो देखो, वह ब्रह्मचारी अधययन करता हुआ, आत्मवेत्ता बनने के लिए वह मानो देखो, तीन प्रकार की प्रतिभा को अपनाता रहता है। मानो देखो, मैं आधयात्मिकवाद में नहीं, जो ऋषि ने वर्णन किया कि तुम मानो देखो, सबसे प्रथम इस अग्नि की पूजा करो।

अग्नि का सदुपयोग

पूजा का अभिप्राय यह है कि मानो उसका सदुपयोग करना। पूजा का अभिप्राय यह है कि मानो देखो, जैसे अग्नि की हमें पूजा करनी है, अग्नि का सदुपयोग करना है। अग्नि के द्वारा मानो याग करना है। उसी अग्नि को सूक्ष्म बना करके, ज्ञानरूपी अग्नि बना करके बेटा! उसे अपने अन्तर्हृदय में धारण करना है। वही अग्नि मानो सूक्ष्म बन करके गृहपथ्य मानो देखो, वही अग्नि गृहपथ्य नाम की अग्नि बन जाती है। जब मानो वही ब्रह्मचारी, जब गृह में प्रवेश करता है तो मानो देखो, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है। पूजन का अभिप्राय यह कि जो वो जानता है उसे वो क्रिया में लाता है। यह अपने में व्याख्या देता रहता है कि जैसे हमें जल की पूजा करनी है तो जल का सदुपयोग करना है जैसे मानो हमें पृथ्वी की पूजा करनी है तो पृथ्वी का सदुपयोग करना है। मानो इसके गर्भ में जो भी ज्ञान है, विज्ञान है उसे क्रिया में लाना है। मानो देखो, आपोमयी ज्योति जलं ब्रहे उसमें जो प्राणसत्ता विद्यमान है उसे जान करके, उसे क्रिया में लाने का नाम ही मानो देखो, वह उसका उपयोग है और वह गृहपथ्य नाम की अग्नि कहलाती है। गृह में मेरे पुत्रो! देखो, प्रत्येक माता पिता यह चाहते है कि हमारा गृह स्वर्ग बन जाए।

स्वर्ग–गृह

परन्तु गृह स्वर्ग कैसे बनेगा ? तब बनता है जब माता, पिता प्रातः कालीन देखो, ब्रह्म का चिन्तन करते हैं, ब्रह्मयाग करते है। ब्रह्मयाग के पश्चात, देवयाग करते है। देवयाग के पश्चात पितर् याग करते है। पितर् याग के पश्चात् अतिथि याग करते है। अतिथि याग के पश्चात वे बलिवैश्य याग करते हुए मानो देखो, अग्नि का चयन करते है। मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मणे देखो, इससे लाभप्रद क्या होता है? जो मानो माता, पिता प्रातः कालीन ब्रह्म का चिन्तन करते है। मानो देखो, रात्रि के अंतिम चरण में विद्यमान हो करके, जो ब्रह्म की सृष्टि को निहारते रहते है, मानो उद्गीत गाते रहते है। उसके पश्चात् सूर्योदय होने के पश्चात् वे देव पूजा करते है, याग करते है। देवताओ के पूजन का अभिप्राय यह कि अग्न्याधान करके मानो देखो, वह, जो हमारे शरीर में विद्यमान जो देवता है, पंचमहाभूत है। जब देखो, याग की तरङें स्वाहा के साथ में जाती है तो वह देवता ऊर्ध्वा को गमन करने लगते है। मेरे प्यारे! देखो, पितरों की जब हम सेवा करते है। सेवा का अभिप्राय यह है कि मानो उनको अन्न इत्यादि का पान कराना और उनको सुखद पहुँचाने का नाम ही मानो देखो, वह पितर याग कहलाता है।

पितर याग

याग का अभिप्राय यह कि जितने भी संसार के शुभ क्रियाकलाप है। उन सर्वत्र का नाम एक याग कहा गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह पितर याग भी मानो देखो, पितरों की आज्ञा का पालन करना है। हमारे यहाँ पितरों की जो व्याख्या है वो बडी विचित्र है। हमारे यहाँ पितर उन्हें कहते हैं जो माता पिता होते हैं, जो जननी माता है। पिता रक्षक है मानो उन्हे भी हम पितर–जन कहते है। आचार्य जनों को भी पितर कहते है। जो हमें जीवन देते है मानो देखो, सूर्य भी हमारा पितर है, राजा भी पितर है, चन्द्रमा भी पितर है और अग्नि भी पितर कहलाती है। मानो देखो, आपोमयी भी एक पितर है, वायु भी एक पितर है, ये सर्वत्र मेरे पुत्रो! देखो, पितर ही माने जाते है।

पितरों का अभिप्राय यह है कि जो मानो हमारी रक्षा करने वाले है और जिनका हम सदुपयोग करते रहे है। बेटा! देखो, वो सब पितर कहलाते है। मेरे प्यारे! देखो, माता–पिता को भोज, उनकी आज्ञा का पालन करने का नाम पितर याग है। मानो आचार्यजनों ने जो हमें अधययन कराया है, ज्ञान और

विज्ञान को अधययन में लाए है। वे मानो देखो, इन जड. पितरों की आभा में ले गए है इसको ज्ञान और विज्ञान में ले गए है तो मुनिवरो! देखो, वे भी आचार्यजन हमारे पितर है। बेटा! देखो, मुझे बहुत–सा काल स्मरण आता रहता है। परन्तु उस काल की चर्चा नही केवल यह कि मुनिवरो! जब दीक्षान्तम् दीक्षा लेता है ब्रह्मचारी, तो मेरे प्यारे! देखो, वह आचार्यजनों की आज्ञा पालन करके, जो उन्होने अधययन में हमें वर्णित किया है उस अधययनता को हम क्रियात्मक रूप में लाने का प्रयास करें।

मेरे प्यारे! देखो वह क्रिया ही हमारे जीवन को उद्‌बुद्ध करती है। जैसे सूर्य प्रातःकाल से उदय होकर सायं काल तक हमें ऊर्ज्वा देते हैं, प्रकाश देते रहते है। उसी ऊर्ज्वा से हम पनपते रहते। उसमें कितना विज्ञान है, कितनी सार्थकता है और मानो देखो, उस विज्ञान को हम अपने में लाने का प्रयास करें। मेरे प्यारे! देखो, पितरो की आज्ञा का पालन करना है। चन्द्रमा अमृत देता रहता है। उस अमृत को जानने के लिए देखो, विज्ञानवेत्ता बनना होगा और विज्ञानवेत्ता बनकर के उस अमृत को जान करके और उस अमृत का स्रोत कहाँ है? मुनिवरो! देखो, चन्द्रमा का समन्वय सूर्य से है और सूर्य का समन्वय द्यौ से है और द्यौ का समन्वय मेरे प्यारे! देखो, अप्रतं ब्रह्मणं ब्रहे कृतं ब्रह्मः मुनिवरो ! देखो, उस परमपिता परमात्मा से है जो जड़ और चैतन्य जगत दोनो को ऊर्ज्वा में गमन करा रहा है। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती में रत हो जाएँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह एक दूसरे में जो पिरोया हुआ–सा जगत दृष्टिपात होता है ये बडा अनुपम है। मानो देखो, इन पितरों की हमें अहाः पितरं ब्रह्मे इन पितरों को जानना है। कही जानने का नाम सेवा है, कही मानो देखो, उनको अन्न इत्यादि देने का नाम पितर याग है। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ पितरों की विवेचना बडी विचित्र मानी गई है। जो प्रकाश देते है, अनुपमता देते है, अमृत देते है, जो गति देते है, जो तेजोमयी बनाते रहते है बेटा! ये सर्वत्र देवता माने गए हैं। इन देवताओं के प्रति हम अपनें ज्ञान और विज्ञान में रत हो जाएँ, अपने में मानो अधययनशील बन करके मेरे पुत्रो! देखो, यह अप्रतं ब्रह्मे व्रताः मुनिवरो! देखो, इसका नाम हमारे यहाँ गृहपथ्य नाम की अग्नि उसका हम वर्णन कर रहें थे। गृहपथ्य नाम की अग्नि वह कहलाती है जो गृहों में माता, पिता प्रायः क्रिया कलापों को करते है तो बाल्य उसी के अनुसार मानो बरतने लगते है। तो बेटा! गृह स्वर्ग बन जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, स्वर्ग क्या है? इसको जाननें के लिए मानव अपने में मानवीयता का ही, अपने में भान करता रहता है विचारता रहता है कि हे मानव! तू मननशील बन। मननशील बनकर के देवत्तव को अपने में धारण कर।

मानव की महानता

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या चल रहा है। मैं कोई विशेष विवेचना देने नही आया हूँ। हम बेटा! व्याख्या देने नही आए है। विचार कुछ करने के लिए आए है वह विचार विनिमय क्या है? बालक नचिकेता से यमाचार्य कहता है – हे ब्रह्मचारी! देखो, इन अग्नियों का पूजन करने से मानव महान बनता है और विचित्र बनता है। हमारे यहाँ भगवान् मनु ने एक नियमावली युक्त की थी। कि मुनिवरो! देखो, एक अधययन की प्रति क्रियाएँ मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ तृतीया अग्नि का नाम जैसे यह गृहपथ्य नाम की अग्नि है गार्हपथ्य नाम की अग्नि है इसी प्रकार वह जो आहवनीय अग्नि है मानो देखो, इसमें ब्रह्म इसमें माता पिता अपने गृह को त्याग करके तपा करते हैं। वह मेरे प्यारे! देखो, विद्यालयों में शिक्षा देते हैं। और विद्यालय में माता अपने अनुभव की चर्चाएँ कन्याओं को, पुत्रियों को प्रदान करती रहती है और मानव अपने अनुभवों को देता हुआ ब्रह्मचारियों को ऊधर्वा गमन कराता है।

अग्नि पूजक स्वर्ग–गामी

तो मेरे प्यारे! देखो, यह परम्परा, एक नियमावली राजा अश्वपति के यहाँ भी इसी प्रकार की एक नियमावली बनी हुई थी परन्तु देखो, उसी से मानव का जीवन एक महानता में गमन करता रहता है। तो मुनिवरो! देखो, ये है अग्नियाँ। इन अग्नियों का पूजन करने वाला ही मानो देखो, स्वर्ग का गामी बनता है, वह स्वर्ग को प्राप्त होता है। ब्रह्मचर्य आश्रम वृत्ति कहलाता है गृह आश्रम बेटा! गृहपथ्यवादी कहलाता है मानो देखो, आहवनीय अग्नि अब्रतम् अपने में धारण करता रहता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, यह भिन्न भिन्न प्रकार की जो अग्नियाँ है, इन अग्नियों का पूजन करना, इन अग्नियों का अग्न्याधान करना इसी का नाम मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ स्वर्ग कहा गया है। मैं स्वर्गश्च ब्रह्मा व्रतेः हे ब्रह्मचारी! मैं तुम्हे स्वर्ग में ले गया हूँ। आचार्यों के द्वारा और मानो पितरों की आज्ञा का पालन करना, ये सब आचार्य जन हमारे सब पितर कहलाते है। इन पितरों के द्वार पर हमें जाना है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उच्चारण करके ऋषि मौन होने लगे। उन्होने कहा– हे नचिकेता! ये मैने तुम्हारे मानो देखो, द्वितीय प्रश्न का यह उतर दिया कि स्वर्ग क्या है ? यह तीन प्रकार की अग्नियों का पूजन करना है। मानो गाहर्पथ्य, गृहपथ्य, आहवनीय अग्नियों इन तीन का पूजन करने का नाम ही मानो देखो, स्वर्ग कहा जाता है।

अग्नि का अभिप्रायः तुमने जान लिया कि आन्तरिक अग्नि और बाह्य जो अग्नि है इन दोनो का एक दूसरे में समावेश करना है ज्ञान, विज्ञान और विचार के द्वारा मानो देखो, इसी प्रकार गृहपथ्य नाम की अग्नि है, इसी प्रकार आहवनीय अग्नि है। बाह्य और आन्तरिक दोनो को एक सूत्र में लाना है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह उच्चारण करता हुआ ऋषि अपने में मौन हो गया और ऋषि ने कहा धन्य ब्रह्मे कृतम्। मेरे प्यारे! जब ऋषि ने यह कहा कि भगवन्! ब्रहे, हे नचिकेता! तुम अगले वर को, मानो तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा–हे भगवन्! ये तो आपने मुझे वर्णन करा दिया, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो गया है। ये तो आपने मुझे स्वर्ग नहीं, मानो मोक्ष के मार्ग के लिए तुमने मुझे प्रेरित कर दिया। अब मैं यह चाहता हूँ भगवन्! मेरी इच्छा यह है मेरे मन की इच्छा यह है कि आत्मा इस शरीर को त्याग करके कहा जाता है?

मेरे प्यारे! देखो ,जब बालक नचिकेता ने यह प्रश्न किया तो यमाचार्य, मृत्यु कहते है – हे ब्रह्मणं ब्रह्मे, हे बाल्य! जो तुम प्रश्न कर रहे हो इसको बड़े, बड़े महापुरूष मानो अपने में मौन हो गए है। तुम यह प्रश्न मत करो, तुम इस संसार में देखो, जो वस्तु चाहते हो वही तुम्हे प्राप्त की जा सकती है। परन्तु संसार के राष्ट्र को भोगो। संसार में, अपने में, मानो नाना दुग्ध देने वाले पशु को अब देखो, गौ इत्यादि होने चाहिए, सुन्दरियाँ होनी चाहिए हे बाल्य! तुम इस आत्मा के प्रश्न को न लो।

नश्वर संसार

तो मुनिवरो! देखो, नचिकेता ने कहा –प्रभु! मैं आपके वाक्यो को स्वीकार कर लेता हूँ। हे प्रभु! मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो देखो, यह संसार नश्वर दृष्टिपात आता है। देखो, जैसे गौ है, मुझे इससे स्नेह हो गया है। यदि उसका विच्छेद हो गया तो मुझे कष्ट होगा। मानो देखो, मैं प्रभु के देखो, सर्वत्र राष्ट्र को भोगूँ। राष्ट्र तो आज है कल नही रहेगा। परन्तु अपार कष्ट होगा भगवन्! तो भगवन्! मुझे और वह वस्तु प्रदान कीजिए जो मानो देखो, मैं शरीर को त्यागने के पश्चात् मेरे अन्तर्हदय में बनी रहे। हे प्रभु! मैं उस ज्ञान और विज्ञान को चाहता हूँ, मैं उस आत्मा के प्रश्न को जानना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! उस बालक नचिकेता के वाक्यों को श्रवण करके मुनिवरो! देखो, यमाचार्य ने उन्हे नाना सुन्दरियाँ और स्वर्ण से गुथे हुए मानो देखो, रथ इत्यादियों को उन्होने दृष्टिपात कराया और इस पृथ्वी के राष्ट्र को कहा – कि तुम इसको भोगो। तो मुनिवरो! देखो, जब बालक ने ये दृष्टिपात किया, नचिकेता ने उन्हे कहा–पितर! नही चाहिए, यह मुझे नही चाहिए, मुझे तो वो चाहिए जिससे मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ। हे प्रभु! मैं मृत्यु से पार होना चाहता हू। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होने यह कहा, उन्होने ब्रह्मणं ब्रहे देखो, यमाचार्य ने अपने मन ही मन में यह निश्चय कर लिया कि यह बालक तो बडा विचित्र है। मानो यह इस योग्य है। देखो, जो तीनो आश्रमों को त्याग करके अन्तिम में प्रवेश करना चाहता है, तो यह मानो देखो, उस विद्या का उत्सुक है। यह मानो अपने अन्तर्हदय में उसको धारण करना चाहता है। मेरे पुत्रो! देखो, वह तीन आश्रम चले गए और तीनों आश्रमों को पार होकर के नचिकेता जाना चाहता है। तो यह वास्तव में आग्नेय बनना चाहता है।

आग्नेय प्रवृत्ति

तो मेरे पुत्रो! देखो, उन्होने कहा हे! ब्रह्मचारी। तुम्हें धन्य है तुम मानो देखो, संसार के वैभव को नहीं भोगना चाहते, तुम्हें धन्य है, तुम्हारा जीवन धन्य है। तो उन्होंने कहा विराजो, वे विराजमान हो गए और उन्होंने कहा – हे नचिकेता! मानो तुम्हारा जीवन बड़ा महान है? तुम्हारी जो वृत्तियाँ है, वो बडी महान बन गई हैं, तपोमयी बन गई हैं। हे बाल्य! आओ, मेरे प्यारे! वो विराजमान हो गए और उन्होने कहा कि ब्रह्मणे व्रतं देवाः यह आत्मा शरीर को त्याग कर के कहाँ जाता है। ये प्रसंग तो बड़ा विचित्र है, बड़ा एक महान है। परन्तु उससे पूर्व यह देखो, तुम चौथे आश्रम में प्रवेश कर गए हो। तुम मानो सन्यस्थ बन गए हो और तुम्हारा जीवन आग्नेय बन गया है। मानो देखो, जो संन्यास आश्रम में प्रवेश करता है वह तीनों आश्रमों को तो बब्रति में प्रवेश करा देता है, या उसको उल्लांघ जाता है। मानो तुम उसको उल्लांघ गए हो, उससे दूरी चले गए हो। मानो देखो, अग्ने व्रतं ब्रह्मे जिस मानव की आग्नेय प्रवृत्ति बन जाती है।

आग्नेय उसे कहते हैं जो प्रभु के राष्ट्र में प्रवेश करके अपने को स्वीकार करके, उसका जो ज्ञान है, विज्ञान है उसका संसार रूपी मानो जो ब्रह्माण्ड हैॠ जो इसको ही निहारता रहता है और प्रभु को, उसमें एक सूत्र की भाँति मानो देखो, सूत्रित करता रहता है। वह आग्नेय कहलाता है वह आग्नेय मानो देखो, जहाँ वो ज्ञान, विज्ञान और मानवीय दर्शन और आत्मवत् बनने के लिए वो सदैव तत्पर रहता है। मानो देखो, स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन शरीरों को जान करके मानो देखो, एक दूसरे में इनको समावेश करके जो मोक्ष की पगडण्डी को प्रवेश करना चाहता है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि इस प्रकार उसे वर्णन कराने लगे। बेटा देखो, वर्णन क्या है? उन्होने कहा कि यह आत्मा जब शरीर को त्याग देता है। तो मानो देखो, अन्तं ब्रह्मे कृता जो अन्त में मानव के विचार होते हैं मन्थन किया जाता है। अन्त में जो विचार होते है शरीर को त्यागते समय वही संस्कार, चित के मण्डल में जो संस्कार होते है उसके अनुसार किसी माता के गर्भ में वो प्रवेश कर लेता है।

मानो देखो, यह वाक् उन्होने कहा। उन्होने द्वितीय युक्ति इस प्रकार कराई कि आत्मा के मानो बहुत से क्रिया कलाप है। मानो देखो, उनको सर्वत्र जानकर के वायु मण्डल में जो नाना प्रकार के देखो, वृत्त कहलाते है। वायु है, जैसे देखो, इन्द्र वृत्तिका सम्भोति ब्रह्मा। नाना प्रकार की वायुओं में यह गमन करता हुआ, यह पुनः चित्त के संस्कारों के आधार पर रहता है। कुछ आत्माएँ ऐसी होती हैं जो मोक्षं ब्रह्मे पगडण्डं ब्रह्मे कृताः जो मानो देखो, वह सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर को जाने हुए मानो देखो, वह अपने कारण में लय होकर के देखो, स्थूल और सूक्ष्म को जान करके वह जो आत्मं ब्रह्मे जो मानो देखो, कारण शरीर में प्रवेश करके परमात्मा के समीप चला जाता है। मानो देखो, कुछ ऐसी भी आत्माएँ है। ऐसा बेटा! देखो, ऋषि ने उन्हें वर्णनकराया।

कर्तव्य

तो बेटा! देखो, आज विचार, मैं कहाँ चला गया हूँ। बेटा! उद्गीत गाता हुआ। मेरे पुत्रो! देखो, विश्वश्रवा ने इसी भावना से यज्ञ किया कि मैं प्रभु को प्राप्त हो जाऊँ। बेटा! जो भी मानव संसार में क्रियाकलाप करता है, चाहे वह भौतिकवाद की करता है, चाहे वह आधयात्मिकवाद की, उसके मन में एक ही प्रबलता होती है कि मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ, मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए और मृत्यु से पार होना ही मेरा यह कर्तव्य है।

तो बेटा! देखो, विश्वश्रवा भी मृत्यु से पार होना चाहते थे।
नचिकेता भी मृत्यु से पार होने के लिए तत्पर हो गए। बेटा! देखो, वह अपने को आग्नेय जीवन में ले गए। आग्नेय वही होता है जो प्रभु की सृष्टि को, प्रभु के राष्ट्र को विचारता रहता है। उसके ज्ञान और विज्ञान में रत रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल विचार विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा जो संसार का नियन्ता, निर्माण करने वाला है। जो मानो देखो, यज्ञोमयी स्वरूप कहलाता है। उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, हम इस संसार सागर से पार हो जाए, जो मानो देखो, मान, अपमान वाला यह जगत है। जहाँ कोई किसी का मान कर रहा है, कोई किसी का अपमान कर रहा है। कोई मानो देखो, प्रीति कर रहा है। इस संसार सागर से मानव को पार होने वाले क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रकट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर विचार विनिमय करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाए। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हे शेष चर्चाए कल प्रकट करूँगा। **ओ3म् ब्रह्म गणः रथं आभ्यां रेवाः ओ3म् तनु गायन्त्वा माणं आप्यां प्रवरूणाः माणः त्वा ओ3म् यशश्चं प्राची गायन्त्वाः** **दिनांक–07–05–1988** पानीपत, हरियाणा